कर्म-क्षेत्र

डा० धीरेन्द्र वर्मा पुस्तक-संग्रह

ओमीलाल 'इलाहाबादी'

राष्ट्र भाषा प्रचारक
इलाहाबाद—३

सर्वाधिकार : ओमीलाल 'इलाहाबादी'

• प्रकाशक : राष्ट्र भाषा प्रचारक
७२, बी जीरो रोड, इलाहाबाद–३
• मुद्रक : कैलाश गिरि गोस्वामी, गायत्री प्रेस, दारागंज प्रयाग ।
• संस्करण : प्रथम अक्टूबर १९६४

मूल्य, तीन रु० पचास पैसा

आमुख

संध्या हो चुकी थी। राधा चौड़े काले किनारे की साड़ी पहन मकान के बरामदे में खम्भे के पास खड़ी थी। उसके बूढ़े पिता दमे के पुराने मरीज थे। इस समय भी दूर के कमरे में बैठे खाँस-खाँस कर दोहरे हो रहे थे। बलगम सीने में अटका खड़खड़ाता था, बाहर निकलने का नाम नहीं ले रहा था। इन मौकों पर उनकी ऐसी दशा हो जाती थी जैसे साँस का आना-जाना एकदम टूट जायगा। अनजान आदमी उनकी यह दशा देख कर अवश्य ही घबरा जाय, परन्तु राधा को कोई खास फिक्र नहीं रहती थी। ऐसा नहीं कि वह अपने पिता से प्रेम न करती हो, बल्कि उसका संसार में पिता के सिवा कोई अपना कहने को नहीं था। वह केवल प्रेम ही नहीं करती थी बल्कि अपने पिता की पूजा भी करती थी—जहाँ तक उनकी बीमारी का सम्बन्ध था, वह बचपन ही से उन्हें इसी दशा में देख रही थी। पहले-पहल जब वह देखती कि खाँसते-खाँसते पिता जी का चेहरा लाल हो गया है तो वह सचमुच ही घबरा जाती। जब खाँसी का दौर समाप्त हो जाता, तो वे हँस कर कहते— 'बेटी, तुम घबरा क्यों जाती हो ? पुरानी कहावत चली आती है कि दमा दम के साथ। इसलिए अब तो मैं इसका आदी हो गया हूँ। यह तो ठीक है कि इस रोग से रोगी धीरे-धीरे शक्तिहीन होता जाता है, परन्तु अनायास ही मृत्यु का कोई भय नहीं होता। यों तो जो जन्मा है सो मरेगा ही, इसलिए तुम घबराया मत करो। जिन्हें कोई रोग नहीं है एक दिन उन्हें भी यह शरीर त्याग देना होगा····बेटी ! तुम खुश रहा करो क्योंकि वास्तव में मेरे रोग से घबराने की कोई बात नहीं।'

इन्हीं बातों के फलस्वरूप धीरे-धीरे राधा का डर निकल गया। उसे यूँ लगा जैसे उसके पिता इसी तरह खाँसते-खाँसते सारी उम्र उसका साथ

देते चले जायेंगे। चुनांचे इस समय भी उसका ध्यान दूसरी ओर लगा हुआ था। वह जरा दूर अपने बँगलानुमा मकान के खुले फाटक की ओर देख रही थी क्योंकि उस ओर से कोई आने वाला था।

सस्ती समय में उसके पिता ने यह छोटा-सा मकान चार हजार रुपये में खरीदा था। मकान छोटा था, परन्तु उसके आस-पास काफी जमीन छूटी हुई थी। उसके पिता जी का विचार था कि एक रोज वह इस जमीन पर भी और कमरे बनवा सकेंगे, बल्कि यदि सम्भव हुआ तो वह एक नया मकान ही खड़ा कर देंगे। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। नया मकान तो रहा एक ओर, वह कुछ कमरे तक न बनवा सके, क्योंकि कमाने वाला तो कोई था नहीं। वह खुद लोहे की एक दुकान पर सारी उम्र मुनीमी का काम करते रहे। राधा के सिवा उससे छोटा एक लड़का था जिसकी छुटपन में ही मृत्यु हो गई। उन्होंने इतना काम जरूर किया कि बेटी को अच्छी शिक्षा दिलवाई। राधा कुछ ही दिन पहले एम० ए० पास करके आई थी। उसने गृह-विज्ञान की शिक्षा भी प्राप्त की। छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज करना, जख्मों को धोना और शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों की मलहम-पट्टी करना भी सीखी हुई थी।

अपने पिता की तरह वह बड़ी ही सीधी-सादी लड़की थी। रंग साँवला, नाक-नक्श आकर्षक, विशेषकर उसकी आँखें मोटी-मोटी थीं। पढ़ाई के दौरान में एक युवक जिसका नाम प्राण था उसके जीवन में आया। उसके साथ रहते-रहते उसे प्राण से गहरा प्रेम हो गया। उन्होंने तय किया कि वह सारा जीवन एक साथ ही गुजार देंगे। परन्तु इसके लिए आवश्यक था कि राधा के पिता की आज्ञा ले ली जाय। आज वह प्राण ही की प्रतीक्षा में वहाँ खड़ी थी।

अँधेरा बढ़ता जा रहा था, मकान के चारों ओर खाली धरती होने पर भी कोई बाग-बगीचा नहीं था। धरती ऊबड़-खाबड़ थी और उसमें जगह-जगह झाड़ियाँ और जङ्गली घास उगी हुई थी। वह सोच में डूबी थी। कई प्रकार के विचार आते और चले जाते। वह रोमांटिक किस्म

की लड़की नहीं थी फिर भी उसे प्राण से प्रेम हो गया। आखिर हर लड़की अपना घर बनाना चाहती है। उसके लिए मर्द का साथ आवश्यक है। ऐसा घर जिसे वह अपना कह सके, जहाँ वह बच्चों को जन्म दे सके और उनका पालन-पोषण कर सके। यही तो प्रकृति का नियम था इसी-लिए तो वह रोमांटिक न होते हुए भी प्राण को चाहने लगी थी। प्राण कोई छिछोरा युवक नहीं था। वह काफी शर्मीला था। सच्ची बात तो यह थी कि अगर राधा की ओर से उसे कुछ उत्साह न मिलता तो वह प्रेम करने की बात को सोच भी न पाता। उसमें इतनी हिम्मत ही नहीं थी कि वह किसी लड़की की ओर नजर भर कर देख सके, प्रेम जतलाना तो रही दूर की बात। राधा को वह दिन अच्छी तरह याद था जब पहली बार प्राण के प्रति उसके मन में एक कोमल-सी भावना उत्पन्न हुई। लड़कियाँ और लड़के एम० ए० की कक्षा में एक ही कमरे में बैठते थे। यह ठीक है कि लड़कियों की सीटें लड़कों से बिल्कुल ही अलग होती थीं। लड़कियाँ उस समय तक कमरे में नहीं जाती थीं जब तक कि प्रोफेसर साहब कमरे में पहुँच न जाते। लड़के पहले से ही अपनी-अपनी सीट पर बैठे होते थे और प्रोफेसर के कमरे में प्रवेश करने के फौरन ही बाद लड़-कियों का दल अपने कपड़ों को सम्हालता हुआ कमरे में पहुँच जाता। लड़कियाँ सदा ही आँखें झुका कर बैठतीं। वह केवल अपनी पुस्तकों और कापियों की ओर देखती रहतीं या हाथ पर ठुड्डी रखे प्रोफेसर की ओर भी देख लेतीं। ऐसा तो कभी-कभार ही होता था कि जब उनकी नजर अना-यास ही लड़कों की ओर उठ जाती। ऐसा उस समय होता जब कोई लड़का कोई मूर्खता की हरकत कर देता, या ऊँघते-ऊँघते किसी का सिर आगे को झुक कर डेस्क से टकरा जाता, या कोई मजाक की बात हो जाती जिससे सभी जोर-जोर से हँसने लगते। ऐसे मौकों पर राधा ने महसूस किया कि और लड़के तो लड़कियों की ओर देखने से बाज नहीं आते थे, लेकिन प्राण हमेशा ही सिर झुकाये और आँखें नीची किये बैठा दिखाई देता।

प्राण न तो देखने में बहुत सुन्दर था और न क्लास में फर्स्ट आता था। लेकिन इसके यह माने नहीं थे कि वह बदसूरत था या पढ़ने में बुद्धू था। वह नाक-नक्शे का बुरा नहीं था और पढ़ने-लिखने में भी बीच की श्रेणी वाले लड़कों से ऊपर ही माना जाता था। हाँ, यह बात जरूर थी कि फर्स्ट आने वाले लड़कों में उसकी गिनती नहीं थी। ऐसे तो केवल दो विद्यार्थी थे जिनकी आपस में खींच-तान चलती रहती थी। पाँच-छः बार राधा की दृष्टि प्राण पर पड़ी, तो एक बार भी उसने उसे लड़कियों की ओर देखते नहीं पाया। यूँ लगता था जैसे लड़के के भेष में वह भी लड़की ही थी। इसी कारण राधा को उससे दिलचस्पी-सी हो गई। न-जाने कैसे एक रोज जब क्लास में उसने प्राण को साधुओं की तरह आँखें झुकाये बैठे देखा तो उसके मन में उससे बात करने की इच्छा उत्पन्न हुई। वह स्वयं समझ नहीं पाई कि इस इच्छा के पीछे कोई और गहरी भावना भी थी। उस समय तो बिल्कुल ही निर्दोष-सी इच्छा थी। इस इच्छा के उत्पन्न हो जाने पर भी काफी दिन बीत गये परन्तु उसकी कभी प्राण से बातचीत न चल सकी।

एक दिन शाम को बाहर की लड़कियों की एक टीम वॉली-बाल खेलने आई। राधा तो वॉली-बाल नहीं खेलती थी परन्तु वह होस्टल में रहने वाली दूसरी लड़कियों के संग मैच देखने चली गई। बाहर के लड़कों के वहाँ आने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता था, परन्तु हॉस्टल के लड़कों को इस शर्त पर आने की आज्ञा दे दी गई कि वे कोई बदतमीजी की बात नहीं करेंगे।

सचमुच ही उस दिन लड़कों का व्यवहार बहुत ही अच्छा रहा। मैच देखने वालों में कुछ प्रोफेसर और हॉस्टेल के वार्डेन भी थे। इसी मैच में राधा ने प्राण को देखा तो अनायास ही कुछ दिन पहले वाली उसकी इच्छा फिर से जाग उठी और वह सोचने लगी कि कौन-सा ऐसा बहाना हो जिससे बात करने में कोई झिझक न लगे।

मैच समाप्त होने के बाद भी वे लोग वहीं खड़े रहे क्योंकि नई टीम के

साथ हॉस्टेल वालों का भी जल-पान का कुछ प्रोग्राम था। राधा ने भी इस काम में हाथ बटाया और प्राण भी मिठाई की प्लेटें सजा रहा था। कुछ प्लेटें धोने की जरूरत पड़ी तो राधा दूसरों से कुछ अलग बैठ कर जहाँ पानी का बड़ा टब धरा था प्लेटें धोने लगी। उसी समय वार्डेन साहब ने प्राण से कहा—'प्राण! जाओ तुम पानी तो डालते जाओ।'

वार्डेन साहब का इशारा उसी ओर था। चुनांचे प्राण एक-दम लपकता हुआ उसके पास आया और लोटे से पानी की धारा छोड़ने लगा। राधा ने कनखियों से उसकी ओर देखा तो भी उसकी आँखें झुकी हुई थीं। राधा के मन में आया कि आपस में बात करने का इससे अच्छा अवसर फिर कभी नहीं मिल सकेगा। परन्तु उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उससे किस विषय पर बात करे। जल्दी में विषय सूझा भी तो बात शुरू करने के लिए प्राण का नाम लेना भी आवश्यक था। उसने आज तक किसी लड़के को उसका नाम लेकर नहीं बुलाया था। नाम लेने के विचार ही से उसका हृदय जोर-जोर से धड़कने लगा। उसे इस बात का भी अनुभव था कि समय बड़ी जल्दी से बीता जा रहा था। यह मौका हाथ से निकल जाने पर कौन कह सकता था कि नया मौका फिर कभी हाथ आए न आए।

तब उसने बड़ी मुश्किल से जी कड़ा करके कहा—"प्राण बाबू!"

इतना कह कर वह घबरा गई। इसी घबराहट में उसने प्राण की ओर देखा तो वह भी परेशान-सा दिखाई दिया, जैसे उसे अपने कानों पर विश्वास न हो रहा हो। जैसे वह लोटा छोड़ कर वहाँ से भाग निकलेगा·····फिर उसने घबराये हुए स्वर में पूछा—'आपने मुझसे कुछ कहा?'

उसकी काँपती हुई आवाज सुनकर घबराहट के साथ राधा को हँसी भी छूटने लगी, परन्तु उसने साड़ी का आँचल मुँह पर रख लिया और हँसी को दबाते हुए धीमे से बोली—'जी हाँ।'

'कोई काम है क्या ?' प्राण ने ऐसे स्वर में पूछा जैसे उसके गले में किसी ने फन्दा डाल दिया हो।

राधा ने उत्तर दिया—'मुझे जरा आपकी कापी चाहिये····· मेरे कुछ नोट्स ठीक ढंग से नहीं लिखे गये·····यदि आपको कष्ट न हो तो अपने नोट्स की कापी मुझे दे दें। मैं नोट्स उतार कर आपकी कापी लौटा दूँगी·····'

प्राण कुछ उत्तर देने भी न पाया था कि दो-तीन लड़कियाँ प्लेटें लेने के लिए जल्दी से वहाँ आईं और उनकी बात-चीत का सिलसिला टूट गया।

उन लड़कियों के आ जाने से राधा से अधिक प्राण घबड़ा गया और उसने ऐसी शक्ल बना ली जैसे राधा से उसकी बात-चीत ही नहीं हुई हो। वह बड़ा गम्भीर बन कर दो कदम पीछे हट कर खड़ा हो गया। लड़कियाँ प्लेटें लेकर चली गईं, उनका काम भी करीब-करीब समाप्त हो चुका था इसलिए प्राण अपनी जेब में से एक बड़ा-सा रूमाल निकाल कर हाथ पोंछने लगा। राधा भी यूँ ही अपनी साड़ी का पल्लू ठीक करने लगी। परन्तु यह तो केवल एक बहाना था वहाँ कुछ देर रुके रहने का। अब जबकि वे दोनों ही इतने घबराये हुए थे, और बात-चीत की कोई सम्भावना ही नहीं थी। हाँ, मर्द होने के नाते से प्राण कुछ बात-चीत कर सकता था, लेकिन वह राधा से भी पहले वहाँ से खिसक गया।

राधा भी तुरन्त ही चली आई अपनी सहेलियों के पास····· उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। उसे डर था कि कहीं उसकी सहेलियों ने उसके और प्राण के बारे में कोई बात सोच न ली हो। परन्तु उस गहमा-गहमी में किसी का ध्यान भी उन दोनों की ओर नहीं गया था। इधर से तसल्ली हो गई तो फिर उसके मन में प्राण की आवाज गूँजने लगी। कैसी मामूली घटना थी ? कितनी साधारण और संक्षिप्त बात-चीत हुई थी उनकी ? फिर भी यूँ लगता था जैसे कि वह कोई बहुत ही अनोखी घटना हो।

रात को जब वह सोने के लिए बिस्तर पर लेटी, तो दिमाग में अजीब-अजीब विचार चक्कर लगाने लगे। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसने कैसे यह बात प्राण से कह दी। परन्तु प्राण की हड़बड़ाहट से उसने यही नतीजा निकाला कि अब उनकी और कोई बात-चीत न हो सकेगी। इसने उसकी कापी के बारे में पूछा, परन्तु उस भले आदमी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। दूसरे लड़के तो ऐसे मौके की तलाश में रहते थे कि उन्हें किसी लड़की से बात करने का अवसर मिल जाय, परन्तु एक यह प्राण जी थे लड़की के बात करने से उनके हाथ-पाँव ही फूल गये। अब इस बात की आशा रखना बेकार था कि वह इस सिलसिले को आगे बढ़ाने की कोशिश करेगा, बल्कि अब तो इसी बात की आशा रखनी चाहिये कि प्राण उसकी परछाईं से भी दूर भागेगा।

दूसरे दिन जब वह कालेज गई तो उसने दबी-दबी नजरों से चारों ओर देखा, परन्तु उसे प्राण वहीं दिखाई नहीं दिया। वह बरामदे में पहुँची और जल्दी-जल्दी अपने क्लास की ओर बढ़ी कि इतने में बगल ही से आवाज आई—'सुनिये।'

उसने चौंक कर सिर घुमाया तो देखा कि वहाँ प्राण खड़ा था। दोनों की आँखें मिलीं तो प्राण ने झट से एक कापी आगे बढ़ा कर उसके हाथ में थमा दी..... और फिर एक-दम पलट कर वहाँ से चल दिया।

यह घटना इतनी अचानक हुई कि राधा ने भी दायें-बायें घूम कर देखा और फिर एक-दम अपने क्लास की ओर बढ़ गई। दो पल में तो यह घटना हो गई, किसी ने इसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया.....इस बात से राधा के मन को बड़ी शान्ति मिली।

प्राण की कापी पाकर क्लास में बैठे-बैठे राधा को यूँ महसूस हुआ जैसे उसने बहुत बड़ा खजाना पा लिया हो। अपनी किताबों के बीच में उसने प्राण की कापी छिपा दी, ताकि किसी की उस पर नजर न पड़

जाय। उसने मन में सोच लिया कि मौका पाते ही वह हॉस्टेल जाकर उस कापी को अपने ट्रंक में रख आये। उसने सब नोट्स लिख रखे थे इसलिये उसे प्राण की कापी में से कुछ उतारने की जरूरत नहीं थी। वह तो केवल बात करने का एक बहाना था। कापी कुछ दिन अपने पास रखने के बाद वह उसे लौटा देगी—उसने यही तय कर रखा था।

उसके मन में कई प्रकार के विचार आने लगे क्योंकि अब उसके जीवन में इस घटना से एक नया मोड़ आ गया था। प्रोफेसर साहब कुछ भाषण दे रहे थे, परन्तु उसका उनकी ओर ध्यान ही नहीं था और न वह प्राण की ओर देख रही थी जो उस समय तक क्लास में आ चुका था। वह जानती थी कि प्राण भी उसी की तरह सिर झुकाये बैठा होगा और उसकी नजरें अपने सामने रखे डेस्क पर जमी होंगी।

दो-चार दिन राधा प्राण की कापी अपने ट्रंक में छिपाये रही। मौका पाते ही उसे देख लेती जैसे वह कोई बड़ी ही अनमोल वस्तु हो। एक रोज ऐसा भी आया कि जब कि उसने वह कापी लौटा दी और धीमे से प्राण को धन्यवाद दिया।

उस समय शाम हो चुकी थी। आस-पास कोई नहीं था। प्राण ने बड़े साहस से काम लेते हुए पूछा—'मेरी कापी पढ़ने में आपको कोई कष्ट तो नहीं हुआ? बात यह है कि मेरी लिखाई बहुत खराब है इसीलिए···

उस समय भी इसी प्रकार की दो-चार बातें हुईं···परन्तु धीरे-धीरे उन दोनों का संकोच कम हो गया। वास्तव में वे दोनों एक ही प्रकार के प्राणी थे। झेंपू, सबसे अलग रहने वाले परन्तु प्रेम के भूखे। इसी तरह एक दिन ऐसा आया जबकि उनकी पढ़ाई समाप्त हो गई और उन्होंने अपने घर वापस जाने की तैयारी कर ली। तब प्राण ने डरते-डरते अपने मन की बात कही तो राधा ने उत्तर दिया—'आप मेरे पिता जी के पास आइएगा···मुझे विश्वास है कि वह इन्कार नहीं करेंगे।'

एक...

आज प्राण के आने का वायदा था और राधा उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। ज्यों-ज्यों समय गुजरता जा रहा था त्यों-त्यों राधा की बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी। इस बात का तो कोई भय नहीं था कि प्राण आने से ही रह जाय, परन्तु फिर भी ऐसे मामलों में कुछ परेशानी तो रहती ही है और शायद इसमें इस बात का भी अन्देशा हो कि पिता जी से बातचीत का न जाने क्या नतीजा निकले। हालाँकि राधा को इस बात का कोई सन्देह नहीं था क्योंकि उसे उसके पिता ने इतना पढ़ाया-लिखाया तो वह इसीलिए कि उनकी बेटी का जीवन सुधर-सँवर जाय। उन्हें इतना भी पता होगा ही कि जो लड़की ऊँची शिक्षा प्राप्त करेगी उसके सोचने का भी एक ढंग होगा ही और निश्चय ही वह इस बात के लिए भी तैयार होंगे कि यदि उनकी बेटी किसी को अपना जीवन-साथी बनाना चाहेगी तो वह खुशी-खुशी उसकी आज्ञा दे देंगे····कम से कम राधा के मन की यही धारणा थी।

वह इसी उधेड़-बुन में थी कि इतने में दूर फाटक से प्राण आता दिखाई दिया। प्रकाश इतना कम हो चुका था कि दूर से किसी को पहचानना असम्भव था। परन्तु उस समय सिवा प्राण के वहाँ आने वाला और कौन हो सकता था और फिर वह प्राण के डील-डौल, उसके चलने-फिरने के ढंग से भी भली-भाँति परिचित थी।

जब वह थोड़ा निकट आया तो यह भी बरामदे से उतर कर उसकी ओर बढ़ी। उसके पास पहुँच कर इसने अपना हाथ यूँ ही जरा-सा बढ़ाया तो प्राण ने उसे अपने हाथ में थाम लिया। राधा कुछ दबी

काँपती-सी आवाज में बोली—'आपने बहुत देर लगा दी···कब से प्रतीक्षा कर रही हूँ।'

'मुझे खेद है कि ···बहुत अधिक तो नहीं, परन्तु कुछ देर तो हो ही गई।'

राधा ने कुछ शरारत से मुस्कराते हुए कहा—'मैं तो समझे बैठी थी कि ऐसे शुभ कामों के लिए मर्द समय से पहले ही पहुँच जाते हैं, लेकिन एक आप हैं कि देर लगा ही दी····अधिक देर नहीं फिर भी कुछ देर तो लगाई। क्या मेरे लिए यह 'कुछ' अधिक नहीं है ?'

प्राण भी धीमे से हँस कर बोला - 'राधा तुम कहती तो ठीक हो, परन्तु मुझे अपने बारे में तो यूँ लगता है जैसे मैं आधा मर्द हूँ और आधी ···।'

इस पर राधा ने खिलखिलाते हुए कहा—'अब आपके अन्दर जो आधा मर्द है उसे तैयार कर लीजिए क्योंकि अब आपको उसी से काम लेना होगा ··· आधी औरत से नहीं।'

'मन ही मन में बहुत घबरा रहा हूँ; घबराहट के कारण तो मुझे कुछ देर हो गई। फिर भी अब तो मुझे यह काम करना ही है क्योंकि कहीं भाग कर जा भी तो नहीं सकता।'

राधा ने उसकी पीठ पर हल्की-सी थपकी देकर कहा 'यदि भागना ही है तो पिता जी के कमरे की ओर भागिए। इधर-उधर भागने से क्या फायदा ?'

इस पर वे दोनों हँसे। अब राधा प्राण को पिता जी वाले कमरे के दरवाजे तक ले आई और उसके कान में फुसफुसा कर बोली—'याद है ना, मैंने पिता जी से कह रखा है कि आप मुझसे मिलने के लिए आने वाले हैं। मैंने उनके सामने आपकी काफी तारीफ भी कर दी है। यह भी बता दिया है कि आप और हम एक साथ पढ़ते रहे हैं····इस बहाने से आप उनके साथ बातचीत शुरू कर सकते हैं····यह तो आपको मालूम ही है कि बात को घुमाकर अपने ढर्रे पर आपको कैसे लाना है।'

प्राण ने अपना सिर नीचे-ऊपर हिला कर समझा दिया कि वह अच्छी तरह जानता है कि बात को कैसे बढ़ाया जायगा।

राधा तो इतनी बातें करके चल दी और दूसरे दरवाजे से घर के भीतर पहुँच कर वह पिता जी के कमरे के पास पहुँची और दरवाजे की ओट में खड़ी होकर इस बात की प्रतीक्षा करने लगी कि देखूँ प्राण और पिता जी की बात-चीत कैसे चलती है।

प्राण ने डरते-डरते पहले तो दरवाजा खटखटाया। पिता जी की खाँसी का दौर अब धीमा पड़ गया था। उन्होंने खरखराती हुई आवाज में कहा—'अरे भई कौन सज्जन हैं····अन्दर चले आइये।'

तब पिता जी ने देखा कि एक भोली शकल वाला युवक सीधे-सादे वस्त्र पहने भीतर आया और आते ही उसने दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते की।

पिता जी ने अपनी मैली-मैली आँखों से युवक की ओर देखा और फिर अपना दुबला-पतला हाथ उठाकर उन्होंने उसे कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

युवक ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—'जी मेरा नाम प्राण है····'

'प्राण—'पिता जी ने उँगलियों से माथा दबाते हुए कहा—'यह नाम तो मैंने कहीं सुना है पहले भी।'

प्राण जल्दी से बोला—'जी हाँ जी हाँ, आपने जरूर सुना होगा····मैं ·· मैं····मेरा मतलब है कि राधा जी और मैं एक साथ ही पढ़ते रहे हैं····एम० ए० एक साथ किया है हमने····शायद उन्होंने ही मेरा जिक्र किया होगा।'

पिता जी हाथ ऊपर को उठाकर बोला - 'हाँ बिल्कुल ठीक····वही कह रही थी आपके बारे में····बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर····आप यहाँ कब आए ?'

'आपका मतलब है इस शहर में ?····जी, मैं भी यहीं का रहने वाला हूँ।'

'ओह, अब समझा····तो यूँ कहिए न कि आप हमारे अपने ही हैं।'

यह बात सुन कर प्राण का साहस कुछ बढ़ा और वह बड़े प्रेम से दोनों हाथ जोड़ कर सिर हिलाते हुए बोला —'जी हाँ जी हाँ ·· मुझे अपना बेटा ही समझिए।'

'क्यों नहीं····क्यों नहीं····अच्छा तो अब आपको अपना नगर कुछ अजीब-सा तो लगता होगा।'

'जी हाँ, कुछ फर्क तो है ही। युनिवर्सिटी का वातावरण कुछ और था और यहाँ का कुछ और है। फिर भी कोई बात नहीं मन तो लग ही जायगा। अभी तो यह भी निश्चय नहीं है कि यहाँ अधिक समय तक रह सकें····हो सकता है कि रोजगार के खातिर कहीं और जाना पड़े।····'

'हाँ बेटा, यह तो मर्द का कर्त्तव्य ही है। और यही उसकी तकदीर में लिखा है। रोजी कमाने के लिए जगह-जगह घूमना और घाट-घाट का पानी पीना पड़ता है।'

इसी तरह बात-चीत चल निकली। कभी एक विषय पर कभी किसी दूसरे विषय पर बात-चीत होती रही। उनकी बात-चीत करने के ढंग से प्राण की उलझन दूर हो गई और उसका उत्साह बढ़ा। पहले वह डरता था कि न जाने राधा के पिता जी कैसी तबियत के हों और उससे कैसे बर्ताव करें, परन्तु वह तो उसे बहुत अच्छे लगे। रोगी होते हुए भी उनकी तबियत में रोगियों का सा चिड़-चिड़ापन नहीं था। बड़ी बेतकल्लुफी की सी बात-चीत करते थे और बात-चीत में अक्सर हँसते भी थे।—एकाएक ही उन्होंने चौंक कर कहा —'अरे! मैं भी अजीब आदमी हूँ। अपनी बात-चीत में यह मैं तो भूल ही गया कि तुम बेटी राधा से मिलने आए हो।'

इतना कह कर वह ऊँचे स्वर में आवाजें देने लगे—'राधा ! बेटी राधा !·····देखो तो प्राण बाबू तुमसे मिलने आए हैं ।'

राधा दरवाजे के पास ही खड़ी थी । पिता जी के आवाज देने पर एकदम बोल उठती तो उन्हें पता चल जाता कि वह उनकी बातें सुन रही थी । इसलिए वह दबे पाँव वहाँ से चल दी और दूसरे कमरे से आवाज दी—'आई पिता जी ।'

फिर वह पर्दा उठाकर कमरे में घुसी । उसे देखते ही प्राण कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, दोनों हाथ जोड़ कर बोला—'नमस्ते जी ।'

'नमस्ते ।' राधा ने उत्तर देते हुए कुर्सी की ओर इशारा किया—'बैठिये ना, आप खड़े क्यों हो गए ।'

प्राण बैठ गया और राधा भी सम्हल कर कुर्सी पर बैठते हुए बोली—'कहिए, आप कब आए ?'

'यही पाँच-दस मिनट हुए होंगे ।'

अब पिता जी बोल उठे—'बेटी, मैंने ही इन्हें बातों में लगा लिया, तुम्हें बुलाना याद ही नहीं रहा हालाँकि तुमने इनके आने के बारे में पहले से ही कह रखा था ।'

यह सुनकर राधा और प्राण ने एक-दूसरे की ओर छिपी नजरों से देखा और हँस पड़े ।

पिता जी उनकी हँसी से कुछ नहीं समझे और वे तीनों इधर-उधर की बातें करने लगे तभी पिता जी ने याद दिलाया—'बेटी, जरा चाय तो तैयार करो । प्राण बाबू भी क्या कहेंगे कि बातों ही बातों में हमने खातिर पूरी कर दी ।'

इस पर सब हँसने लगे और राधा उठ कर अन्दर चली गई । चाय और नाश्ते का प्रबन्ध तो उसने पहले से ही कर रखा था इसलिए शीघ्र ही सारा सामान लेकर लौट आई ।

चाय और नाश्ते के साथ बातचीत भी होती रही । फिर जब राधा

बर्तन उठाकर जाने लगी तो उसने आँखों ही आँखों में प्राण को समझा दिया कि अब वह असली बात शुरू कर दे।

राधा के पिता जी की हँसमुख शक्ल और खुली तबियत देखकर प्राण का उत्साह बढ़ गया था। उसने सोचा कि इस विषय पर बात-चीत करना कुछ कठिन नहीं होगा। परन्तु जब वह कहने को तैयार हुआ तो फिर बात मुँह से निकल नहीं पाई। वह सोचता ही रह गया कि बात का आरम्भ कैसे हो।

उधर राधा लौट आई थी परन्तु अबकी वह कमरे में नहीं आई, बल्कि दरवाजे के पास पर्दे के पीछे खड़ी होकर वह उसे इशारे करने लगी। उधर से राधा का दबाव पड़ रहा था और इधर प्राण की बौख-लाहट बढ़ रही थी। जो बात कुछ समय पहले बिल्कुल सरल मालूम हो रही थी अब खासी कठिन दिखाई देने लगी।

न-जाने यह हालत कब तक रहती, परन्तु भगवान भला करें पिता जी का, उन्होंने खुद ही कुछ ऐसी बात छेड़ दी जिससे प्राण का काम आसान हो गया। पिता जी बोले—'बेटा, अब किस लाइन में जाने का इरादा है? किसी कम्पीटीशन में बैठोगे या अभी से कोई काम शुरू कर दोगे ..... मेरे विचार में कोई और काम करना हो तो शादी भी कर ही डालो.....मेरे ख्याल में शादी इसी उम्र में हो जाय तो अच्छा है क्योंकि जब आदमी अधेड़ उम्र का हो जाता है तो उस समय तक बच्चे पढ़ लिख जाते और बड़े होकर किसी काम योग्य भी हो जाते हैं.....वरना, बच्चे बुढ़ापे में जवान होते हैं तो बड़ी कठिनाई होती है।'

राधा के पिता जी ने बात तो बड़े पते की कही थी जो कोई तजुर्बे-कार आदमी ही कह सकता था, परन्तु इसके साथ ही प्राण ने सोचा कि अपनी बात चलाने का भी यह अच्छा मौका है। चुनाँचे वह बोला 'आपने ठीक ही कहा....मेरा ख्याल यही है कि मैं जो कुछ भी करूँ.... मेरा मतलब है कि मेरे माता-पिता भी कहते हैं कि मैं शादी अभी कर लूँ।'

'तब तो और अच्छा है। जब माता-पिता की भी यही मर्जी है तो फिर देर किस बात की।'

'जी हाँ····वही तो मैं भी सोच रहा था····और फिर यह बात भी तो है कि अपने मन पसन्द की लड़की भी तो हर समय नहीं मिल सकती ··'

यह सुन कर बुढ्ढे के होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट आई और वह सिर हिलाते हुए बोला—'अच्छा! तो मालूम होता है कि तुमने किसी लड़की को चुन भी लिया है। बड़ी अच्छी बात है आखिर जीवन भर का साथ निभाना होता है····भई, हम तो ठहरे पुराने समय के लोग, पुरानी परम्परा में पले हुए—हम लोगों के विचार आज वालों से भिन्न तो हैं ही, फिर भी इसमें क्या हर्ज है कि अगर तुम उसी लड़की से शादी करना चाहते हो जिसे तुम पसन्द करते हो ···'

अब कुछ देर के लिए मौन छा गया। प्राण हाथ से यह मौका जाने नहीं देना चाहता था। उसने जरा खाँस कर कहा 'जी हाँ, ऐसी ही बात है····इसी विचार को लेकर मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ था····'

यह सुन कर राधा के पिता जी चौंके। उन्हें प्राण की बात का अर्थ समझने में कुछ भी देर नहीं लगी। उन्होंने कुछ पल के लिए आँखें बन्द कर लीं। फिर भारी स्वर में बोले— 'अच्छा····तो तुम्हारा मतलब राधा से है····'

प्राण जल्दी से बोल उठा—'जी हाँ····जी हाँ····मुझे आशा है कि आप को मेरी बात बुरी नहीं लगी होगी। हम दोनों ने मिलकर यह तय किया था कि मैं आपसे बात कर लूँ····हमें आप पर पूरा भरोसा है और पक्का विश्वास भी है कि आप हमें अपना आशीर्वाद देंगे।'

जब एक बात मुँह से निकली तो प्राण बोलता ही चला गया। राधा के पिता जी को फिर खाँसी का दौरा पड़ा। वह कुछ देर तक खाँसते रहे। उन्होंने दोनों हाथों से अपना सीना दबा लिया। बलगम कहीं छाती

में फँसा था, निकलने का कहीं नाम नहीं ले रहा था। खाँसते-खाँसते बड़ी-बड़ी मुशकिल से खाँसी थमी तो वह गहरी सोच में डूब गए। प्राण अपनी बात का उत्तर सुनने के लिए व्याकुल हो रहा था। जब राधा के पिताजी कुछ नहीं बोले, तो उसने फिर कहना शुरू किया—'आप मेरे बारे में कुछ जानना चाहें या मेरे चरित्र और मेरे खानदान के सम्बन्ध में भी कुछ जानना चाहें तो····'

राधा के पिता जी ने बात बीच में ही काटते हुए कहा —'नहीं बेटा, ऐसी कोई बात—नहीं····फिर भी तुम तो इतना समझते ही हो कि ऐसे मौके पर कुछ सोचने की जरूरत तो होती ही है। मुझे आशा है कि तुम मुझे थोड़ी मोहलत दोगे। एकदम कुछ कह देना तो किसी बाप के लिए भी सम्भव नहीं।'

"जी हाँ····जी हाँ ·· मैं अच्छी तरह समझता हूँ!' आप अवश्य सोचें और जिस तरह भी चाहें मैं आपकी तसल्ली करने को तैयार हूँ।'

राधा के पिता जी ने पीली-पीली आँखों से उसकी ओर देखा और फिर मुस्करा कर सिर हिला दिया। इतनी बात हो जाने के बाद प्राण ने सोचा की अब और बातचीत क्या हो सकती है इसीलिए आज्ञा लेकर वहाँ से चल देना ही बेहतर होगा।

अब पिता जी ने पर्दे के पीछे खड़ी राधा के पाँव देख लिये थे जिससे वह समझ गए कि उनकी बेटी भी इस रिश्ते के लिए कम उत्सुक नहीं है।

उधर जब प्राण उसके पिता जी से विदा होकर बाहर निकला तो राधा भी दौड़ती हुई उसके साथ जा मिली। राधा का दिल धड़क रहा था क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि पिता जी एकदम ही हाँ कह देंगे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। इस विचार से कि कहीं प्राण की हिम्मत छूट न जाय वह बोली—'परेशानी की कोई बात नहीं····मेरा ख्याल है कि वह मुझसे आपके बारे में अवश्य कुछ पूछेंगे और हो सकता है कि

आपके खानदान के बारे में भी अपने जानने वालों से कुछ पता करें····
लेकिन ऐसा तो होता ही है।'

प्राण न तो निराश दिखाई देता था और न मन में निराश था ही। उसे राधा के पिता जी बड़े अच्छे लगे। उनका व्यवहार, उनकी बात-चीत आदि सभी चीजें भली लगीं। प्राण यह बात तो भली-भाँति समझता था कि पहले ही दिन बात छेड़ने पर संसार का कोई भी बाप एकदम हाँ नहीं कह सकता। हर पिता को अपनी बेटी के भविष्य के लिए अच्छे से अच्छे घर-बर को ढूँढ़ने का पूरा अधिकार है। यह भी वह जानता था कि राधा के पिता जी उसके बारे में पूरा पता लगाए बिना रिश्ते के लिए हामी नहीं भर सकते। इसीलिए राधा को इस बात की जरूरत नहीं कि वह प्राण की हिम्मत बढ़ाने के लिए ऊपर वाले शब्द कहे। लेकिन राधा के मन की बात सुनकर प्राण हँस दिया और उसका हाथ थामते हुए प्यार-भरे स्वर में बोला—'इसमें कोई बात नहीं राधा! मैं इन बातों को समझता हूँ। आखिर वह तुम्हारे पिता हैं और तुम उनकी एकलौती बेटी हो। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वह मेरे बारे में अच्छी तरह पता लगाना चाहेंगे। मेरी बातों से उन्होंने इस बात का अन्दाजा तो लगा लिया होगा कि तुम भी मुझी से ब्याह करना चाहती हो। परन्तु अपने पिता जी की दृष्टि में तुम एक नातजुर्बेकार युवती हो इसलिए केवल तुम्हारे निर्णय पर वह इतना भारी कदम कैसे उठा सकते हैं। कोई बात नहीं, मैं निराश नहीं हूँ क्योंकि मेरे बारे में वह जिस तरह चाहें अपनी तसल्ली कर लें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उन्हें मेरे बारे में कोई ऐसी बात मालूम नहीं हो सकती जिस पर उन्हें कोई आपत्ति हो।'

इतना कहकर प्राण ने रात के अंधेरे में राधा का हाथ धीरे से दबाया और उससे विदा हो गया।

राधा घर की ओर लौटी तो न जाने क्यों उसका मन बोझिल हो रहा था।

दो...

तीन-चार दिन गुजर गए। पिता जी ने बेटी से कोई बात नहीं कही, परन्तु वह कुछ गहरी सोच में डूबे दिखाई देते थे। प्राण से तो राधा की हर रोज ही मुलाकात हो जाती थी। उसने प्राण को भी बताया कि पिता जी कुछ सोचते रहते हैं, मगर मुँह से कुछ नहीं कहते।

प्राण ने हँसते हुए कहा—'राधा ! कहीं ऐसा तो नहीं कि पिता जी की नजर में कोई और युवक हो जिसे वह तुम्हारे लिए ज्यादा योग्य समझते हों।'

यह सुनकर राधा ने मुँह फुला लिया - 'जाइये जाइये····ऐसी बात हरगिज नहीं हो सकती, क्योंकि अगर ऐसी बात कभी चली होती तो पिता जी मुझे अवश्य ही बता देते।'

राधा को इस बात पर पूर्ण विश्वास था कि उसके पिता जी ने उसके लिए कोई और वर नहीं ढूंढ़ रखा है। प्राण भी उससे सहमत था। उसने यूँ ही उसे छेड़ने के लिए यह बात कह दी थी।

इस तरह दिन व्यतीत होते गए। राधा के मन की बेचैनी भी बढ़ती गई, परन्तु उसने अपनी इस बेचैनी को प्राण पर जाहिर नहीं होने दिया, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि प्राण खामखा परेशान हो।

सातवें दिन, तीसरे पहर जब राधा चाय का ट्रे लेकर पिता जी के पास पहुँची तो उन्होंने यही बात छेड़ दी। राधा प्यालों में चाय डाल रही थी कि उसके पिता जी ने कहा—'प्राण फिर कभी दिखाई नहीं दिया ?'

राधा पल-भर तो चुप रही, फिर धीमे स्वर में कहा—'आप चाहें तो उन्हें बुलवा लिया जाय !'

पिता जी ने इस बात का तो कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि बात घुमाकर बोले—'तुम्हें तो मिला ही होगा ?'

राधा पहले तो समझ नहीं पाई कि इस बात का क्या उत्तर उचित होगा। लेकिन फिर उसने सोचा कि झूठ बोलने का क्या फ़ायदा ? सच्ची बात सुनकर पिता जी को कम से कम इस बात का पक्का सबूत तो मिल जायगा कि वे दोनों ब्याह करने पर तुले हुए हैं। इसी बात को सोचकर उसने बड़ी धीमे स्वर में कहा—'जी हाँ।'

बाप-बेटी दोनों के हाथों में चाय के प्याले थे और वह छोटे-छोटे घूँट भर रहे थे और अपने-अपने विचारों में डूबे हुए थे।

आखिर पिता जी बोले—'प्राण लड़का तो अच्छा है....'

यह सुन कर राधा का हृदय जोर-जोर से धड़कने लगा। हालाँकि उसके पिता जी ने अपना वाक्य यूँ तोड़ दिया था जैसे कुछ और भी कहना चाहते हों, परन्तु अपने इन शब्दों से यह बात तो जाहिर कर ही दिया कि उन्हें प्राण पसन्द था।—क्या इतना काफी नहीं था। यदि उन्हें प्राण पसन्द ही नहीं होता, तो बड़ी भारी अड़चन पैदा हो सकती थी।

राधा चुपचाप चाय पीती रही। वह मन में बड़ी खुश थी। वह सोच रही थी कि चाय से फ़ुरसत पाते ही वह प्राण के पास जाएगी और उसे यह खुशखबरी सुनाएगी, तो वह कितना खुश होगा !

पिता जी ने फिर धीरे-धीरे कहना शुरू किया—'मुझे इस बात का अन्दाजा है कि तुम दोनों जीवन-साथी बनना चाहते हो—मुझे इस बात की भी कोई जरूरत नहीं थी कि मैं प्राण के बारे में कुछ पता लगाऊँ—'

अब तो राधा के मन में कोई सन्देह नहीं रह गया क्योंकि इससे ज्यादा साफ शब्दों में पिता जी और क्या कह सकते थे। राधा को यूँ

लगा जैसे उसका जीवन पल-भर में ही सफल हो गया हो । अब उसका भविष्य बिल्कुल उज्ज्वल था क्योंकि अब वह प्राण के साथ हँसी-खुशी जीवन व्यतीत कर सकती थी ।—उसके पिता जी की भारी खरखराती आवाज फिर सुनाई दी –'लेकिन बेटी जिस बात को कहने से मैं घबरा रहा था, अब वह कहनी पड़ रही है—मुझे भय है कि यह ब्याह नहीं हो सकता ।'

चाय का प्याला राधा के हाथ से छूटते-छूटते बचा । उसका सिर चकरा गया, सारा संसार घूमने लगा । पिता जी यह क्या मजाक कर रहे थे····परन्तु नहीं, वह अपनी लाड़ली बेटी से ऐसा भयंकर मजाक तो कदापि नहीं कर सकते थे ।····शायद इसके कानों ने गलत सुना हो····

एकाएक ही राधा ने अपनी मोटी-मोटी आँखें उठाईं जैसे वह आँखों ही आँखों में पूछ रही हो—'क्यों पिता जी, यह ब्याह क्यों नहीं हो सकता ?'

उसके पिता जी ने दुखी चेहरे और उदास नजरों से उसकी ओर देखा और बड़ी मुश्किल से बोले—'तुम विधवा हो बेटी ! विधवा की शादी कैसे हो सकती है ?'

तीन...

प्राण दो दिन तक राधा की प्रतीक्षा करता रहा। वह प्रति दिन उसे मिलती थी, न जाने अब क्यों नहीं आ रही थी ? कहीं बीमार न पड़ गई हो। इसी विचार से तीसरे रोज शाम को प्राण स्वयं उसके घर पहुँचा। उसने दूर ही से देखा कि राधा बरामदे में एक कुर्सी पर बैठी है। उसका ध्यान इसकी ओर नहीं था, वह यूँ ही एक पत्रिका के पन्ने उलट-पलट रही थी। जब प्राण काफी नजदीक पहुँच गया तो भी राधा ने सिर उठाकर उसकी ओर नहीं देखा, हालाँकि उसके बूटों के बजरी पर पड़ने से काफी शोर उठ रहा था—प्राण ने हलके से ताली बजाई, एक बार नहीं तीन-चार बार····तब कहीं राधा ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा। उसका चेहरा उतरा हुआ था, बाल बिखरे हुए और आँखें सूजी हुई। प्राण का ख्याल था कि उसे देखते ही राधा खिल उठेगी और सदा की भाँति उछल कर उसकी ओर दौड़ेगी। परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि प्राण को यूँ लगा कि यदि वह उसे पहले देख लेती तो शायद उससे बात किये बिना घर में घुस जाती और फिर बाहर न निकलती····अब एकदम ही आमना-सामना हो जाने से वह भाग भी नहीं पाई।

एक बार तो प्राण घबरा गया। पहले तो उसे यही सन्देह हुआ कि कहीं उसके पिता जी का स्वास्थ्य एकदम गिरने से कोई दुर्घटना न हो गई हो। लेकिन इतने में ही उनके खाँसने की आवाज सुनाई देने लगी जिससे लगता था कि उनका स्वास्थ्य पहले की ही भाँति था, अधिक बिगड़ा नहीं था। तो फिर राधा की यह दशा क्यों हो रही थी। उसने राधा को इशारे से अपने पास बुलाया। पहले तो राधा ने यूँ सिर झुका

लिया जैसे वह उसके पास न आना चाहती हो, लेकिन बहुत ही धीरे से उठी और सुस्त कदमों से चलती हुई उसके पास पहुँची और फिर बिना उससे आँखें मिलाये उसके साथ-साथ फाटक की ओर चल दी।

प्राण उसके व्यवहार में ऐसा परिवर्तन देखकर हैरान रह गया··· कुछ देर तक वह बोल ही नहीं सका। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह बात कैसे शुरू करे। वह इसी इन्तजार में रहा कि शायद राधा ही कुछ कहे, लेकिन जब वह कुछ नहीं बोली, तो उसने बात शुरू कर ही दी—'राधा, दो दिन से तुम मिलीं नहीं, आज मुझे तुम्हारे पास आना पड़ा। तुम्हारी शक्ल देखकर तो यूँ लगता है कि तुम आज भी मेरे पास आने वाली नहीं थी। खैर, इसमें तो कोई हर्ज नहीं, मैं ही आ गया। परन्तु इतना तो बताओ कि हुआ क्या है।'

राधा ने बड़ी मुश्किल से भरी हुई आवाज में उत्तर दिया—'कुछ नहीं।'

'वाह! मुझसे छिपाती हो··· ····क्या मैं तुम्हारी शकल देखकर नहीं बता सकता कि मामला कुछ गड़बड़ है।'

इस पर भी राधा कुछ नहीं बोली, तो प्राण ने यही सोचा कि उसे घर से जरा दूर ले जायँ, ताकि खुलकर बात-चीत हो सके।

यह सोच कर प्राण ने इशारे से एक रिक्शे को बुलाया और राधा के कन्धे पर हाथ रखकर बोला—'चलो बैठो, थोड़ी देर घूम आयें।

राधा यूँ रिक्शा की ओर बढ़ी जैसे वह स्वप्न में चल रही हो। वे दोनों थोड़ी देर बाद मोतीबाग में पहुँच गये। इस पार्क में ज्यादा भीड़-भाड़ नहीं होती थी और अगर कहीं होती भी थी तो फूलों की क्यारियों के पास। प्राण राधा को उधर नहीं ले गया, बल्कि इधर-उधर की सड़कों पर टहलने लगा। वह राधा के चेहरे को बड़े ध्यान से देख रहा था और उसके मन के विचारों को जानने की कोशिश कर रहा था; आखिर उसने मजबूत स्वर में पूछा—'राधा! तुम्हें इस तरह से चुप नहीं रहना चाहिए। पहले तो मैं समझा था कि शायद पिता जी

की तबियत अधिक खराब हो गई है। वैसा तो नहीं है। जहाँ तक मैं अन्दाजा लगा सका हूँ मेरे विचार में उनकी ओर से कोई अड़चन पैदा हो गई, जिससे तुम घबरा गई हो या शायद निराश हो गई हो—लेकिन राधा यह तरीका गलत है। हम दोनों ने जीवन-भर एक साथ रहने का निश्चय किया है। हमारे रास्ते में कुछ कठिनाइयाँ भी आ सकती हैं, परन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं है कि हम निराश हो जायँ—तुम्हें कम से कम मुझे सारी बात तो बतानी चाहिए। यह तो ठीक नहीं है कि तुम अचानक ही चुप हो जाओ और न अपनी कहो, और न मेरी सुनो। आखिर, मुझ पर तुम्हारा और तुम पर मेरा भी तो कुछ अधिकार है।'

चलते-चलते राधा रुक गई और धीमे से बोली—'प्राण बाबू, हमारा विवाह नहीं हो सकता।'

प्राण के होठों पर एक मुस्कराहट उत्पन्न हुई और वह बोला—'बस,·····केवल इतनी सी बात ?'

राधा ने चौंक कर परन्तु उदास नजरों से उसकी ओर देखा और बोली —'तो आपके विचार में यह कोई बात ही नहीं है ?'

'बात तो है····परन्तु मैं इतना जरूर कहूँगा कि मुझे इससे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि मैं जानता था कि हमारे रास्ते में अड़चनें भी आयेंगी और मैं यह भी जानता था और जानता हूँ कि लड़कियाँ ऐसी अड़चनों के आगे हथियार डाल देती हैं। मैं जानता था कि तुम्हारे हर दावे के बावजूद एक रोज तुम मुझसे यही शब्द कहोगी।'

राधा ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया, वह चुपचाप मुँह घुमाकर कुछ दूर तक चुपचाप चलती गई और फिर प्राण की ओर पीठ करके रुक गई।

प्राण उसके पीछे-पीछे गया और निकट पहुँच कर बोला—'मेरी समझ में नहीं आता कि उससे घबराने की क्या बात है, परेशान होने

की क्या जरूरत····ठीक है, कोई अड़चन पैदा हो गई होगी, परन्तु उस अड़चन से हमें निराश नहीं होना चाहिए। हमने जबकि जन्म-जन्म तक एक दूसरे का साथ देने का निश्चय किया है तो फिर क्या हम एक अड़चन आ जाने से अपने जीवन का सारा नक्शा पलट देंगे ? अवश्य ही पिता जी ने कोई ऐसा कारण बताया होगा जिससे हमारी शादी असम्भव मालूम पड़ती होगी। राधा ! यह मेरा हक है कि मैं इस अड़चन के बारे में कुछ जानूँ और तुम्हें भी निराश होने से पहले मुझे वह बात बतानी चाहिए थी। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा—अब भी बता दो कि हमारा ब्याह क्यों नहीं हो सकता ?'

राधा कुछ देर चुप रही। उसके मन में एक ज्वार-सा आया हुआ था और वह समझ नहीं पा रही थी कि कैसे अपनी बात कहे। प्राण उसके पीछे खड़ा था। उसे उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था, परन्तु वह राधा का स्वर सुनने के लिए व्याकुल हो रहा जा—आखिरकार उसे राधा का स्वर सुनाई दिया—'प्राण बाबू, हमारा ब्याह नहीं हो सकता····क्योंकि मैं····मैं विधवा हूँ।'

यह सुनकर प्राण एक कदम पीछे हट गया। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसे लगा जैसे राधा उससे मजाक कर रही हो। किसी विधवा से भी ब्याह करने में भी उसे कोई आपत्ति नहीं, परन्तु यह कैसे सम्भव हो सकता था कि राधा जो अभी केवल उन्नीस वर्ष की हुई थी विधवा भी हो चुकी। कई वर्षों से तो वह युनिवर्सिटी में ही पढ़ रही थी। आखिर कब उसका ब्याह हुआ, कब उसका पति मरा·· और सबसे बड़ी बात यह है कि राधा ने पहले तो इसकी ओर कभी संकेत तक नहीं किया। चुनाँचे उसने यही प्रश्न किया—'तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ?'

इस पर राधा सिसकियाँ भरने लगी—'मुझे खुद ही कहाँ मालूम था कि मैं विधवा हूँ····मुझे इस बात का ज्ञान होता तो मैं अवश्य आपको बता देती।'

प्राण को यह स्थिति बड़ी अजीब-सी लगी। वह आश्चर्य-भरे स्वर में बोली—'तो तुम यह कहना चाहती हो कि तुम्हें यह भी मालूम नहीं कि तुम्हारा ब्याह कब हुआ, और कब तुम्हारा पति परलोक को सिधारा ?'

'हाँ, मैंने तो उस पति की शकल तक नहीं देखी। पिताजी ने बताया कि उस समय मैं तीन वर्ष की थी जब उनके एक बहुत ही घनिष्ठ मित्र ने अपने आठ वर्ष के लड़के से शादी कर दी। एक ही वर्ष बाद वह मर गया····और मैं विधवा हो गई।'

प्राण को यह कहानी सुनकर दुःख भी हुआ और हँसी भी आई—'इससे क्या फर्क पड़ता है राधा····अच्छा तुम विधवा हो तो मुझे विधवा से शादी करने में कोई आपत्ति नहीं ···मैं तो समझे बैठा था कि कहीं पिता जी ने कोई और एतराज न उठाया हो, वह मेरे बारे में कोई और बात सोच सकते थे····?'

'नहीं-नहीं··· ऐसी कोई बात नहीं। आप पिता जी को बहुत पसन्द आये··· लेकिन ···?'

'लेकिन कुछ नहीं मैं, कल ही पिता जी से मिल लूँगा और उनसे कह दूँगा कि मुझे राधा के विधवा होने पर कोई आपत्ति नहीं है। इसलिए वह हमें आशीर्वाद दें ताकि हम अपने नए जीवन का आरम्भ कर सकें।'

यह कहकर प्राण ने राधा के बाज़ू पर हाथ रक्खा—'तुमने तो यूँ ही बात का बतंगड़ बना दिया चलो, चलो।'

राधा अपनी जगह से नहीं हटी और बोली—'नहीं प्राण बाबू! अब ब्याह नहीं हो सकता।'

'अजीब बातें करती हो····मैं उन्हें समझा लूँगा।'

'आप उन्हें समझा भी लें तो भी यह ब्याह नहीं हो सकता।'

'फिर हमें रोकने वाला कौन होगा ?'

'कोई नहीं।'

'तुमने मुझे चक्कर में डाल दिया है – मुझे तुम्हारे विधवा होने में कोई आपत्ति नहीं····पिता जी को मैं समझा लूँगा !'

राधा ने धीरे से प्राण का हाथ अपने बाजू से हटाते हुए, बिना उसकी ओर देखे कहा –'मैं यह शादी नहीं करूँगी ।'

प्राण ने आश्चर्य में आ चिल्लाकर पूछा –'तुम शादी नहीं करोगी···· मुझसे ?'

'जी हाँ ।'

'कारण ?'

'इसलिए कि मेरा ब्याह हो चुका है । माना कि मेरा पति इस संसार में नहीं है, फिर भी मैं दूसरी शादी करना उचित नहीं समझती ।'

'यह क्या कहती हो राधा ? पढ़ी-लिखी लड़की होकर अब भी तुम्हारा इन ढकोसलों में विश्वास है ? आखिर तुम मुझे भी तो अपना पति स्वीकार कर चुकी हो ।'

अब राधा ने घूम कर प्राण को आँखो में आँखें डाल दीं और दृढ़ स्वर में बोली—'वह मेरी अज्ञानता थी, मेरी भूल थी, इसके लिए मैं क्षमा चाहती हूँ···परन्तु एक हिन्दू लड़की केवल एक बार ही शादी करती है । यह ढकोसला नहीं है, बल्कि इसी में हिन्दू स्त्री की पवित्रता है और इसी में उसकी महानता है हो सकता कि आप मुझे बहुत बुरा समझें, मुझे धोखेबाज कहें । परन्तु मैं आपसे हाथ जोड़ कर यही कहूँगी कि आप मुझे भूल जायं । यह मेरा अन्तिम फैसला है कि मैं न आपसे और न किसी और से शादी करूँगी । मैं अपनी खुशी से एक विधवा का जीवन व्यतीत करूँगी ।'

चार...

ऊपर वाली घटना को घटे सात-आठ दिन गुजर गए। इतने दिन राधा ने कैसे व्यतीत किये यह केवल वही जानती थी। उसकी वही दशा थी जो उस मछली की होती है जिसे पानी में से निकालकर रेत पर फेंक दिया जाय।

इतने दिनों में न तो उसकी प्राण से मुलाकात हुई यानी न वह इसके पास आया और न यह उसके पास गई। वही उनकी अन्तिम मुलाकात थी जिसमें राधा ने कह दिया था कि वह न तो भविष्य में प्राण से मुलाकात कर सकेगी और न वह यह चाहती थी कि प्राण उससे मिलने की चेष्टा करे।

राधा को अब तक प्राण का दुःख-भरा चेहरा याद था। वह एकदम ही चकरा गया था क्योंकि वह हर प्रकार से राधा का साथ देने को तैयार था, चाहे राधा में कैसी भी त्रुटियाँ क्यों न हों। वह एक कदम भी पीछे हटाने वाला नहीं था। इस चीज का अनुभव करके राधा का मन और ज्यादा दुःखी होता था क्योंकि एक दृष्टि से देखा जाय तो वह प्राण को धोखा दे रही थी। वह इस बात को समझती थी। परन्तु उसका अपना दृष्टिकोण यही था कि एक बार शादी हो जाने के बाद वह इतनी पवित्र नहीं रह गई थी कि वह प्राण से शादी कर सके। परमात्मा और शास्त्रों की नजर में वह किसी की पत्नी बन चुकी थी। जब हिन्दू लड़की एक बार किसी की पत्नी बन गई तो भला वह दूसरी बार किसी की पत्नी कैसे बन सकती है। राधा यह महसूस करती थी कि अगर उसने प्राण से शादी कर भी ली तो सारी उम्र वह अपने आपको माफ कर नहीं

सकेगी। वह यही महसूस करती रहेगी कि उसने प्राण को धोखा दिया है। भगवान को धोखा दिया है। यहाँ तक कि अपनी आत्मा से भी धोखेबाजी की है। वह जानती थी कि प्राण का मन साफ है, लेकिन वह यह भी जानती थी कि उसका अपना मन सदा ही व्याकुल रहेगा। वह यही सोचेगी कि उसने दो पुरुषों से शादी करके दोनों को धोखा दिया····न वह इसकी पत्नी थी और न उसकी—वह केवल कलंकिनी थी। धर्म की बातें करना आसान है, उसके अनुसार जीवन व्यतीत करना अंगारों पर चलना है। परन्तु राधा उसी मिट्टी की बनी हुई थी जिस मिट्टी की भारत की शुद्ध नारियाँ बनी होती हैं। वह सीता और सती सावित्री की स्थापित की हुई परम्पराओं में पली और बड़ी हुई—और इन्हीं परम्पराओं के अनुसार वह अपना जीवन भी व्यतीत करना चाहती थी। सत्य के मार्ग पर बड़ी से बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। रास्ते में बड़े-बड़े पहाड़ पड़ते हैं जिन्हें सत्य के मुसाफिर को पार करना पड़ता है। राधा के जीवन की यह पहली कठिनाई थी, पहली परीक्षा थी। प्राण का इस तरह त्याग करते हुए उसके शरीर का एक-एक अंग जल उठा था। वह रात के अँधेरे में तड़प-तड़प कर भगवान से प्रार्थना करती थी - 'हे भगवान! मुझे शक्ति दो ताकि मैं शास्त्रों के बनाए हुए नियमों तथा सीता और सती सावित्री की बनाई हुई परम्पराओं को अपने सम्मुख रखते हुए और सत् के मार्ग पर चलती हुई, आपके चरणों में पहुँच जाऊँ।'

कितने लम्बे समय से वह हर रोज प्राण से मिलती आई थी। अब इतने दिनों से वह उसे दिखाई नहीं दिया था। इसने खुद ही उसे आने से मना कर दिया था। प्राण पढ़ा-लिखा और समझदार युवक था। इतने दिनों में वह यह भी जान गया था कि राधा किस प्रकार की लड़की है। जब उसने अन्तिम मुलाकात के समय यह बात अच्छी तरह समझ ली कि राधा अपने धर्म में पीछे नहीं और अपने लिए जो उसने दृढ़ कर लिया है उसे नहीं छोड़ेगी। वह समझ गया उन दोनों का देखा

हुआ स्वप्न पूरा नहीं हो सकता। उसे इस बात का भी ज्ञान था कि चाहे वह कितनी बार भी राधा से मिले, अव्वल तो वह मिलने की नहीं—यदि मिल भी गई तो अपना रास्ता अब नहीं छोड़ेगी····चुनाँचे वह भी अपनी जगह तड़पता रहा, परन्तु वह राधा के पास नहीं आया।

पाँच...

दो सप्ताह गुजर गए, अब भी प्राण और राधा की मुलाकात नहीं हुई। राधा को महसूस होता था कि उसके हृदय की गहराइयों में एक ऐसा जख्म बन गया है जो अब उम्र भर ठीक नहीं हो सकता। अनजाने में उसने प्राण को अपना बना लिया था और अब उसे अपने आपसे अलग करना ऐसे ही था जैसे किसी के अंग को काट देना। शरीर का अंग कट जाय, तो उसका जख्म भी भर सकता है, परन्तु जब दिल ही कट जाय तो उसका जख्म कभी नहीं भर सकता। वह यह भी जानती थी कि अब उसे इसी जख्म के साथ जीना होगा, इसी जख्म के दर्द को सहना होगा। न मुँह से चीख निकालनी होगी और न उफ करनी होगी।

धीरे-धीरे उसने अपने मन पर काबू पाया और यह निश्चय किया कि अब उसे यह नगर छोड़ ही देना चाहिए। चुनाँचे एक रोज वह सफेद वस्त्र पहन कर और सुबह की चाय लेकर पिता जी के पास गई। जब वह चायदानी से प्याले में चाय डाल रही थी तो उसके पिता जी उसके हाथों की ओर देख रहे थे। उसके सफेद वस्त्रों की ओर देख रहे थे। जब राधा ने चाय तैयार करके प्याला उनकी ओर बढ़ाया तो उन्होंने पूछा—'राधा ! आज तुम्हें सफेद वस्त्रों में देख रहा हूँ ?'

राधा ने आँखें झुका लीं। वह देवी-सी लग रही थी। उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया—'एक विधवा के कपड़े सफेद ही तो होने चाहिए।'

यह सुनकर पिता जी की आँखें डबडबा आईं, भर्राई हुई

हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ० प्र० ५८१८ इलाहाबाद

[illegible] बोले—'बेटी, तुम्हें इन कपड़ों में देखकर मेरा हृदय कराह उठा है।'

राधा कुछ नहीं बोली, चुपचाप अपनी गोद में दोनों हाथ रखे बैठी रही।

पिता जी ने फिर कहा—'प्राण नहीं मिला क्या ?'

'मैंने उन्हें मना कर दिया था।'

'क्या तुमने उसे सब कुछ बता दिया ?'

'जी।'

'तो उसने कुछ कहा ?'

'उन्होंने कहा कि तुम्हारे विधवा होने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं, न मुझे किसी के कहने-सुनने की फिक्र है····परन्तु अब यह बातें बेकार थीं क्योंकि में किसी और की पत्नी हो चुकी थी। इस जन्म में मैं केवल एक विधवा की हैसियत से रह सकती हूँ। यही शास्त्रों की आज्ञा है।'

यह सुनकर पिता जी ने सिर झुका लिया और वह भारी स्वर में बोले—'हाँ, राधा बेटी, मैंने ही तुम्हारी शादी की। मैंने ही तुम्हें इसके बारे में बताया। हमारे निकट के रिश्तेदार जानते हैं कि तुम एक विधवा हो। यहाँ किसी को तुम्हारी दूसरी शादी पसन्द नहीं आएगी····'

राधा ने मन्द लेकिन दृढ़ स्वर में कहा—'मैं यह सब कुछ समझती हूँ पिता जी।'

इतना सुनकर उसके पिता जी रो पड़े और बोले—'बेटी, मुझे तुम दोनों पर बहुत दया आती है। मैं इतने दिनों तक इसी विषय पर सोचता रहा हूँ। बेशक मैंने तुम्हें यह सब बातें बताईं और यह भी कहा कि तुम दोनों का विवाह नहीं हो सकता···फिर भी···इतने दिन सोचने के बाद में इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि तुम दोनों को एक दूसरे से अलग कर देना बड़े अन्याय की बात है। ठीक है तुम्हारी शादी हुई, किन्तु उस समय

तुम इतनी छोटी बच्ची थी कि तुम कुछ नहीं समझती थी कि यह सब कुछ क्या हो रहा है। वह लड़का तक नहीं जानता था कि पति क्या होता है और पत्नी क्या होती है। उसकी मृत्यु हो गई और वह इतना भी नहीं जानता था कि वह इस संसार में एक विधवा को छोड़े जा रहा है। यह भी ठीक है कि हमारी बिरादरी के लोग इस शादी को पक्की शादी मानते हैं और तुम्हें विधवा स्वीकार करते हैं। वे अब तुम्हारी दूसरी शादी पर एक बवंडर खड़ा कर देंगे, परन्तु····परन्तु····'

राधा बिल्कुल सीधी बैठी थी। पहले की तरह अपनी गोद में हाथ रखे हुए वह अपनी मोटी-मोटी आँखों से पिता जी की ओर देख रही थी। कुछ देर बाद वह बड़े संयत स्वर में बोली—'परन्तु क्या पिता जी ?'

'परन्तु यही कि मैं पढ़ा-लिखा हूँ, तुम दोनों मुझसे भी अधिक पढ़े-लिखे हो। क्या हम सब मिल-जुल कर इस स्थिति का मुकाबला नहीं कर सकते ? जबसे मैंने तुमसे यह बात कही तब से इस विषय पर सोच-सोच कर मेरे विचार कुछ बदल गए हैं। मैं कहता हूँ कि इस बचपन की शादी का महत्व ही क्या है। आखिर वह ऐसे ही तो शादी थी कि जिसका तुम्हें कुछ भी ज्ञान नहीं। तुम किसी मर्द के साथ उसकी पत्नी बन कर नहीं रही। तुम पढ़ी-लिखी, जवान हो गई, तुमने पूरी सोच-समझ के साथ अपना एक जीवन-साथी चुना····तो क्यों न तुम दोनों अपने देखे हुए स्वप्न को पूरा करो ? क्यों तुम दोनों एक गले-सड़े रिवाज के पीछे अपनी खुशियों का बलिदान देते हुए अपने जीवन बर्बाद करो ?—रही यह बात की बिरादरी वाले आपत्ति करेंगे, तो इसका उपाय यह है कि मेरा आशीर्वाद लेकर तुम दोनों किसी दूर के शहर में जा बसो और वहीं शादी कर लो।'

राधा मुँह से कुछ नहीं बोली। उसने इन्कार करते हुए अपना सिर हिला दिया, तब पिता जी जोर देते हुए बोले—'बेटी, यह भी तो

सोचो कि मेरे सिवा इस संसार में तुम्हारा कोई नहीं है। आखिर मेरे बाद तुम्हें सहारे की जरूरत होगी। प्राण एक अच्छा लड़का है, बल्कि हजारों में एक है। उसके साथ रह कर तुम्हारा जीवन सफल हो जायगा।'

अब एकाएक राधा उत्तेजित होकर उठ खड़ी हुई और बोली—'पिता जी! यह कोई पुराना टूटा-फूटा रिवाज नहीं, यही भारतीय नारी का धर्म है। धर्म के आगे सब खुशियाँ तुच्छ हैं। क्या भगवद्गीता में यह बात नहीं आई है कि अपना कर्त्तव्य पालन करना मनुष्य के लिए सबसे बड़ा धर्म है? रही सहारे की बात, तो जिसने भगवान का सहारा ले लिया उसे किसी और के सहारे की जरूरत ही क्या? मैं अपने आपको बेसहारा नहीं समझती, और न मैं किसी भी डर से अपना धर्म छोड़ने को तैयार हूँ।'

छः...

राधा ने एक दृढ़ निश्चय कर लिया था, उसने अपने लिए एक मार्ग चुन लिया था और अब वह अपने रास्ते से हटने को तैयार नहीं थी। उसने जब सारी परिस्थितियों पर अच्छी तरह सोच-विचार करके समझ-बूझ लिया कि जीवन में क्या करना और क्या न करना उसका धर्म और कर्त्तव्य है, तो फिर इधर-उधर की बातों में अपने मन को डाँवाडोल करने का क्या फायदा।

राधा के पिता जी अब यह भी सोचने लगे थे कि उन्होंने खामखा ही यह भेद राधा पर खोल दिया। थे तो वह भी पुराने विचारों के मानने वाले, और उन्होंने पहले से ही यह तय कर रखा था कि जब राधा सयानी हो जाएगी तो वह धीरे-धीरे उस पर यह भेद खोल देंगे ताकि उसे कोई निराशा न हो, परन्तु यह तो उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि राधा बड़ी होकर पढ़-लिख जायगी तो अपना जीवन-साथी चुन लेगी—और जब ऐसा ही हुआ तो उसके पिता जी भी घबरा गए। इसी घबराहट में उन्होंने वह बात कह दी। वह नहीं जानते थे कि राधा पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। जब उन्होंने देख लिया कि राधा तो सब कुछ त्यागने को तैयार हो गई, तो उन्होंने ठंडे दिल से इस समस्या के सभी पहलुओं को सोचा और उन्हें पता चला कि अपने धर्म और कर्त्तव्य करने की धुन में उन्होंने अपनी बेटी के जीवन की धारा ही मोड़ दी थी। यदि राधा ने अपना जीवन-साथी ही न चुना होता, तो शायद उनके मन में खलबली भी न होती। परन्तु अब जब उन्होंने देखा कि उनकी बेटी प्राण जैसे युवक के साथ अपना जीवन हँसी-खुशी व्यतीत कर सकती है और केवल उनके कहने पर वह इतना बड़ा त्याग और इतना बड़ा बलिदान करने को तैयार हो गई थी, तो उन्होंने महसूस किया कि

उन्होंने सचमुच ही बड़ी भयंकर भूल की। अब वह इस बात के लिए हाथ-पाँव मारने लगे कि उनकी बेटी उनकी कही बात को भूल जाय और जो प्रोग्राम वह प्राण के साथ मिलकर बना चुकी थी उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करे। लेकिन अब राधा अपने मन में एक ऐसा परिवर्तन ले आई थी कि अब फिर से नई बात सोचना या पुरानी बात पर ध्यान देना उसके लिए असम्भव था।

अब राधा के पिता जी के सामने बेटी के जीवन की बीसियों ऐसी समस्याएँ आ खड़ी हुई थीं जिनका समाधान इसके सिवा और कुछ नहीं था, कि वह अपने चुने हुए युवक से विवाह कर ले। हालाँकि पिछली बातचीत से यह सिद्ध हो चुका था कि अब राधा को अपने रास्ते से हटाना असम्भव था, फिर उसके पिता जी ने तीन-चार दिन के बाद नये सिरे से बात का आरम्भ किया। इस समय बाप-बेटी अपने टूटे-फूटे बाग में टहल रहे थे, जभी पिता ने पूछा—'बेटी, अब तुमने क्या तय किया है?'

'किसके बारे में?'

'अपने ही बारे में।'

'अब तो मेरा तप और त्याग का ही मार्ग होगा।'

पिता जी के दिल की पीड़ा होठों पर हँसी की ऐंठन बिखेर गई। वे गम्भीर होकर बोले—'बेटी! तप और त्याग बहुत बड़े शब्द हैं। यह शब्द मुँह से कहना आसान है, परन्तु उन पर आचरण करना अति कठिन है।'

'पिता जी, यूँ लगता है जैसे आप मुझे डराना चाहते हैं....'

'नहीं-नहीं, यह बात नहीं, मैं तो केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि अभी तुम छोटी उम्र की लड़की हो, संसार का ऊँच-नीच तुमने देखा नहीं, इसलिए न जाने भविष्य में क्या हो।'

'पिता जी, मैं तो केवल इतना जानती हूँ कि यदि मनुष्य अपने कर्त्तव्य को पहचान ले और अपने धर्म को समझ ले तो कोई कारण नहीं कि वह अपने मार्ग से भटक जाय।'

'फिर भी मैं जानना चाहूँगा, कि तुम अपने जीवन के दिन कैसे व्यतीत करना चाहती हो ?'

'मैं स्त्री-जाति की सेवा करूँगी। मैं स्वयं पढ़ी-लिखी हूँ इसलिए अपने देश की अनगिनत अनपढ़ लड़कियों और अनपढ़ स्त्रियों के जीवन में ज्ञान का दीप जलाऊँगी, उनके जीवन का नव-निर्माण करूँगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस दीप के प्रकाश से उनके जीवन में एक नया सुख और नई शान्ति आएगी।'

'यह विचार तो बहुत अच्छे हैं····परन्तु बेटी ! यह सब कार्य तो दूसरे तरीके से भी पूरे हो सकते हैं।'

'दूसरा तरीका कौन-सा ?'

इस पर पिता जी कुछ हिचकिचाए और फिर कह ही दिया—'मेरा अर्थ है कि यदि तुम प्राण से विवाह कर लो, तो तुम दोनों मिल कर इस कार्य को और अच्छी तरह कर सकते हो।'

'पिता जी, बड़े आश्चर्य की बात है कि आप ही ने मुझे बताया कि मैं विधवा हूँ और मेरी शादी नहीं हो सकती, परन्तु अब आप ही मुझे मेरे धर्म और कर्त्तव्य के रास्ते से हटा देना चाहते हैं !'

'बेटी, मैं यह महसूस करने लगा हूँ कि मैंने बहुत जल्दबाजी से काम लिया है—तुमने अपना जीवन-साथी चुन न लिया होता, तो मुझे कुछ कहने की····'

'नहीं पिता जी, आप इस बात की चिन्ता बिल्कुल ही न कीजिए। जो बीत चुकी सो बीत चुकी। बीती बातों के बारे में कृपया आप कभी कुछ न कहें। अब तो आप मुझे शीघ्र ही अपने गाँव को ले चलें, ताकि मैं अपने कार्य का आरम्भ कर सकूँ।'

यह सुन कर पिता जी कुछ देर के लिए मौन हो गए, परन्तु मन में समझ गए कि अब राधा ने जो फैसला कर लिया है उसे बदला नहीं जा सकता।

———

सात...

धीरे-धीरे राधा का यह निर्णय असलियत के रूप में आ गया। लगता था कि जैसे प्राण उसके जीवन से बिल्कुल ही बाहर चला गया हो। दरअसल प्राण केवल उसके जीवन से ही नहीं, बल्कि उस नगर ही से चला गया। उसके मन को जो यह सदमा पहुँचा तो वह एक प्रकार से चकरा गया, लड़खड़ा गया। वह इस धक्के के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। विशेषकर राधा जैसी लड़की से इस किस्म के व्यवहार की उसने कल्पना तक न की थी। यह ठीक है कि राधा ने उसे उसके जीवन का सबसे बड़ा धक्का पहुँचाया था, उसका ऐसा समझना स्वाभाविक ही था। एम० ए० तक पढ़ी-लिखी आधुनिक लड़की का यह आचरण उसकी समझ में न आना एकदम स्वाभाविक ही था। मगर फिर भी वह राधा को बहुत नजदीक से, अच्छी तरह पहचान चुका था। वह यह भी समझता था कि मुझसे कहीं अधिक गहरा आघात राधा को पहुँचा होगा। काश, उसे पहले ही मालूम होता कि वह उस कुम्हलाए पौधे के समान है जिस पर बहार आई तो उसे 'बहार' का पता ही न था और जब कुछ समझने का समय आया तो बहार फिर न आई, अभागिन हिन्दू-विधवा।....वह जानता था कि राधा के मन में एक गहरी पवित्रता थी, उसी पवित्रता को बचाने के लिए उसने अपना रास्ता ही बदल डाला था। वह समझती थी कि प्राण से शादी करके वह उसे निश्छल निर्मल प्यार नहीं दे पाएगी इसीलिये उसने यही उचित समझा कि वह प्राण के जीवन में से निकल जाए।

इन्हीं सब कारणों से प्राण के लिए उस शहर में रहना दूभर हो गया। यदि राधा ने किसी और का घर बसा लिया होता तो शायद

प्राण को शहर न छोड़ना पड़ता। मगर उन्नीस वर्ष की कुमारी विधवा उसी के सामने रेगिस्तान की वीरान सफर-सी जिन्दगी एकाकी काट जाय—यह वह सुन-देख नहीं सकता था। न चाहते भी उसे राधा व उसके शहर से दूर, बहुत दूर जाना पड़ा।

बेटी के मशविरे से बाप ने शहर का यह मकान बेच डाला और अपने गाँव हरियामा को चले गए। वहाँ भी उनका एक छोटा-सा मकान और गाँव के बाहर कुछ खेत भी था।

वह संध्या के समय गाँव में पहुँचे। सीधे अपने मकान में जा घुसे। शहर के मकान का ऐसा सामान जिसकी गाँव में कोई आवश्यकता नहीं हो सकती थी उन्होंने बेच डाला था, केवल जरूरी सामान—बर्तन, कपड़े, बिस्तर आदि वह अपने साथ ले आए थे। शहर में बिजली थी और यहाँ बिजली का नाम तक नहीं था। उन्होंने पूरा सामान कोठरी में बन्द कर दिया और यह तय किया कि दूसरे दिन सुबह सारा सामान ठिकाने से रखेंगे।

दूसरी कोठरी में राधा ने मिट्टी के तेल का लैम्प जलाया जो वे शहर से लेते आए थे। पिता जी तो इस सफर से काफी थक गए थे। चुनाँचे वह कोठरी में रखी एक चारपाई पर लेट गए, पर नींद नहीं आ रही थी। जब राधा लैम्प जला रही थी, तो वह एक टक बेटी की ओर देखे जा रहे थे। बत्ती को ऊपर-नीचे करके राधा ने चिमनी जमाई और उसी क्षण उसकी नजर पिता जी पर पड़ी जिन्हें अपनी ओर देखते पाकर उसने पूछा—'क्या देख रहे हैं····पिता जी!'

क्या देख रहे थे पिता जी···यह तो पिता जी ने सोचा ही नहीं था। उनके मन में उस समय कोई एक विचार नहीं था, बल्कि कई विचार एक-दूसरे में उलझे हुए थे। बेटी का प्रश्न सुन कर वह फीकी हँसी हँस कर बोले—'नहीं बेटी, कोई खास बात तो नहीं···यह ठीक है कि मैं तुम्हारी ओर देख रहा था, परन्तु मेरे विचार तुम्हारी छाया में पड़े तुम्हारे भविष्य में इधर-उधर भटक रहे थे।'

राधा ने मुस्करा कर कहा—'आपके विचार भले ही इधर-उधर भटक रहे हों, परन्तु अपने बारे में तो मुझे यूँ लगता है जैसे मेरे भटकते हुए विचार स्थिर हो गए हों और मेरे जीवन का एक नया आदर्श जन्म ले रहा हो।'

वास्तव में राधा के पिता जी उसके विचारों को जानने की कोशिश में थे। लैम्प की मद्धिम रोशनी में अपनी जवान बेटी का चेहरा देख कर वह यही सोच रहे थे कि क्या जवानी की उमंगों से भरी राधा इस नए प्रकार के साधारण जीवन को सफलता के साथ व्यतीत कर सकेगी? उनके मन में यह विचार भी आया कि राधा को उसके वैधव्य की सूचना देकर उन्होंने पाप तो नहीं किया था? उनकी बेटी अपने प्रोग्राम के अनुसार एक बहुत सफल वैवाहिक जीवन व्यतीत करने जा रही थी। परन्तु उन्होंने ही उसमें बाधा डाली····और यदि राधा इस नए जीवन को सफल न बना सकी, तो इसका सारा पाप उन्हीं को चढ़ेगा—अब भी उनके मन की गहराइयों में यही इच्छा जड़ जमाए हुए थी कि राधा अब भी मान जाए, तो वह प्राण से इसकी शादी करके उन्हें कहीं दूर भेज दें।····परन्तु वह जानते थे कि अब राधा के आगे इस प्रकार का सुझाव रखना बिल्कुल ही बेकार था क्योंकि इस तरह राधा का मन खराब होगा। उसके दिल को बात बुरी लगेगी।

उन्होंने समझा राधा पढ़ी-लिखी और समझदार लड़की थी। उसे बिल्कुल साफ दिखाई दे रहा था कि उसके पिता जी गहरे विचारों में डूबे हुए थे। पिता जी ने इस बात को भाँप लिया और बात बनाने के लिए फिर हँसे और बोले—'बेटी, मुझे बड़ा अजीब-सा लग रहा है!···· देखो, चारों ओर मौन छाया है, दूर से कभी-कभी कोई आवाज सुनाई दे जाती है···क्या तुम्हें अजीब-सा नहीं लग रहा है?'

'जी हाँ, लग तो रहा है परन्तु शहर और गाँव के वातावरण में इतना अन्तर तो होता ही है।'

'तुम तो जानती ही हो कि मैं अपने जीवन का काफी बड़ा भाग

शहर के वातावरण में व्यतीत कर चुका हूँ। इसीलिए हो सकता है कि दो-चार दिन मुझे यह सब अनोखा-सा लगे, परन्तु मैं तो शीघ्र ही इस वातावरण में घुल-मिल जाऊँगा !—मुझे फिक्र तो तुम्हारी लगी है कि आखिर तुम शहर की लड़की हो, शहर में पढ़ी-लिखी, वहीं बढ़ी और बड़ी हुई....'

राधा ने बीच में ही बात काट कर कहा—'पिता जी, आप मेरी फिक्र बिल्कुल मत करें, मुझे कोई कष्ट नहीं होने का ! यह ठीक है कि मैं शहर के वातावरण में पली हूँ, परन्तु मैंने अपने आपको देहात के वातावरण के लिए तैयार कर रखा है। मुझे कोई उलझन नहीं हो सकती। मुझे अपना रास्ता बिल्कुल सीधा और आलोकित दिखाई दे रहा है।'

उसके पिता जी यह बात सुनकर चुप तो हो गए, परन्तु उनके मन का सन्देह बना रहा। वह जानते थे कि इस उम्र में ऐसी बातें कह देना आसान होता है, परन्तु इन पर अमल करना उतना आसान नहीं होता !—फिर भी उनका मन शान्त था, क्योंकि वह देख रहे थे कि राधा ने अपने मन से ही एक निर्णय किया है और वह जीवन में एक नया तजुरबा करना चाहती है, तो इसमें उन्हें कोई आपत्ति करने की जरूरत नहीं। कल को यदि वह असफल भी रहे तो वह उन पर दोष नहीं धर सकती थी। असफल हो जाने पर निराशा की कोई बात नहीं थी क्योंकि वह फिर एक बार राधा पर इस बात का जोर दे सकते थे कि वह प्राण से शादी कर ले। प्राण को देखकर ही उन्होंने उसके गांभीर्य और दृढ़ चरित्र का अनुमान कर लिया था। वे राधा और प्राण की प्रकृति में कोई भेद नहीं समझ पा रहे थे। प्राण जिस खामोशी से इस गहरे सदमे को पी गया था—उसी से उनको विश्वास हो गया था कि प्राण राधा की प्रतीक्षा करेगा।

लैम्प जलाने के बाद राधा दूसरे छोटे-मोटे काम करने लगी। वे लोग खाना शहर ही से लेते आए थे, ताकि रात के समय खाना पकाने

का झंझट न करना पड़े। जब राधा छोटे-मोटे सामान को ठिकाने लगा कर बिस्तर बिछा चुकी, तो वे खाना खाने बैठे। उनके मकान के सामने अपनी ही जमीन में एक छोटा-सा कुआँ था, जहाँ से गाँव के लोग अक्सर पानी भरा करते थे। राधा छोटी बाल्टी में पानी भर ले आई। पानी ताजा, ठण्डा और मीठा था। खाना खाते-खाते राधा ने पानी पिया तो बोली—'देखिए, जो मजा इस पानी में है वह शहर के नल वाले पानी में कहाँ ?'

पिता जी मन में समझ रहे थे राधा इस प्रकार की बातें इसी कारण से कर रही थी कि वह समझें कि उसका मन गाँव में लग गया है। यहाँ की हर वस्तु उसे अच्छी लग रही थी, परन्तु उन्होंने यह बात बेटी से कही नहीं। हाँ में हाँ मिलाते हुए बोले—'ठीक कहती हो बेटी····बेशक शहर चमक-दमक में गाँव से अच्छा है। परन्तु देहात की भी अपनी छबि होती है जो शहर में किसी भी कीमत पर नहीं मिल सकती····'

बात यहीं तक पहुँची कि सेहन में से आवाज आई—'अजी आत्माराम जी ! हम आ जायँ भीतर ?'

राधा के पिता जी ने सिर उठा कर देखा तो आवाज जानी-पहचानी मालूम होती थी, परन्तु मद्धिम प्रकाश में आने वाले की शकल जल्दी में पहचानी नहीं गई। आने वाला फिर बोला—'अजी मैं बिरजू हूँ, बिरजू।'

'आह-हा !··· आइये पंडित जी····भीतर चले आइए।'

पंडित बिरजू भीतर आते हुए बोले—'गली में से गुजर रहा था कि इतने में ही आपके घर में प्रकाश दिखाई दिया। यूँ यहाँ इस बात की खबर फैली हुई थी कि आप आने वाले हैं··· परन्तु आज जब मैंने घर में प्रकाश देखा तो समझ गया कि आप आ ही पहुँचे हैं।'

राधा के पिता जी ने दूसरी चारपाई की ओर हाथ से इशारा करते

हुए कहा—'पधारिए पधारिए····क्या आपको इस बात का विश्वास नहीं था कि हम आजायेंगे ?'

'अजी अब विश्वास की बात क्या कहूँ, यह तो सोचने की बात है कि शहर का जीवन छोड़कर गाँव में आना बहुत ही कठिन है। इसी लिए तो सोचता रहा कि आप कैसे इतने लम्बे समय तक शहर में जीवन व्यतीत करने के बाद यहाँ रह सकेंगे !'

राधा के पिता जी ने उत्तर दिया —'आप तो ठीक ही कहते हैं। मैं तो शायद न आता, लेकिन जब बेटी राधा ने एम० ए० की परीक्षा पास कर ली तो उसी ने इस बात पर जोर दिया कि चलिए अपने गाँव में चलकर रहें —देखो बेटी राधा ! यह हैं हमारे गाँव के पंडित जी।···· पंडित बिरजू और हम छोटपन में साथ-साथ खेला करते थे। तुम इन्हें नहीं पहचानती, परन्तु मैं अपने बचपन के साथी को कैसे भूल सकता ···'

राधा ने दोनों हाथ जोड़ कर पंडित बिरजू को नमस्कार किया था। पंडित जी ने कहा – 'जीती रहो बेटी।'

फिर पंडित जी उसके पिता जी की ओर देखते हुए बोले—अच्छा अब इरादा क्या है ? यहाँ कुछ दिन हवा-पानी बदलने के लिए आए हैं या सदा के लिए रहने ?'

'अब तो सदा के लिए यहीं रहने का इरादा है।'

'शहर में आपका मकान-वकान भी तो था न ?'

'जी हाँ, था तो परन्तु अब हमने सब बेच डाला है क्योंकि जब रहना ही यहीं है तो फिर शहर का क्या करते !'

'यह अच्छा किया आपने····नहीं तो आपका मन शहर के मकान में लगा रहता। अब तो आप आपने गाँव में जीवन भर ही रहेंगे !'

'जी हाँ, बिल्कुल यहीं रहने का निश्चय किया है।····यह बात भी तो है कि बेटी राधा ने समाज की सेवा करने को ही अपना लक्ष्य बना रखा है।'

यह सुनकर पंडित जी ने एक नजर राधा पर डाली और फिर गम्भीर स्वर में बोले,—'बहुत अच्छे विचार हैं बेटी राधा के।····करेगी क्या बेचारी विधवा जो ठहरी।'

राधा ने पंडित जी के यह शब्द सुने तो उसे यूँ लगा जैसे उसके हृदय पर किसी ने जोर का घूँसा मार दिया हो। वह स्वयं जानती थी कि वह विधवा थी, परन्तु उसे यह मालूम करके एक धक्का-सा लगा कि गाँव के लोग इस बात को भूले नहीं थे····वह उसे विधवा ही समझते थे। विधवा होने में कितनी मजबूरी थी? यूँ लगता था जैसे विधवा किसी और ही प्रकार की स्त्री हो····अभागिन·· सब तरह से दीन-हीन····'

अपनी धुन में पंडित जी यह भी कह गए—'यह तो पिछले जन्म के कर्मों की बात है—जो जैसी किस्मत लेकर आया है वैसे ही उसे भोगना भी पड़ता है।'

पंडित जी की इस बात से राधा के मन को एक दूसरी चोट लगी। अनायास ही उसके मन में यह विचार आ गए कि क्या गाँव में ऐसा ही व्यवहार किया जाता है? क्या विधवा होने में कोई गिरावट की बात थी? क्या दिन-रात गाँव के छोटे-बड़े उसके बारे में ऐसी ही बातें सोचा करेंगे? क्या उसे गाँव वालों का वह सहयोग नहीं मिल सकेगा जिसकी आशा लेकर वह वहाँ आई थी?

पंडित जी तो चले गए, परन्तु बिस्तर पर लेटे-लेटे राधा के दिमाग में ऐसे ही विचार चक्कर लगाते रहे। कमरे में अँधेरा था, पिता जी सो गए थे। उनकी खरखराती हुई आवाज सुनाई दे रही थी। अपने भविष्य की कल्पना करके उस अँधेरे में राधा का मन घबराने लगा, साँस घुटने लगी। एक बार फिर प्राण का चेहरा उसके सामने उभर आया। वह चेहरा पीला पड़ गया था। उदास था और निराश था। एकाएक ही दोनों की आँखें मिलीं, तो राधा की आँखें भर आईं। न जाने

क्यों वह सिसकियाँ भर-भर कर रोने लगी। इतने दिनों की दृढ़ता के बाद एकाएक ही उसका मन डोल गया। उसने अपने आप से प्रश्न किया कि राधा! तू अपनी आशाओं और प्राण की उमंगों का इतना बड़ा बलिदान देकर कहाँ जा रही है? किस अँधेरी गुफा की ओर बढ़ रही है?—एक बार तो वह इतना घबरा गई कि उसने सोचा कि सुबह होते ही वह पिता जी से कहेगी कि चलिए वापस लौट चलें। वह जानती थी कि इस बात से पिता जी खुश होंगे, वह बुरा नहीं मानेंगे।

आठ...

रात-भर राधा लेटी तो रही, परन्तु उसे नींद नहीं आई। अगर आँखें लगीं भी तो अनजाने और भयंकर सपने दिखाई देते रहे। एक-दो बार तो वह चौंक कर बैठ भी गई। उसे अपने चारों ओर का अँधेरा बहुत ही भयंकर-सा दिखाई देता। वह जल्दी से आँखें बन्द कर लेती और कुछ ही समय बाद थकान के कारण उसे फिर नींद आ जाती। असली नींद तीन बजे के निकट आई। और जब वह इस नींद से जागी तो उसने देखा कि दिन चढ़ा हुआ था, हर ओर प्रकाश फैला हुआ था। कुछ चिड़ियाँ कोठरी के अन्दर चहचहा रही थीं। चूँकि उनका मकान गाँव के एक किनारे पर था इसीलिए खेतों और पेड़ों पर गाने वाली चिड़ियों की आवाजें भी उसके कानों तक पहुँच रही थीं। इन्हीं मधुर आवाजों के साथ मन्दिर में बजने वाली घंटियों की आवाज भी घुल-मिल गई थी। घंटियों की आवाज ने राधा के मन पर एक प्रभाव डाला। यह आवाजें उसे जानी-पहचानी-सी लगीं। न-जाने कब वर्षों पहले उसने यह आवाजें सुनी थीं, परन्तु अब इतने लम्बे समय तक गाँव से दूर रहने के बाद उसने फिर से वही आवाजें सुनीं तो न-जाने कैसी सोई हुई भावनाएँ उसके मन में जाग उठीं। वह उन भावनाओं के बारे में कुछ कह नहीं सकती थी। वह केवल इतना महसूस करती थी कि यह आवाजें उसे बचपन के दिनों की याद दिला रही थीं। केवल यही नहीं, बल्कि घंटियों की यह आवाजें उसे एक नई मंजिल की ओर चलने की प्रेरणा भी दे रही थीं।

रात को सोते समय निराशा की जो काली घटाएँ उसके मन पर छा गई थीं, अब वे छँटती दिखाई देती थीं। उसे अभी तक ठीक ढंग से इस बात

का पता नहीं लग सका था कि वह अपने इस गाँव में अपनी योजना किस प्रकार चला सकेगी। परन्तु क्या इतना काफी नहीं था कि उसके मन में एक लगन थी और इस उत्साह के बूते पर वह बहुत कुछ कर सकती थी। यह ठीक है कि पहले उसे अपने गाँव और गाँव वालों से परिचित होना पड़ेगा फिर उसे अपनी योजना गाँव वालों के सम्मुख रखनी होगी। चाहे वह पहले से ही उन्हें सब कुछ नहीं बताए, परन्तु धीरे-धीरे वह उन्हें सब कुछ बता देगी, सब कुछ सिखा देगी और उनको वह अपने बनाए हुए मार्ग पर ले जाएगी। इस कार्य में वह कहाँ तक सफल होगी ?....यह तो वह स्वयं भी नहीं जानती थी। परन्तु जैसा कि भगवद्गीता में कृष्ण भगवान ने शिक्षा दी है कि मनुष्य को अपने धर्म और कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए, फल पर दृष्टि नहीं रखनी चाहिए। महात्मा गाँधी भी कहा करते थे कि जब कभी मैं किसी उलझन या कष्ट में पड़ जाता हूँ तो भगवद्गीता का सहारा ही लेता हूँ !....जब भगवान कृष्ण की भक्ति से ऐसे महापुरुष उत्साह पाते थे, तो वह भी तो ऐसा कर सकती थी। उसने इस बात को भी समझ लेने की चेष्टा की कि आने वाले दिनों में उसे बीती बातों की याद सताएगी, उसके रास्ते में और भी कई कठिनाइयाँ आयेंगी, हो सकता है कि स्वयं गाँव वाले उसके रास्ते में कई अड़चनें डालें, लेकिन उसने तो अब भगवान का सहारा ले ही लिया था। उसे पूर्ण विश्वास था कि जब उसी का हृदय शुद्ध है, तो सारी कठिनाइयों और अड़चनों के होते हुए भी वह अपनी मंजिल तक पहुँच जायगी।

राधा ने एक बार आँखें खोल कर फिर बन्द कर लीं। परन्तु वह सोई नहीं थी....वह तो केवल चिड़ियों के गीतों और मंदिर की सुरीली घंटियों का आनन्द ले रही थी। इतने में ही उसे पिता जी के खाँसने की आवाज सुनाई दी। वह चौंकी क्योंकि सुबह के समय उसके पिता छोटी इलायची, तुलसी और मुलेठी आदि चीजों की मिली-जुली चाय पिया करते थे। प्रतिदिन तो वह अधिक प्रकाश फैलने से पहले ही पिता

जी तक ऐसी चाय तैयार करके पहुँचा देती थी, परन्तु आज इतना दिन चढ़ आया था। आश्चर्य की बात तो यह थी कि पिता जी ने भी तो उसे आवाज देकर जगाया नहीं। शायद उन्होंने उसकी नींद खराब न करने के विचार से ही नहीं जगाया, हालाँकि उन्हें चाय की आवश्यकता तो महसूस हो रही होगी।

इस बात का ख्याल आते ही वह साड़ी का पल्लू सँभालती हुई उठी और चारपाई से पाँव लटका कर बैठ गई। वह इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि ज्यों ही वह अपने आपको चुस्त महसूस करे त्यों ही उठ खड़ी हो।

पिता जी ने अपने बिस्तर पर बैठे-बैठे पूछा—'जाग उठी बेटी ?'

उनके इस प्रश्न से राधा को झेंप-सी लगी, वह लड़खड़ाते शब्दों में बोली – 'जी पिता जी····न जाने आज इतनी देर तक कैसे सोई रही—पहले तो मेरी नींद खराब होती रही और फिर एकबारगी नींद आई तो इतनी गहरी कि अब तक आँख ही नहीं खुल पाई।'

पिता जी पुचकार कर बोले—'कोई बात नहीं बेटी,··· नई-नई जगह है। इसीलिए तो नींद आने में इतनी देर लगी। यदि रात-भर नींद उखड़ी रहे तो प्रभात की ठंडक में बड़ी गहरी और मीठी नींद आती है।'

'आपको चाय भी तो नहीं मिल सकी समय पर !'

'तो इससे क्या फर्क पड़ता है ? कुछ पहले न मिली तो बाद में मिल गई।'

राधा जानती थी कि सुबह की चाय उसके पिता जी के लिए कितनी आवश्यक थी। क्योंकि सुबह की चाय पीने से उनकी बलगम कुछ साफ हो जाती थी और छाती की जकड़न हलकी हो जाती थी, अन्यथा रात की फँसी हुई बलगम के कारण वह परेशान ही रहते थे।

इतने में ही राधा को सेहन में कुछ धुआँ-सा दिखाई दिया जो कोठरी की ओर भी चला आ रहा था। यूँ लगता था जैसे किसी ने चूल्हा जला दिया हो। राधा को आश्चर्य हुआ तो उसके पिता जी उसकी हैरानी को भाँपते हुए बोले—'बेटी, मैंने चूल्हा जला दिया है और उस पर चाय का पानी भी रख दिया है।'

राधा हड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई, बोली—'आपने इतना कष्ट क्यों किया पिता जी ?'—मेरे कारण ही आपको इतना कष्ट उठाना पड़ा।'

'नहीं बेटी, इसमें कष्ट की क्या बात है ? मैं इतना गया-गुजरा नहीं हूँ कि चूल्हा भी न जला सकूँ। मेरा रोग ऐसा तो नहीं है कि हिलने-डुलने से कोई परेशानी हो जाय। मेरे जैसे रोगी को तो थोड़ा बहुत चलना-फिरना और काम भी करना चाहिए। इससे मेरे स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा, बुरा नहीं।'

राधा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह उठ कर दरवाजे से निकली और सीधी चूल्हे के पास पहुँची। लकड़ियाँ धुआँ छोड़ रही थीं, राधा ने दो-चार फूँकें मार कर आग अच्छी तरह जला दी। पानी थोड़ी ही देर में उबलने वाला था। राधा चाय की पत्ती और दूसरी चीजें लेने के लिए कोठरी में आई तो कहने लगी—'यदि मैं सोई रह जाऊँ तो आप मुझे आवाज देकर जगा लिया करें। भविष्य में आप ऐसा कष्ट न किया करें।'

'लो, और सुनो पगली की बातें। भला यह तो सोचो कि जब तुम हॉस्टेल में रहती थी तो भी मेरा काम चलता था....'

'सो तो ठीक है, परन्तु अब मैं हॉस्टेल में नहीं हूँ बल्कि आपके पास हूँ।'

'इसमें हर्ज ही क्या है, अगर मैं तुम्हारी थोड़ी बहुत सहायता कर दिया करूँ।'

'मैं नहीं चाहती कि आप किसी प्रकार का भी कष्ट करें····आप बेफिक्र रहिए, मैं सारा काम अपने आप कर लिया करूँगी।'

'नहीं बेटी, यहाँ भी हम एक महरी का प्रबन्ध कर लेंगे, जो घर सम्हाल लेगी····शहर वाले नौकर गाँव में आने से कतरा गए तो इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम स्वयं घर के कामों में फँसी रहो—यह भी तो सोचने की बात है कि यदि तुम घर ही के कामों में फँसी रही तो तुम्हारी योजना का क्या बनेगा ?'

पिता जी अपनी धुन में कहे जा रहे थे परन्तु राधा का ध्यान दूसरी ओर था। एकाएक ही वह चौंकी और बोली—'पिता जी, तुलसी की पत्ती तो है ही नहीं ! वह तो हर रोज ताजी ही डाली जाती थी, लेकिन अब क्या होगा ?'

'तुम फिक्र मत करो····मैं सुबह घूमने चला गया था। मुझे इस बात का ख्याल था इसीलिए मैं तुलसी की कुछ ताजी पत्ती लेता आया। वह देखो, तुम्हारे सामने डिब्बे के ऊपर तश्तरी में पत्तियाँ रखी हैं।'

राधा ने पत्तियाँ उठाते हुए लाड़ से मुँह फुलाते हुए कहा—'पिता जी, आपने मुझे धोखा दिया।'

'धोखा दिया ? ···कैसा धोखा बेटी ?'

'आपने कहा था कि सुबह होने पर हम दोनों इकट्ठा घूमने जायँगे। आप मुझे गाँव, खेत और यहाँ की दूसरी चीजें भी दिखायेंगे ···परन्तु आप तो अकेले ही घूम आए।'

इस पर पिता जी ने कहकहा लगाया—'सच राधा ! तुम तो अब भी मुझे नन्हीं बच्ची ही लगती हो। तुम्हें देख कर विश्वास ही नहीं होता कि तुम एम० ए० पास कर चुकी हो। दूसरों की दृष्टि में तुम भले ही विद्वान बनती फिरो, लेकिन मेरी दृष्टि में तुम मेरी वही छोटी-सी बिटिया हो जिसे मैं गोद में उठाए घूमा करता था।'

राधा ने बनावटी क्रोध में आ और भी मुँह फुला कर कहा—'देखिए न, कितनी होशियारी से आप मेरी बात को पलट गए।'

'नहीं बेटी ··· मुझे चाय पिला दो और खुद भी नाश्ता कर लो तभी तो सैर को चल सकते हैं। भला खाली पेट मनुष्य कहाँ तक चल सकेगा। सच पूछो तो मैं घूमने ही कहाँ गया था? मैं तो मंदिर तक तुलसी की पत्तियाँ लेने गया था।'

नौ...

थोड़ी देर बाद बाप-बेटी चलने को तैयार हुए, तो राधा बोली—

'मैं भी कितनी जल्दबाज हूँ। अभी तो घर का सारा सामान ज्यों का त्यों पड़ा है, उसे भी तो ठिकाने से रखना है।'

'घबराओ मत, यह गाँव है गाँव! यहाँ अगर कोई हमसे मिलने आ भी जाएगा तो हमारा सामान बिखरा देखकर नाक-भौं नहीं चढ़ाएगा। यहाँ के लोग शहरियों की तरह नखरे नहीं दिखाते।'

यह सुनकर राधा हँस दी। उसने एक बार फिर चलते-चलते अपनी सफेद साड़ी पर नजर डाली और उधर आत्माराम ने अपनी लाठी सँभाली और दोनों बाप-बेटी गाँव की गली में घुस गए। पिता जी बोले—'देखो, हमारा मकान गाँव के सिरे पर है। यदि हम चाहते तो सीधे खेतों को हो लेते, परन्तु मैं गलियों में से होकर इसलिए जा रहा हूँ ताकि तुम इस गाँव से भली भाँति परिचित हो सको! भले ही यह गाँव बड़ा है फिर भी शहर के मुकाबले में यह कुछ भी नहीं है, क्योंकि यह पूरा गाँव शहर के एक मुहल्ले के बराबर भी नहीं। यह भी याद रखो कि गाँवों में तो हर एक से जानकारी हो जाती है। यहाँ शहर वालों-सी बात नहीं हो सकती। शहर में तो ऐसा भी होता है कि वर्षों एक-दूसरे के पड़ोस में रहते हुए भी लोग एक-दूसरे को जानने की जरूरत नहीं समझते। परन्तु देहात में सब लोग न केवल एक दूसरे को जानते हैं, बल्कि एक दूसरे की घरेलू समस्याओं से भी भली-भाँति परिचित होते हैं। यह सब बातें मैं तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ ताकि यहाँ के लोगों का व्यवहार तुम्हें अनोखा न लगे। गाँव में जाति-पाँति भी है, ऊँच-नीच भी माने जाते हैं, परन्तु यह चीजें शहर वालों से

अधिक होते हुए भी उनकी आपस में बोल-चाल अवश्य चालू रहती है। एक-दूसरे से सभी मिलते-जुलते रहते हैं ! इसलिए तुम्हें यहाँ के धोबियों, नाइयों, चमारों आदि लोगों से भी बात-चीत करनी ही होगी।'

वे लोग बहुत धीरे-धीरे कदम उठा रहे थे। राधा कुछ सोचते हुए बोली—'यह तो अच्छी ही बात है, मुझे इस सम्बन्ध में कोई कष्ट नहीं होगा। बल्कि मैं आपसी भेद-भाव और ऊँच-नीच को भी उचित नहीं समझती। मेरी दृष्टि से इस गाँव में गाँधी जी के विचारों का प्रचार होना चाहिए···'

'तुम्हारे विचार अच्छे हैं, परन्तु इस कार्य में जल्दबाजी न करना। याद रक्खो गाँव वालों में पुरानी परम्पराएँ चली आती हैं। वे अपनी परम्पराओं को जल्दी से छोड़ते भी नहीं हैं। इस बात का ख्याल रखना कि कहीं तुम अपने उत्साह में कोई ऐसा कदम न उठा बैठो जिससे यहाँ के लोग तुम्हारा विरोध करने लगें। देहातियों को सीधा-सादा कहा जाता है, परन्तु वे इतने सीधे नहीं होते। मेरी बातों से खामखा घबराना भी नहीं···मैं केवल तुम्हें फूँक-फूँक कर कदम रखने की सलाह दे रहा हूँ।'

इस तरह बातें करते-करते वह गलियों में से गुजरने लगे। उन्हें हर आठ-दस कदमों के बाद रुकना पड़ता था क्योंकि आत्माराम को करीब-करीब सारा गाँव जानता था। वहाँ उनके वापस लौट आने की खबर भी फैल चुकी थी। छोटे-बड़े सभी प्रकार के लोग मिले। आत्माराम सभी से बात-चीत करते आगे बढ़ते गए। अधिकतर तो बहुत ही मामूली झोपड़े थे, बड़े मकान भी थे, हर मकान की छत खपरैल की थी। बाज मकान के सेहन में गाय या भैंस भी बँधी दिखाई देती थी। गाँव के कुत्ते इधर-उधर दुम हिलाते घूम रहे थे।

इस तरह बाप-बेटी गाँव के दूसरे सिरे तक जा पहुँचे और फिर खेतों में से होते हुए आगे बढ़ने लगे।

लगभग आध मील परे राधा को ऊँचे-ऊँचे टीले दिखाई दिये जिन

पर पेड़ों के झुण्ड खड़े थे। उन्हें देखते ही राधा उछल पड़ी—'पिता जी ! वह कैसी जगह है ?'

'बेटी सुना है पहले कुछ भाइयों ने मिलजुल कर वहाँ काफी लम्बा-चौड़ा गड्ढा खोदकर तालाब बनाया था, ताकि उसमें बरसात का पानी इकट्ठा हो जिससे वह अपने खेतों की सिंचाई करते—यह बहुत पुरानी बात है, हमारे बड़े-बूढ़े भी यही बताते हैं। अब वह तालाब एक झील बन चुका है। उसकी तह में पानी के सोते फूट पड़े हैं, इसीलिए वहाँ बारहों महीने पानी इकट्ठा रहता है। इस पानी से खेतों की सिंचाई भी होती है। इस झील में काफी बड़ी-बड़ी मछलियाँ भी पाई जाती हैं और एक मौसम में यहाँ मुरगाबियाँ भी आती हैं। यही कारण है कि यहाँ मछलियाँ पकड़ने वाले रात-रात भर बैठे रहते हैं। जिन दिनों मुरगाबियाँ आती हैं उन दिनों यहाँ शिकारी लोग भी बन्दूकें लेकर पहुँच जाते हैं। कहते हैं कि पुराने समय में जिन भाइयों ने इस तालाब की खुदाई की तो वह सारी मिट्टियाँ भी खोद-खोद कर किनारों पर फेंकते गए। यह टीले भी उसी मिट्टी के बने हुए हैं। बाद में इन पर घास भी उग आई और बड़े-बड़े पेड़ भी खड़े हो गए।'

राधा को यह सारी बातें बड़ी ही दिलचस्प मालूम हुईं। वह बच्चों की सी चंचलता से बोली—'हम तो इन टीलों पर जरूर चढ़ेंगे पिता जी !'

'तुम चढ़ जाना, मैं नीचे ही खड़ा रहूँगा, क्योंकि मुझसे नहीं चढ़ा जाएगा····देखो तो मुझे समतल जमीन पर चलने में भी कष्ट होता है, दम फूल जाता है····'

राधा बात काटकर बोली—'नहीं पिता जी, आपको सहारा देकर ले चलूँगी। आप बहुत धीरे-धीरे दम ले लेकर चढ़िए। ऊपर पहुँच कर किसी पेड़ की छाँव-तले बैठेंगे, ताकि आप थोड़ी देर आराम भी कर सकें।'

यह सुनकर आत्माराम चुप हो गए। वह जानते थे कि उन्होंने बिल्कुल ही इंकार कर दिया, तो उनकी बेटी का दिल टूट जायगा।

राधा उन टीलों की ओर बढ़ने लगी। आत्माराम तो अपनी मद्धिम चाल में रहे, परन्तु राधा उस झील को देखने के लिए इतनी उत्सुक हो रही थी कि वह दौड़ती हुई उन टीलों पर चढ़ गई। झील का दृश्य देखकर वह अत्यन्त प्रसन्न हुई। उस झील की कश्मीर की झील या नैनीताल की झील से तुलना किसी तरह भी नहीं की जा सकती थी, फिर भी रूखे-सूखे गाँव के पास इस झील का होना बहुत बड़ी बात थी। और झीलों के मुकाबले में तो इसे बड़ा तालाब ही कह सकते थे, लेकिन इसके किनारे-किनारे पेड़ों और दूर पानी में तैरती हुई बत्तखों ने झील को बहुत ही सुन्दर बना दिया था।

पहले तो राधा ने एक ही नजर में उस फैली हुई झील का आकर्षक दृश्य देखा और उसका मन चहक उठा। तब उसने घूम कर देखा कि उसके पिता जी टीले के नीचे खड़े हाँफ रहे हैं। दोनों की नजरें मिलीं तो पिता जी बोले—'तुमने झील तो देख ही ली, कहो तो मैं ऊपर न आऊँ।'

'नहीं पिता जी मैं आपको लेने आती हूँ। आपने न जाने कितने वर्ष पहले इस झील को देखा होगा। आज फिर इसे देखिए। यहाँ पेड़ों की ठण्डी छाँव-तले बैठ जायँगे। जब आपकी थकान दूर हो जाएगी, तो फिर आगे बढ़ेंगे।'

आत्माराम ने देखा कि आज बहुत दिनों के बाद राधा खुश दिखाई दे रही थी। उसका चेहरा फूल की तरह खिल उठा था। अपनी बेटी को इतना खुश पाकर उनका मन भी गद्‌गद् हो उठा और जब उनकी बेटी ढलान से दौड़ती हुई उतरी तो उन्होंने अपना बूढ़ा हाथ उसके हाथ में दे दिया। राधा उन्हें सहारा देती हुई बहुत ही धीरे-धीरे ऊपर ले गई। आत्माराम ने भी महसूस किया कि जितना वह डर रहे थे, यह काम उतना कठिन नहीं था। यह ठीक है कि वह कदम-ब-कदम दम लेते

हुए ऊपर पहुँचे, परन्तु एक बार उस झील को देखकर उन्हें यूँ महसूस हुआ जैसे किसी बिछड़े हुए पिता से मिल रहे हों। अब उन्हें वह झील बिलकुल नई-नई-सी लगी। स्वयं उन्हें नहीं मालूम था कि पानी के उस विशाल फैलाव को देखकर उन्हें इतना आनन्द मिलेगा।

बाप-बेटी ने पेड़ों के झुण्ड की घनी छाँव-तले हरी-भरी घास का एक टुकड़ा देखा, तो वह वहीं बैठ गए। आत्माराम अपनी बेटी को खुश पाकर जिस आनन्द का अनुभव कर रहे थे, उसे वह छिपा नहीं सके। धीरे से मुस्करा कर बोले—'बेटी, मैं वहाँ से डर रहा था कि गाँव की छोटी-सी दुनियाँ में तुम कहीं परेशान न हो जाओ।'

राधा ने चमकती हुई आँखों से पिता जी की ओर देखा और बोली—'यहाँ की छोटी-सी दुनियाँ का अपना ही सौन्दर्य है। बड़े शहर में तो मनुष्य खो ही जाता है, परन्तु यहाँ की हर चीज थोड़े दिनों में अपनी ही लगने लगेगी।'

'हाँ बेटी, इसमें क्या सन्देह है····एक बार तुम्हें यहाँ रहने की आदत हो जायगी तो फिर शहर का जीवन अजीब-सा लगने लगेगा। बाद में जब कभी शहर जाओगी तो तुम्हें वहाँ बड़ी घुटन का एहसास होगा। वहाँ की गहमागहमी से मन घबरा उठेगा। गाँव में जीवन बहुत धीमे-धीमे चलता है, परन्तु शहरी जीवन आँधी की तरह मंजिलें काटता चला जाता है। जब से मनुष्य धरती पर उत्पन्न हुआ है तब से लाखों वर्षों तक वह जंगलों और खुले मैदानों में जीवन व्यतीत करता आया है। इसीलिए तो मैं समझती हूँ कि आज भी जब मनुष्य शहर के बनावटी वातावरण से निकल कर गाँव के खुले वातावरण में आता है तो उसे यूँ महसूस होता है कि जैसे उसने अपनी खोई हुई खुशी फिर से प्राप्त कर ली है।'

इसी प्रकार काफी देर तक बाप-बेटी आपस में बातें करते रहे। पेड़ों की शाखाओं में छिपे पक्षियों की चहचहाने की आवाजें आती रहीं। शायद उन दोनों के मन की यही भावना थी कि उन्होंने जो यह

नया कदम उठाया है सो अच्छा ही उठाया है··· राधा तो सचमुच ही अपने उत्साह को छिपा नहीं पा रही थी। उसने कहा—'पिता जी, मुझे क्या मालूम था कि आपके गाँव के निकट एक ऐसी सुन्दर झील भी होगी!'

इस पर आत्माराम बनावटी रोब जमाते हुए बोले—'वाह बेटी! आखिर तुम हमारे गाँव को समझती क्या हो?'

राधा ने हँस कर अपने दोनों हाथ अपने घुटनों के गिर्द जकड़ लिये और बोली - 'पहले की बात तो कह नहीं सकती, परन्तु अब तो आपके गाँव का काफी रोब छा गया है मुझ पर।'

यह सुनकर आत्माराम ने बच्चे की तरह खुश हो कर कहकहा लगाया और फिर कहा—'यही नहीं, बल्कि हमारे गाँव के पास एक बहुत अच्छा-सा बाग है।'

'बाग?'

'हाँ—इस बाग को शहर के न-जाने किस रईस ने लगवाया है। काफी बड़ा बाग है। उसमें आम, अमरूद, लीची, पपीता और न-जाने कौन-कौन से पेड़ हैं। बाग के बीचो-बीच एक बारहदरी भी बनी है जो काफी सुन्दर है।'

'तो वह रईस साहब भी रहते होंगे?'

'नहीं, गर्मियों के मौसम में वह पन्द्रह-बीस दिन के लिए आ जाते हैं या बरसात के ढलते दिनों में अपने मित्रों और रिश्तेदारों सहित दो-चार दिन यहाँ टिकते हैं, आमों की दावत उड़ाते हैं और लौट जाते हैं।'

'तो बाकी दिनों वहाँ क्या होता है?'

'कुछ भी नहीं, दो माली उस बाग में रहते हैं और उसकी देख-भाल करते हैं।'

'क्या बाहर के लोग भी वहाँ जा सकते हैं?'

'बिल्कुल जा सकते हैं—जैसा मैंने बताया है कि मालिक तो कभी-

कभी भूले-भटके वहाँ आ निकलते हैं, वरना बारहों महीने जनता बाग में मौज मारती है।

आम देहातियों के पास तो उनके बाग होते हैं, परन्तु कुछ शौकीन लोग उस बाग में चले जाते हैं। सर्दियों का मौसम हो तो बारहदरी की छत पर दरियाँ बिछाकर बैठ जाते हैं। गर्मियों का मौसम हो तो वह पेड़ों की घनी छाँव ढूँढ़ लेते हैं। वहीं खाते-पीते हैं और ताश खेलते हैं।'

'अब तो आपके गाँव का मेरे मन पर और भी गहरा रोब पड़ गया है—पिता जी! क्या वह बाग यहाँ से बहुत दूर है?'

आत्माराम ने उँगली से इशारा करते हुए कहा—'दूर नहीं है। वह देखो दिखाई दे रहा है।'

'मुझे तो कुछ नहीं दीखता!'

'बेटी! वह देखो सामने पेड़ों का झुण्ड, उनकी ओट में एक चहार-दीवारी दिखाई दे रही है। बस उसी बाग की चहारदीवारी तो है वह।'

यकायक राधा को वह चहारदीवारी दीख गई तो वह उछल पड़ी—'पिता जी, यह तो बिल्कुल पास ही है!'

'वही तो मैं कह रहा था।'

'क्या आप वहाँ चल सकते हैं? मेरा बड़ा मन हो रहा है उसे देखने को।'

'चल क्यों नहीं सकता, अब तो मैं बिल्कुल ताजा दम हो रहा हूँ।—तो पहले तुम उठो, फिर मेरा हाथ पकड़ मुझे भी उठाओ। तब हम बाप-बेटी मजे-मजे में बाग की ओर चल देंगे।'

थोड़ी ही देर बाद वे दोनों पेड़ों के झुण्ड में से निकल कर बाग के फाटक पर खड़े हुए थे। राधा ने पूछा—'क्या हमें किसी की आज्ञा लेनी होगी?'

'अजी नहीं, आज्ञा की क्या जरूरत है। यहाँ पर वही पुराने माली

अब तक होंगे। वह मुझे अवश्य ही पहचान लेंगे—अगर कोई जान-पहचान का न भी हो तो वे माली रोकते नहीं, क्योंकि अक्सर ही लोग यहाँ घूमने के लिए चले आते हैं।'

वही बात हुई····थोड़ी ही देर पहले एक माली मिला। उसने आत्माराम को पहचान लिया। फिर दूसरा मिला, उसने भी पहचान लिया। उन्होंने एक दूसरे से दुःख-सुख की बातें कीं। राधा बिटिया को देख कर तो दोनों माली बड़े खुश हुए जैसे वह उन्हीं की बेटी हो।

बाप-बेटी बारहदरी की छत पर पहुँचे तो वहाँ से दृष्टि दौड़ाते हुए राधा बोली—'अजी यहाँ से तो अपना गाँव साफ दिखाई दे रहा है।'

'हाँ बेटी! पेड़ों का झुण्ड तो झील और इस बाग के बीच में है, गाँव और बाग के बीच में तो खेतों के सिवा और कुछ भी नहीं।'

हवा के झोंके राधा के बालों को इधर-उधर बिखरा रहे थे। वह दोनों हाथों के उँगलियाँ एक दूसरे में उलझाकर बोली—'बस पिता जी, मैं यह चाहती हूँ कि गाँव के निकट ही हमें थोड़ी-सी जमीन मिल जाय, जहाँ मैं औरतों-लड़कों, लड़कियों और बच्चों के लिए एक पाठशाला खोलूँ, जहाँ मैं उनमें ज्ञान का प्रकाश फैला सकूँ। इस पाठशाला के साथ छोटा-सा औषधालय हो, जहाँ मामूली रोगों का इलाज भी हो सके।'

दस...

थोड़े दिनों बाद गाँव से दो फर्लांङ्ग परे आत्माराम ने जमीन का काफी बड़ा टुकड़ा खरीद लिया। शहर का मकान बिक जाने से उन्हें एक खासी बड़ी रकम हाथ लग गई थी जिससे वह अपनी यह योजना पूरी कर सकते थे। उन्होंने इस बात का ख्याल रखा कि इमारत बनाने में एक पैसा भी बेकार खर्च न हो। यद्यपि दीवारें पक्की ईंटों की बनाई गईं, परन्तु उस पर छत खपरैल की ही थी। उन्होंने किसी खास आदमी से नक्शा नहीं बनवाया, बल्कि उन्होंने खुद ही अपनी जरूरत के अनुसार नक्शा बना लिया। जब वह इमारत बन कर तैयार हो गई, तो वह सचमुच ही बड़ी साधारण-सी थी। उसमें कोई ऐसी बात नहीं थी कि कोई शहर वाला पल भर रुक कर उसे देखने की जरूरत महसूस करता। परन्तु गाँव के लोगों पर उसका कुछ-कुछ रोब जरूर पड़ रहा था। अक्सर देहाती रास्ता चलते-चलते रुक जाते और खड़े होकर उस इमारत को नजरों से तौल लिया करते। उन्हें यह जानने की उत्सुकता होती थी कि यह इमारत क्यों बनाई गई थी? कोई उन्हें बताता कि यहाँ अस्पताल खुलेगा, कोई कहता कि बच्चों की पाठशाला खुलेगी, कोई कहता कि यहाँ बूढ़ों को शिक्षा दी जायगी और कोई सूचना देता कि यहाँ केवल स्त्रियाँ ज्ञान प्राप्त करेंगी। देहातियों को यह सब बातें बड़ी अजीब-सी लगतीं। विशेषकर औरतों और बूढ़ों की शिक्षा की बात सुनकर तो उनके आश्चर्य की सीमा ही नहीं रहती थी। क्योंकि देहात में तो यह बात मशहूर थी कि बूढ़ा तोता नहीं पढ़ सकता—वैसे तो देहाती बच्चों को भी पढ़ाने के हक में नहीं थे। पहला कारण तो यह कि उनके पास इतना रुपया ही नहीं होता था कि बच्चों की पढ़ाई पर खर्च कर

सकें।''''दूसरी कठिनाई यह थी कि जहाँ बच्चे ने जरा होश सम्हाला कि वह उसे काम पर लगा देते थे ताकि घर में चार पैसे आयें और खर्चा भी चले। उन्हें यह समझाना असम्भव था कि पढ़ाई-लिखाई का भी कुछ फायदा होता है। वह तो यही समझते थे कि पढ़ने-लिखने से आदमी का दिमाग खराब हो जाता है।

जो कार्य राधा करने जा रही थी उसके बारे में उसे लोगों के कई प्रकार के विचार सुनने में आते रहे। इसीलिए उसने एक रोज अपने पिता जी से इसी विषय पर बात करते हुए कहा—'पिता जी! मैंने इमारत तो बनवा ली है, परन्तु यह समझ में नहीं आता कि अपने इस काम की शुरुआत कैसे की जाय?'

'हाँ बेटी, यहाँ तुम्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।'

'मैं कठिनाइयों से नहीं डरती। मैंने अपने आपको कठिनाइयों के लिए तैयार कर लिया है। मेरी परेशानी तो यह है कि मैं इस काम को शुरू कैसे करूँ?'

'तुम्हें तो गाँव के घर-घर में जाना पड़ेगा। औरतों को बताना पड़ेगा कि उन्हें घर के बच्चों की और अपने मवेशियों की सफाई कैसे रखनी चाहिए?'

'जी हाँ, वह तो मैं करूँगी ही।'

'केवल जुबानी कह देने से कुछ न होगा''''तुम्हें उन लोगों के घर जाकर अपने हाथ से उनके काम करके उन्हें काम करना सिखाना पड़ेगा।'

'यह बात आपने ठीक कही। बच्चों की तरह उन देहातियों के सामने ही जब तक कोई काम करके उसकी मिसाल उनके सामने न रखी जाय तब तक यह लोग कुछ नहीं सीख पायेंगे।'

'अगर मेरी सलाह मानो तो मेरे विचार में पहले तो औरतों से बात-चीत करके यह जानने की कोशिश करो कि किस औरत पर तुम्हारा गहरा प्रभाव पड़ता है, और कौन औरत तुम्हारे विचारों से अधिक से

सहमत है—जब इस बात का पता चल जाए तो सब से पहले तुम उसी के घर को सँवारने की कोशिश करो। अगर दूसरी औरतों को उसके घर का परिवर्तन पसन्द आ गया, तो वह निश्चय ही तुमसे बहुत कुछ सीखना चाहेंगी।'

'जी हाँ, आपने यह तो बहुत अच्छी बातें बताईं। इस तरह औरतों में सफलता प्राप्त करना सम्भव हो जाएगा, परन्तु मैं मर्दों को भी तो शिक्षा देना चाहती हूँ ?'

'हाँ सो तो ठीक है, परन्तु मर्दों का मामला जरा टेढ़ा होता है। और कठिनाइयों के अलावा सबसे बड़ी कठिनाई तो यही है कि देहाती मर्दों के मन में पहले से ही यह बात बैठी होती है कि स्त्रियों के मुकाबले में पुरुषों की बुद्धि अधिक तीव्र होती है। इसीलिए मैं यह समझता हूँ कि अभी मर्दों को तो रहने ही दो। सबसे पहले अपना काम औरतों और बच्चों से ही आरम्भ कर दो।'

राधा कुछ सोचकर पल भर को चुप हो गई, फिर बोली—'आपने सचमुच ही बड़ी अच्छी राय दी है—अच्छा मैं आपसे एक राय और भी लेना चाहती हूँ।'

'वह क्या ?'

'कुछ दिनों से मैं यह महसूस कर रही हूँ कि जब से हमारी इमारत बननी शुरू हुई है, यहाँ के लोगों में कई प्रकार के उल्टे-सीधे विचार फैल गए हैं····'

'इन विचारों की चिन्ता न करो बेटी····आखिर अनपढ़ देहातियों से तुम और किस चीज की आशा रख सकती हो ?'

'सो तो ठीक है, परन्तु मेरे मन में एक विचार आया है।'

'मुझे भी बताओ····शायद मैं तुम्हें कोई राय दे सकूँ।'

'जी हाँ, इसीलिए तो आपको बताने जा रही हूँ।'

'तो कहो।'

'मैं सोच रही थी कि मैं अपनी इस योजना का एक उद्घाटन करूँ।'

पिता जी, जरा आश्चर्य में बोले—'उद्घाटन ?'

'जी हाँ।'

'उसमें क्या होगा ?'

'एक बड़ा-सा जलसा किया जाय जिसमें न केवल अपने गाँव बल्कि आस-पास के देहात के लोगों को भी बुलाया जाय। सब लोगों में चार-चार लड्डू बाँटे जायँ। बच्चों के लिए अलग मिठाई का प्रबन्ध किया जाय। बल्कि हो सके तो सबको चाय भी पिलाई जाय....'

'हाँ बेटी समझ गया। खाने-पीने को तो सभी लोग आ जायेंगे, परन्तु उन्हें खिलाने-पिलाने का लाभ क्या होगा ?'

'आपने तो मेरी बात बीच से ही काट दी।'

'ओह ! आई एम सॉरी बेटी—हाँ आगे कहो।'

राधा पल भर को सोच में डूब गई। शायद वह मन में यह सोच रही थी कि जो-जो प्रोग्राम उसके मन में बने हैं उन्हें किस अन्दाज में बताए कि सारी बात उसके पिता जी की समझ में आ जाए और वह उसकी राय का विरोध न करें। आखिर सोच-समझ कर उसने धीरे-धीरे कहना शुरू किया - 'मेरा विचार यह है कि उद्घाटन के तौर पर जब यह जलसा किया जाय तो नाश्ता-पानी के अतिरिक्त सब लोगों को अपनी यह योजना समझाई जाए। जैसा कि मैंने आपसे पहले भी कहा है कि यह देहाती हमारी इस योजना के बारे में उल्टी-सीधी बातें सोच रहे हैं इसीलिए मैंने निर्णय किया है कि बिल्कुल सरल भाषा में उन्हें सारी बातें समझा दी जायँ ताकि आगे को उनके मन में कोई गलत-फहमी न पैदा हो।'

यह बात सुनकर आत्माराम कुछ देर के लिए चुप हो गए। उन्हें इस तरह मौन देखकर राधा बोली—'क्यों आपको यह मेरी तरकीब अच्छी नहीं लगी क्या ?'

'नहीं, ऐसी बात तो नहीं है, पर मेरे मन में एक प्रश्न उठता है कि क्या तुम्हारे समझाने से वह समझ जायेंगे ?'

'यदि पूरे तौर पर नहीं समझेंगे तो बाद में जब मैं अपना काम करके दिखाऊँगी तो वह खुद ही समझ जायेंगे ।'

'इन देहातियों में अक्सर उल्टी खोपड़ी के होते हैं, ऐसा न हो कि वह तुम्हारा विरोध करने लगें ?'

'यह तो सम्भव नहीं है कि सभी मेरा विरोध करने लगें । उनमें से कुछ लोग तो मेरी बात समझेंगे और मुझसे सहमत होंगे ?'

'यह भी ठीक है··· दूसरी बात यह है कि अब ओखली में सर दिया तो फिर धमकों से क्या डरना । यही तो पुरानी कहावत चली आ रही है । अब एक काम का बीड़ा उठा लिया तो अपने रास्ते में जो भी कठिनाइयाँ आएंगी उनका मुकाबला भी होना चाहिए ।'

'आपकी इस बात से मेरा उत्साह काफी बढ़ गया है । हाँ आप मेरे काम की कोई बात महसूस करें तो जरूर कहें ।'

'बस बेटी, मेरा यही ख्याल था कि इन देहातियों के बीच अपना काम ऐसे तरीके से किया जाए कि उनके मन में कोई ऐसी भावना उत्पन्न न हो कि जिसके जोर पर वह विरोध करने लगें—जैसा कि मैंने बताया, यहाँ के लोग पुरानी परम्पराओं और रिवाजों में फँसे हुए हैं । इन्हें उस दलदल से निकालना कोई आसान काम नहीं है—तुम यह न समझना कि यह बात कहकर मैं तुम्हारा विरोध कर रहा हूँ । बल्कि मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि तुम अपने जलसे में ऐसा भाषण दो कि जिससे किसी को यह महसूस न होने पाए कि तुम कोई बड़ा भारी परिवर्तन लाना चाहती हो । बल्कि मेरा विचार तो यह है कि अपनी पूरी योजना उनके सम्मुख मत रखो ! बस मामूली छोटी-छोटी बातें कह देना जिससे उन्हें यही महसूस हो कि कोई ऐसा काम होने जा रहा है जिससे उनका लाभ होगा । तुमने यह भी ठीक सोचा

है कि ऐसे भाषण से उन लोगों में कोई गलतफहमी नहीं रहेगी। यह तो बहुत ही आवश्यक है। बस, इसके साथ-साथ इस बात का भी ख्याल रखना कि वह यह महसूस न करने पाएँ कि तुम उनके पुराने रहने-सहने के ढंग को अच्छा नहीं समझती हो और तुम उनका जीवन एकदम से बदल देना चाहती हो।'

राधा को पिता जी की यह बातें भली लगीं। उसने निश्चय कर लिया कि वह अपने पिता जी के परामर्श से काम करेगी।

ग्यारह...

दो-चार ही दिन में जलसे की तैयारी बड़े जोर-शोर से होने लगी। उस सीधी-सादी इमारत को हरी, लाल, पीली झंडियों से सजाया गया। बड़े फाटक तक रंग-बिरंगी झंडियाँ तनी हुई सुतलियों से चिपका दी गईं। एक बड़ा मंडप भी तैयार किया गया जिसके सामने कुछ खास-खास लोगों के बैठने के लिए बड़ी-बड़ी दरियाँ बिछा दी गईं। सोचा यही गया कि यदि लोग अधिक संख्या में आ गए तो वह फैल कर खेतों में भी बैठ सकते हैं। लाउडस्पीकर का भी प्रबन्ध किया गया। गाँव वालों के लिए लाउडस्पीकर एक बिल्कुल ही नई चीज थी। न केवल उनके गाँव में, बल्कि पास-पड़ोस के गाँवों में भी यह बात फैल गई कि फलाँ दिन संध्या के समय वहाँ काफी बड़ा जलसा होने जा रहा है।

जिस शाम को जलसा होने वाला था उस दिन सुबह शहर से एक हलवाई भी बुला लिया गया जिसने लड्डू तैयार करने शुरू किये। बच्चों के लिए लेमनजूस की मिठाइयाँ और बिस्कुटें भी शहर से मँगवाए गए। गैस की हंडियों का भी प्रबन्ध किया गया था। संक्षिप्त रूप में समझिए कि देहातियों ने ऐसा शानदार जलसा अपने गाँव में पहले कभी नहीं देखा था। इसलिए शाम होते तक जिन-जिन को बुलाया गया था वह तो आए ही, परन्तु उनके अतिरिक्त बिन बुलाए मेहमान भी काफी संख्या में आ गए थे।

यह सब कुछ देख कर राधा को कोई उलझन नहीं हुई। वह इसके लिए पहले से ही तैयार बैठी थी क्योंकि उसको उसके पिताजी ने सब बातें पहले से ही समझा दी थीं—राधा को इसकी खुशी ही थी क्योंकि वह चाहती थी कि अधिक से अधिक लोग आयें ताकि उनके बीच उसके

विचारों का प्रचार हो सके । जितने ज्यादा लोगों में यह प्रचार हो उतना ही अच्छा था ।

लोग इकट्ठा हो गए । लाउडस्पीकर पर राष्ट्रीय गान होने लगा । यह सब कुछ देख कर जनता को बड़ी प्रसन्नता हो रही थी । स्त्रियाँ अपने बच्चों सहित बहुत बड़ी संख्या में आ गई थीं । सब की नजरें मंच पर जमी हुई थीं । बची-खुची ईंटों को जोड़ कर एक चबूतरा बना लिया गया था । जब इस चबूतरे पर दरी और दरी पर सफेद चादर बिछ गई तो किसी ने यह महसूस नहीं किया कि यह चबूतरा पक्का नहीं बना हुआ था ! मंच पर दो गावतकिये भी रखे थे । मंच के बीचोबीच लकड़ी का छोटा-सा डेस्क था जो अभी-अभी बनवाया गया था ।

लोगों ने देखा कि गाँव के मुखिया और दूसरे छोटे-मोटे जमींदार मंच पर उजले कपड़े बैठे थे और उनके बीच में सफेद साड़ी पहने देवी बनी एक लड़की (राधा) बैठी थी । राधा के बगल में ही उसके पिता जी थे । उन्होंने राधा के कान तक अपना मुँह ले जाकर धीमे से कहा—'देखो बेटी, यह लड्डू-वड्डू पहले ही न बाँट देना । लड्डुओं के लालच से तो यह लोग बैठे भी रहेंगे, वरना लड्डू मिलते ही जलसे की कार्यवाही देखे बिना चल देंगे ।'

राधा ने मुस्करा कर उत्तर दिया—'ऐसा ही होगा, आप चिन्ता न करें ।'

जब आत्माराम ने देखा कि जलसे में सब लोग आ चुके हैं और जनता यह जानने के लिए उत्सुक हो रही है कि यह सम्मेलन किस उद्देश्य से किया जा रहा है तो उन्होंने पल भर खाँस कर अपने गले का बलगम साफ किया और माइक्रोफोन के सामने बैठ कर यूँ बोलना शुरू किया 'प्रिय बहनो तथा प्यारे भाइयो ! आज यह देखकर मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है कि हमारे गाँव और आस-पास के गाँव के इतिहास में शायद पहली घटना है जब कि सब लोग इस तरह एकत्र होकर बैठे हों जैसे कि आज बैठे हैं । यह तो स्वाभाविक बात है कि यदि आपके

मन में यह प्रश्न उठे कि आज के इस जलसे का उद्देश्य क्या है, तो मैं आपको यह नहीं बताने जा रहा हूँ कि इस सम्मेलन का उद्देश्य क्या है, क्योंकि यह काम मेरी बेटी राधा करेगी। मैं यह भी महसूस करता हूँ कि यहाँ पर अध्यक्ष के होते हुए भाषण देने में पहल करना भी मेरे लिए उचित नहीं है। परन्तु मैं इस सम्मेलन की कार्यवाही और उद्देश्य से हट कर राधा का पिता होने के नाते से कुछ शब्द आपके कानों तक पहुँचाना चाहता हूँ—मेरे लिए यह बड़े हर्ष और गौरव का अवसर है। गाँव के बूढ़े-बड़े सभी जानते हैं कि मेरी बेटी बचपन में ही विधवा हो गई थी। पहले तो मैं इस बात के बिल्कुल ही विरुद्ध था कि राधा का दूसरा विवाह हो क्योंकि यह हम लोगों की परम्परा नहीं है। लेकिन बाद में मुझे ख्याल आया कि अब तो समय बदल चुका है, और मेरी बेटी ने भी उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की है, इसलिए बचपन की शादी का प्रभाव अब उसके जीवन पर नहीं पड़ना चाहिए। मैं भली-भाँति जानता हूँ कि आप मेरा विरोध करेंगे और इस विचार के लिए मुझे बुरा-भला भी कहेंगे, परन्तु मैंने निश्चय कर रखा है कि मैं आपके आगे एक शब्द भी झूठ नहीं कहूँगा। मैं आपसे यह विनती भी करूँगा कि यदि आपको मेरे विचार अच्छे न लगें तो आप मुझे क्षमा करेंगे—हाँ तो मैं यह कह रहा था कि मेरे मन में यह बात आई कि मेरी बच्ची उस समय विधवा हो गई जब उसकी आयु बहुत कम थी। उस उम्र में न तो इस बात का ज्ञान होता है कि पत्नी का अर्थ क्या है ? पति होने से क्या मतलब है ? पति-पत्नी के सम्बन्ध क्या होते हैं ?....इन सब बातों को देखते हुए यदि कोई नादान लड़की विधवा हो जाय तो उसे सारी उम्र विधवा रहने पर मजबूर करना मनुष्यता नहीं है। इस अवसर पर मैं इस वाद-विवाद में और अधिक फँसना नहीं चाहता क्योंकि इसका न तो यह अवसर है और न उसकी कोई आवश्यकता ही है और फिर मैं यह भी जानता हूँ कि इस विषय पर आप लोगों का मत क्या है - इस समय तो मैं आपको केवल यह बताना चाहता हूँ कि मेरी बेटी ने मेरे

इस मत को स्वीकार नहीं किया। उसने कहा कि मैं धर्म और शास्त्रों की आज्ञा के अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करना चाहती हूँ। उसने कहा कि अगर समाज मुझे विधवा मानता है तो मैं विधवा रहना पसन्द करूँगी.....।'

आत्माराम का भाषण जब यहाँ तक पहुँचा तो जनता ने बड़े उत्साह से तालियाँ बजाईं और फिर ऊँचे स्वर में राधा के इस विचार की प्रशंसा करने लगी।

आत्माराम ने हाथ उठाकर सबको चुप रहने को कहा और फिर कहा—'अपनी बेटी को इस निश्चय पर दृढ़ पाकर आज मैं फूला नहीं समाता। मुझे इस बात पर अभिमान है....और मेरा विचार है कि मेरा यह अभिमान गलत नहीं है....हाँ तो मुझे इस बात का अभिमान है कि मेरी बेटी ने तप और त्याग का मार्ग अपनाया है। अब वह अपने जीवन में क्या करना चाहती है यह तो वह स्वयं बताएगी।....मैं आप सब लोगों से क्षमा चाहता हूँ कि मैंने आपका इतना समय नष्ट किया। अब मैं अध्यक्ष महोदय से प्रार्थना करूँगा कि वे जलसे की कार्यवाही आरम्भ करें।'

इतना कह कर आत्माराम ने दोनों हाथ जोड़ कर सिर झुका दिया।

सारा पंडाल तालियों से गूँज उठा, तब अध्यक्ष महोदय ने जो पहले किसी कालेज में प्रिंसिपल रह चुके थे, अपना भाषण यूँ शुरू किया—'भाइयो और बहनो! अभी-अभी आपने बेटी राधा के पिता महोदय श्री आत्माराम का भाषण सुना। मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि उन्हें क्षमा माँगने की कोई जरूरत नहीं थी। क्योंकि जो कुछ उन्होंने बताया उसे सुनकर मैं पूछना चाहता हूँ कि कौन-सा ऐसा बाप होगा जिसे देवी के समान बेटी मिले और उसकी छाती अभिमान से फूल न जाय। मैं उन्हें यह बताना चाहता हूँ कि बेटी राधा पर केवल उन्हीं को गर्व नहीं है, बल्कि हम सब को भी गर्व है....'

जनता ने एकदम ही तालियाँ पीटनी शुरू कर दीं। अध्यक्ष महोदय भाषण देते-देते ही बूढ़े हो गए थे। यानी वह इस क्षेत्र के पुराने खिलाड़ी थे इसलिए उन्होंने कुछ ऐसे ढंग से भाषण दिया कि लोगों पर उनका रोब जम गया।

जब लोगों ने तालियाँ पीटनी बन्द कीं, तो अध्यक्ष महोदय ने फिर कहना शुरू किया—'बेटी राधा जिस उद्देश्य को लेकर मैदान में आई है उस उद्देश्य को मैंने भी थोड़ा-बहुत समझा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं उसके उद्देश्य को आपके सम्मुख रखने जा रहा हूँ क्योंकि यही अच्छा रहेगा कि राधा बेटी उस उद्देश्य को स्वयं आपके सम्मुख रखे। चूँकि एक बहुत बड़ी योजना उसके दिमाग में आई है, इसलिए वही इसको पूरी योग्यता से आपके आगे रख सकती है। मैं तो आपका ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि आज हमारे इस गाँव की बेटी उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त करके अपने इसी गाँव अर्थात् अपनी जन्मभूमि को लौट आई है। कोई और लड़की होती तो न जाने वह अपने जीवन के लिए कैसी-कैसी योजना बनाती। परन्तु मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि इस योजना में हम लोगों को कोई स्थान न होता। परन्तु भारत की इस बेटी ने, जिसे सुपुत्री कहना चाहिए, एक ऐसी योजना बना डाली है जिसमें आप सबके लिए स्थान है। अपने आस-पास देखिए। हममें से हर कोई अपने निजी स्वार्थ में लगा हुआ है। किसी को इतनी फुरसत नहीं कि दूसरों की तकलीफ और दुःख महसूस करे। सभी अपना ही रोना रोते हैं, किसी और के दुःखों पर रोने की उन्हें फुरसत ही नहीं। कई शताब्दियों के बाद इस संसार में ऐसे व्यक्ति भी जन्म लेते हैं जिन्हें अपने स्वार्थ से कोई दिल-चस्पी नहीं होती। वह तप और त्याग के मार्ग पर चल देते हैं। उन्हीं में हमारी बेटी राधा की भी गिनती की जाएगी। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि दुनियाँ में ऐसे लोग भी तो नहीं मिलते जो जीवन-भर अपने स्वार्थ में लगे रहने के बाद बुढ़ापे में ही संसार की भलाई सोचें। लोग

बूढ़े हो जाते हैं, मृत्यु के मुँह तक पहुँच जाते हैं, फिर भी उनके मन में यह विचार कभी नहीं आता कि वह जीवन की संध्या हो जाने पर इस संसार के मोह और लोभ को त्याग दें। जरा अन्दाजा लगाइये कि आज हम सब लोगों के बीच में एक ऐसी लड़की भी बैठी है जिसने जीवन का कोई भी आनन्द भोगने से पहले इस संसार को त्याग दिया और अपने लिए तप और त्याग का रास्ता अपनाया। इस बात की जितनी भी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम होगी। भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवान ! भारत माता को यानी हमारे इस देश को ऐसी बेटियाँ दे जिनकी जरूरत भी है—अब मैं आपका और राधा बेटी का अधिक समय नष्ट न करते हुए उनसे अनुरोध करता हूँ कि वे हम सबों के आगे अपने विचार रखें ताकि हमारे जीवन में एक नई आशा और नया ही प्रकाश आ जाय।'

अब राधा दोनों हाथ जोड़ कर माइक्रोफोन के सामने बैठ गई। उसे देखते ही लोगों ने तालियाँ पीटनी शुरू कीं, और काफी समय तक तालियाँ बजती रहीं। ज्यों ही राधा कुछ बोलने की कोशिश करती त्यों ही लोग फिर से तालियाँ बजाने लगते। उन पर राधा का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा था। राधा का जो परिचय उसके पिता जी और अध्यक्ष महोदय ने दिया था उससे सब लोगों को राधा एक देवी-सी नजर आने लगी थी। इतनी छोटी उम्र में एक विधवा का ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी धर्म और शास्त्रों के मार्ग को अपनाना उन सबकी दृष्टि में बहुत ही ऊँची बात थी—आखिर मंच पर बैठे हुए अधिकारियों के बार-बार हाथ उठाने से जनता की तालियाँ कुछ मद्धिम पड़ीं और राधा को बोलने का मौका मिला।

उसने अपना भाषण बहुत धीमी आवाज में शुरू किया, परन्तु धीरे-धीरे उसका स्वर ऊँचा होता चला गया। उसने कहा—'अध्यक्ष महोदय, बहनो तथा भाइयो – आज मैं आपके आगे अपने कुछ विचार रखने जा रही हूँ। मुझे यह देखकर कुछ शर्म भी आती है कि मैं उम्र में अधिकतर

भाइयों और बहनों से छोटी हूँ। मुझसे छोटे केवल वह बच्चे ही हैं जो इस समय इस जलसे में उपस्थित हैं। मन में खयाल आता है कि मैं किस मुँह से आपके आगे भाषण देने के लिए आई हूँ।

इसके साथ ही मेरे मन को इस बात की तसल्ली और खुशी भी है कि आपने मुझे तुच्छ नहीं समझा। आपका बड़प्पन इसी में है कि आपने मुझ जैसी लड़की के विचार सुनने पर कोई आपत्ति नहीं की। बल्कि आप तो मन की गहरी खुशी के साथ मेरे विचार सुनने के लिए तैयार हैं।

जब मैं आपके इस व्यवहार की ओर देखती हूँ तो खुशी से फूली नहीं समाती। मुझे आप पर गर्व है और मैं समझती हूँ कि मैं आप पर जितना भी अभिमान करूँ उतना ही कम है।

अब यह प्रश्न उठता है कि आखिर मैं इतनी छोटी होकर आप सबको क्या ज्ञान दे सकती हूँ—मैं आपको विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि मेरे मन में यह विचार तक नहीं आया कि मैं आपसे अधिक बुद्धिमान हूँ। मैं किसी तरह भी आपसे ऊँची नहीं। मेरा कहना यह है कि मैं आप के सम्मुख कुछ सुझाव रखना चाहती हूँ। सुझाव रखने का यह अर्थ तो कदापि नहीं होता कि मैं आपसे अधिक बुद्धि ही रखती हूँ, क्योंकि सुझाव तो छोटी आयु और कम बुद्धि वाले भी अपने बड़ों के आगे रख सकते हैं। अब यह बड़ों के हाथ में है कि वह उस सुझाव को स्वीकार करें या न करें। परन्तु मैं अपने से बड़ों से इस बात की आशा जरूर रखती हूँ कि वह पूरी सहानुभूति से मेरे सुझाव पर विचार करेंगे। वह चाहें तो मुझसे प्रश्न भी पूछ सकते हैं। अपनी बुद्धि के अनुसार उन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करूँगी ···

आपसे सच कहती हूँ कि मेरे मन में अपने बड़ों के लिए बड़े आदर और सम्मान की भावना है। मुझे आपके सामने बोलते कुछ संकोच हो रहा है····मैं इस बात को एक दूसरी तरह कहना चाहूँगी, वह यह कि जीवन में ऐसा भी हो सकता कि आपसे कोई छोटा व्यक्ति किसी ऐसे

नगर में से हो आए जिसे आपने न देखा हो। मेरे ख्याल में ऐसे व्यक्ति की बात सुन लेने में कोई हर्ज नहीं है। यदि वह अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए नई-नई बातें बताए तो उससे किसी बड़े का अपमान नहीं हो सकता। मुझे विश्वास है कि आप मेरे विचारों से सहमत होंगे। मेरा मत तो यह है कि नई-नई बातों का जहाँ से भी पता चले उन्हें सुन लेने में कोई हर्ज नहीं।

इतना कह लेने के बाद मैं समझती हूँ कि किसी के मन में कोई शंका होगी भी तो वह अवश्य दूर हो गई होगी। कम से कम मुझे इस बात की तो तसल्ली है ही कि मैं ने अपने मन को खोलकर आपके सामने रख दिया है। मुझे इस बात का भी विश्वास है कि जो बात सच्चे दिल से निकलती है वह सुनने वालों को भी स्वीकार करनी पड़ती है, क्योंकि सुनने वाला इस बात का अनुभव कर लेता है कि जो शब्द उससे कहे जा रहे हैं वह सच्चे दिल से निकले हैं....

इतनी लम्बी भूमिका के बाद आप यह जानने के लिए उत्सुक हो रहे होंगे कि आखिर मेरे विचार क्या हैं ? —या फिर मेरे ही शब्दों में मेरा सुझाव क्या है ?'

इतना कह कर राधा रुकी। वह जान-बूझ कर चुप हो गई। वह अपने सुनने वालों को इस बात का मौका देना चाहती थी कि वह उसके विचारों को अपने मन में स्थान दे सकें। इसके साथ चूँकि अब वह असली विषय पर आ रही थी इसलिए उसने उचित समझा कि थोड़ी देर रुक कर अपने विचारों को एकत्र कर ले। पिता जी के साथ विचार-विनिमय करने के बाद उसने समझ लिया था कि उन सीधे-सादे लोगों के सामने भाषण देते समय उसे दो बातों का ख्याल रखना होगा। पहली बात तो यह कि पूरी योजना उन्हें न बताई जाए क्योंकि इस बात का भय था कि पूरी योजना उनकी समझ में न आये, या वह समझ भी जायँ तो उसे स्वीकार करने के लिए तैयार न हों। पिता जी ने उसे अच्छी तरह समझा दिया था कि उन सीधे-सादे देहातियों को उनके

मंजिल तक बहुत धीरे-धीरे ले जाना होगा। दूसरी बात यह थी कि अपनी योजना का जितना भाग इस समय वह उनके सामने रखना चाहती थी, वह भी इस अन्दाज में होना चाहिए कि उनकी समझ में बहुत जल्दी से आ जाय। जो प्रोग्राम वह उनके सामने रखना चाहती थी उसके गुण स्पष्ट रूप में उनके सामने आ जाने चाहिए। केवल इतना ही नहीं, बल्कि वे ये भी महसूस करें कि जो कार्यक्रम उनके आगे रखा जा रहा है उसे पूरा करना उनके लिए असम्भव या कठिन नहीं है। तब उसे उन लोगों की सहानुभूति और सहयोग प्राप्त हो सकता है। वह सबसे पहले स्त्रियों और बच्चों के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहती थी, परन्तु इस रास्ते पर भी कई गड्ढे थे जिनमें गिर जाने का डर था। आमतौर पर मर्द, और फिर गाँव का पुरुष खासतौर स्त्रियों पर अपना बड़ा हक जमाते हैं। यदि वह स्त्रियों के अधिकारों की बात करे तो पुरुषों को आपत्ति हो सकती थी। यदि वह बच्चों के पढ़ाने-लिखाने की बात करे तो भी उनके माता-पिता को इसमें अपनी भलाई दिखाई नहीं देगी। इसलिए वह सोच रही थी कि ऐसे ढंग से बात की जाय कि जिससे वे लोग यह महसूस करें कि उसमें उनका ही लाभ है।

खूब सोच-समझ कर राधा ने अपना भाषण फिर से आरम्भ किया—'मेरी जो कठिनाइयाँ थीं वह तो मैं कह चुकी, अब आपसे केवल इतना ही कहूँगी कि मैं अपने यहाँ की स्त्रियों और बच्चों के बारे में अपने कुछ विचार और सुझाव आपके आगे रखना चाहती हूँ। यदि आप इसका कारण पूछें तो मैं पहले से ही इसका उत्तर देने को तैयार हूँ। स्त्रियों के सम्बन्ध में इसलिए बोलना चाहती हूँ, क्योंकि स्त्रियाँ ही मनुष्य-जाति को जन्म देती हैं, वही बड़े से बड़े महापुरुष की माँ बनती हैं। हमारे भारत के एक बहादुर कर्मयोगी यानी शिवाजी का कहना था कि वह जो कुछ भी बने वह अपनी माता की शिक्षा के कारण। इसी तरह संसार के और अन्य महापुरुषों के जीवन का अध्ययन करने से पता चलता है कि बड़े होकर उन्होंने जो महानता प्राप्त की उसके पीछे उनकी

माताओं का कितना बड़ा हाथ था। मैं यह भी मान लेती हूँ कि हममें से हर कोई महापुरुष नहीं बन सकता, फिर भी एक समझदार स्त्री अपने घर का इस तरह प्रबन्ध कर सकती है कि उसके पति और उसके बच्चे बहुत ही आनन्द से रह सकते हैं। हमारे यहाँ कितनी स्त्रियों को इस बात का ख्याल रहता है कि उनके पति सारे दिन के परिश्रम के बाद घर लौटते हैं, तो उन्हें कितने आराम की जरूरत होती है? यदि उसे घर में अच्छा, सुख-शान्ति का वातावरण मिले और उसके आराम का थोड़ा-सा ख्याल भी कर लिया जाय, तो निश्चय ही उसकी थकान बहुत जल्दी दूर हो सकती है। परन्तु अधिकतर घरों में बिल्कुल इसके विपरीत होता है। जब पुरुष घर आता है तो उसको कई दुःख देने वाली चीजें दिखाई देती हैं। इससे उसका मन बुझ-सा जाता है।'

यह बात सुनकर वहाँ पधारे हुए पुरुष बहुत ही खुश हुए, राधा ने जानबूझ कर यह बात कही थी। परन्तु कुछ मनचली औरतों को इस पर आपत्ति भी हुई और वह थोड़ा भुनभुनाईं भी जिससे राधा को अपनी बात जरा पलटनी भी पड़ी। वह बोली—'मेरी बातों का यह अर्थ नहीं कि सभी मर्द हर प्रकार से निर्दोष होते हैं। मैं केवल इतना ही कहना चाहती हूँ कि यदि स्त्रियाँ चाहें तो वह बिगड़े हुए मर्दों को भी सीधे मार्ग पर चला सकती हैं।'

इस बात से सभी बहुत खुश हुए और उन्होंने जोर-जोर से तालियाँ बजाईं। राधा ने फिर कहना शुरू किया—'हमें अपने बच्चों की ओर भी काफी ध्यान देने की जरूरत है। यह समझना हमारी भूल है कि परमात्मा ही बच्चों का पालनहार है—मैं तो कहूँगी कि यूँ तो सभी का पालनहार भगवान है। परन्तु जब भगवान हमें माता-पिता बनाता है, तो कुछ जिम्मेदारी हमारी भी तो हो ही जाती है। बहुत कम माताओं को इस बात का ज्ञान होता है कि नन्हें बच्चों का पालन किस प्रकार होना चाहिए और फिर नन्हें बच्चे जब कुछ बड़े हों तो उनकी ठीक ढंग से देख-रेख होनी चाहिए और उनकी आदतों का सुधार करना भी

आवश्यक है। यह तो मानी हुई बात है कि किसी भी पुरुष को किसी भी दूसरे मनुष्य के आगे बढ़ जाने से ईर्ष्या हो। परन्तु वह अपने बेटे को फलते-फूलते देखकर और अपने से भी आगे बढ़ते देखकर फूला नहीं समाता। मैं पूछती हूँ कि आप में से कितने पुरुष हैं जो यह जानते हैं कि कैसे अपने बच्चों को जीवन की दौड़ में आगे बढ़ाया जाय ?

जिस मकान की बुनियादें ही टेढ़ी होंगी वह मकान भी टेढ़ा बनेगा। इसी प्रकार जिस बच्चे की छुटपन से देख-भाल नहीं की जायगी वह एक अच्छा व्यक्ति कभी नहीं बन सकता और जीवन में कभी भी गिर सकता है, बर्बाद हो सकता है और अपने साथ ही अपने खानदान को भी बर्बाद तथा बदनाम कर सकता है।

जिस तरह कई हजार ईंटों से एक मकान बनता है उसी तरह बहुत से मनुष्यों से समाज बनता है। यदि ईंटें और उनमें लगाए जाने वाला मसाला घटिया होगा तो उससे मकान भी अच्छा नहीं बन सकेगा। इसी तरह यदि हम सब मनुष्य शक्तिहीन होंगे, तो हमारा समाज भी शक्तिहीन होगा। आप लोग तो किसान हैं; दिन-रात हल चलाकर धरती से अनाज उत्पन्न करते हैं। आप यह अच्छी तरह समझते हैं कि अच्छी पैदावार के लिए बीज बढ़िया, धरती उपजाऊ, खाद आदि की जरूरत होती है। इन चीजों में से कोई भी घटिया हो तो फसल पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। इसी से आप सोच सकते हैं कि नन्हें-मुन्ने बच्चों की अच्छी देख-भाल न होने से यह कैसे मनुष्य बनेंगे ! माता-पिता को यह बात समझनी चाहिए कि बच्चों को इस संसार में लाने से ही उनकी जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती। बल्कि यह समझने की जरूरत है कि बच्चों का जन्म होते ही उनकी जिम्मेदारी का आरम्भ हो जाता है। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि भारत में बीस हजार बच्चे प्रति-दिन जन्म लेते हैं। इस हिसाब से लगभग छः लाख बच्चे हर महीने पैदा होते हैं। इतने बच्चों की देख-भाल हमारे जैसे गरीब देश में बिल्कुल ही असम्भव है। इसीलिए हमारी सरकार ने फैमिली प्लानिंग की

संस्था बनाई है, जिसका काम ही यही है कि लोगों को कम से कम बच्चे पैदा करने की शिक्षा दी जाय। हमारे यहाँ एक और भी तो मूर्खता है, वह यह कि लोग समझते हैं कि बच्चे भगवान की ओर से आते हैं। इसलिए भगवान ही उनकी देख-भाल भी करेंगे, परन्तु यह केवल अज्ञानता है और मूर्खता है····क्योंकि हम चाहें तो अधिक बच्चे न होने दें।

हो सकता है कि मेरी यह बात सुन कर आप में से कइयों के मन में कई प्रकार के प्रश्न उठें। उनका उत्तर दिया जा सकता है, परन्तु अभी इस बात को जाने ही दीजिए। अभी तो हमें यह सोचना है कि जो बच्चे हमारे पास हैं उनका जीवन कैसे सँवारा जाय? यदि हमारे गाँव का कोई बच्चा महापुरुष बने या समाज में ऊँचा दर्जा पाए तो उससे सारे गाँव का ही सिर ऊँचा हो जाएगा। मैं तो मन से यही चाहती हूँ कि किसी रोज हमारे ही गाँव का लड़का गाँधी बने, सरदार पटेल बने या जवाहर लाल नेहरू बने····'

राधा की इस बात पर लोग मारे खुशी के तालियाँ पीटने लगे और काफी देर तक पीटते रहे। आखिर राधा के बार-बार हाथ उठाने से तालियाँ रुकीं, तो उसने फिर कहना शुरू किया — 'आपने इतना अन्दाजा लगा लिया होगा कि इस समय कौन-सा उद्देश्य मेरे सम्मुख है। कभी-कभी मेरे मन में भी विचार आता है कि मैं भी हवा में ऐसे महल बनाती रहती हूँ, वह कभी असलियत का रूप भी धारण कर सकेगा या नहीं। फिर सोचती हूँ कि कल्पना में भी तो महल बनाना बहुत मुश्किल है। यदि हम किसी बात की कल्पना ही नहीं करेंगे, तो हम उसको असली रूप कैसे दे सकेंगे। मेरी इच्छा यह है कि हम आगे बढ़ें। जैसा कि आप जान चुके हैं कि हमने एक पाठशाला और डिस्पेन्सरी का प्रबन्ध किया है। औरतों को पढ़ाने के अतिरिक्त सीने-पिरोने दूसरे घरेलू कामों की शिक्षा भी दी जायगी। यह सब कुछ तो अपने समय पर होता रहेगा, परन्तु इस समय मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि जो सुनहरा स्वप्न मैं

देख रही हूँ वही आप देखें तो हमें सफलता प्राप्त हो सकती है—अन्त में मैं आपकी आभारी हूँ कि आपने मेरी रूखी-सूखी बातों को इतने ध्यान से सुना और मुझे इस बात का मौका दिया कि मैं अपने विचार आपके आगे रख सकूँ—जय हिन्द !'

इतना कह कर राधा बैठ गई फिर सारा पंडाल तालियों से गूँज उठा।

अब अध्यक्ष महोदय उठे और उन्होंने अपना भाषण देना शुरू किया—

'भाइयो तथा बहनो ! मुझसे पहले जो-जो बातें कही जा चुकी हैं उन्हें सुनकर मैं यह महसूस करता हूँ कि अब मेरे पास कोई नई बात कहने को नहीं रही। फिर भी मुझे अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए कुछ न कुछ तो कहना ही पड़ेगा।

सबसे पहले तो मैं यही बात कहूँगा कि हमें इसी बात पर बड़ा गर्व है कि राधा जैसी विदुषी महिला की बातें सुनने का अवसर मिला। शायद हममें से बहुत से राधा की बातों की गहराई तक न पहुँच पाएँ फिर भी जिस व्यक्ति में थोड़ी बहुत समझ है वह अवश्य इस बात को मानेगा कि बेटी राधा ने सभी बातें काम की कही हैं। मैं आपसे निवेदन करूँगा कि हमें अपने गाँव की इस विदुषी महिला की बनाई हुई योजना को सफल बनाने की चेष्टा करनी चाहिए !'

लोगों ने फिर तालियाँ बजायीं, तब अध्यक्ष महोदय फिर से बोले—'आपकी तालियों से इस बात का पता चलता है कि आप मेरे इस सुझाव को स्वीकार करते हैं, इसलिए अब मैं आपकी ओर से राधा बेटी से कह सकता हूँ कि हम भी वही सपने देखने की चेष्टा करेंगे जो कि आप देख रही हैं और आपकी योजना अवश्य ही सफल बना देंगे।'

यह कह कर अध्यक्ष महोदय ने अपना भाषण समाप्त किया और तालियों के शोर में सभी लोगों में लड्डू बाँटे गए।

बारह...

वह शाम, सफलता की शाम थी जब जलसा समाप्त हो गया और धीरे-धीरे सभी लोग इसी विषय पर आपस में बातें करते विदा हो गए। अब वह बाप-बेटी अकेले रह गए। वे उस नई इमारत में थे जिसमें उन्होंने अपने रहने के लिए भी थोड़ी-सी जगह बना ली थी। उन्होंने सोचा कि भविष्य में दिन-रात उनका वहीं पर काम रहेगा, इस लिए गाँव में रहने से असुविधा ही होगी।

सबके चले जाने के बाद राधा छत पर चढ़ गई। यह छत दूसरी मंज़िल पर थी और गाँव के सारे मकान, झोंपड़े आदि उससे साफ दिखाई देते थे। राधा ने फीके प्रकाश में दूर तक फैले हुए खेतों, झील के पेड़ों और बारहदरी को देखा। यही था उसका कर्मक्षेत्र जहाँ उसे भविष्य में भारी परिश्रम करना था। उसके आगे एक बहुत बड़ा कार्य था और उस कार्य को पूरा करना उसने अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था। उसे कहाँ तक सफलता होगी कहाँ तक नहीं, वह इसके बारे कुछ नहीं कह सकती थी। परन्तु वह इतना जानती थी कि जब तक वह अपने सम्मुख एक ऊँचा आदर्श रख कर वहाँ तक पहुँचने के लिए परिश्रम नहीं करेगी तब तक वह अपने जीवन के दुःख पर काबू नहीं पा सकेगी। उसने अपने जीवन का एक और ही आदर्श बनाया था जिसमें उसका साथी एक ऐसा युवक था जिसे वह संसार में सबसे अधिक प्यार करती थी, परन्तु भारतीय परम्परा में पली हुई राधा को इस बात का भी एहसास था कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में एक दिन ऐसा भी आ सकता है जबकि अपने धर्म और कर्त्तव्य के लिए उसे बड़ा से बड़ा बलिदान भी करना पड़ता है। यह बातें कहने को तो आसान थीं, लेकिन

इन्हें करना बहुत कठिन था। जीवन में ऐसा बलिदान करके जीवित रहना असम्भव था। क्योंकि जीवन रूपी नदी के बहाव का रुख इस तरह मोड़ देने से जीवन की गति में ऐसा परिवर्तन और ऐसा ज्वार-भाटा आता है कि उससे तबाही और बर्बादी के अतिरिक्त और कोई नतीजा नहीं निकल सकता। यदि जीवन की नदी में ऐसा मोड़ आने के बाद उसके आगे एक ऐसा मैदान भी हो जिसमें वह पहले की तरह बह सके, तो उस ज्वार-भाटे में बहुत कुछ कमी आ सकती है और बहुत कुछ बर्बादी और तबाही बच भी सकती है। एक आदर्श को एकदम ही छोड़ देने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। वह अपने आप को मौत के हाथ सौंप देने पर मजबूर हो जाता है यानी आत्म-हत्या कर लेता है। परन्तु यदि उसके आगे एक नया आदर्श आ जाय, तो उसकी सारी शक्तियाँ नये आदर्श तक पहुँचने में लग सकती हैं और वह आत्म-हत्या करने से बच सकता है। इन्हीं बातों को अच्छी तरह जानते और समझते हुए राधा ने अपना एक नया आदर्श बना लिया था। नया आदर्श बना लेना भी कोई आसान काम नहीं था।

राधा इस बात में बड़ी दृढ़ता से विश्वास रखती थी कि एक आदर्श तक न पहुँच पाने पर आत्म-हत्या कर लेना एक मामूली बात थी, घटिया बात थी और भारतीय नारी का जो आदर्श स्वरूप वह मानती थी उससे यह चीज बिल्कुल ही विरुद्ध थी। इसीलिए उसने बड़ी हिम्मत से काम लेकर एक नये आदर्श को अपनाया और पहले आदर्श की असफलता उसके मन की गहराइयों की तह में जा बैठी। वह जानती थी कि जो भावना इतनी जोर से दबा कर मन की गहराई में बिठा दी जाती है, वह मर नहीं सकती !....भले ही वह उभर कर सतह पर न आ सके, परन्तु अन्दर ही अन्दर वह दुःख की लहरों को सतह तक पहुँचाती रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने नये आदर्श के आधार पर जिये जीता है और अपने हृदय में एक दर्द की टीस लिये हँसता है। यह ठीक है कि उसका जीवन पूरे तौर पर खुशी से भरा नहीं होता क्योंकि उसके

दिल में तो एक काँटा-सा चुभा होता है। फिर भी काँटे की वह चुभन भी कितनी प्यारी होती है। उस दर्द में भी एक प्रकार का सुख होता है····तभी से उसे मीठा दर्द कहा जाता है। यह भी मनुष्य की ही महानता है कि वह अपने हृदय में ऐसा मीठा दर्द पाल सकता है। जानवरों में इसकी इतनी योग्यता ही नहीं है। इस बात की योग्यता तो केवल मनुष्य में ही है और शायद यही एक जानवर और मनुष्य में सबसे बड़ा अन्तर भी है। जिस तरह एक जानवर दुख महसूस तो कर सकता है लेकिन मनुष्य की तरह मीठा दर्द नहीं पाल सकता, उसी तरह मनुष्य खुश तो रहना चाहता है और खुशी प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ करता है, फिर भी उसकी मनुष्यता तो तभी सिद्ध हो सकती है जब वह दर्द को ढूँढ़े और उसे इतने प्रेम से पाल सके। जो मनुष्य केवल खुश ही रहना चाहता है और जीवन में सिवाय अपनी खुशी प्राप्त करने के उसे और कुछ नहीं सूझता वह मनुष्य के रूप में जंगली जानवर बन जाता है। परन्तु जो मनुष्य अपने जीवन में कुछ मान्यताओं को स्वीकार करता है और अपनाता है, वह अवश्य ही अपने सुखों को त्याग देने पर भी मनुष्यता की ऊँची मंजिल तक जा पहुँचता है। चाहे ऐसा व्यक्ति इन सारी बातों को जाने या न जाने, समझे या न समझे, फिर भी वही असली मनुष्य मनुष्यता की परीक्षा में पूरा उतरता है। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बत्तख का बच्चा बिना सीखे, बिना जाने-बूझे पानी में उतरता है तो तुरन्त ही तैरने लगता है।

छत पर खड़ी राधा के बालों को हवा के झोंके आ-आकर प्यार से थपकी दे रहे थे और वह इस नये स्थान पर आकर अब अपने आपको अपरिचित नहीं महसूस कर रही थी। उसे पहली बार इस बात का अनुभव हो रहा था कि वह चारों ओर फैली हुई धरती की बेटी है। इतने में उसे जीने पर अपने पिता जी के खाँसने की आवाज सुनाई दी। वह दौड़ी-दौड़ी उधर गई और देखा कि पिता जी एक जीना चढ़ लेने

के बाद दूसरी छत के जीने पर पाँव रख चुके थे। राधा फौरन ही बोल उठी—'पिता जी, आप ऊपर क्यों चले आए हैं ?'

उसके पिता जी जानते थे कि वह दमे के मरीज थे और उनके लिए जीना चढ़ना अच्छा नहीं था, फिर भी आज वह इतने खुश थे और उत्साह में भरे हुए थे कि वह भी छत की ऊँचाई तक पहुँचने की चेष्टा कर रहे थे। उन्होंने नीचे से ही मुस्करा कर उत्तर दिया—'बेटी, स्वास्थ्य अच्छा न होने पर भी न-जाने क्यों मेरे मन में इच्छा हो रही है कि मैं उस ऊँची छत पर अपनी बेटी के साथ खड़ा हो सकूँ। " तुम मेरी इस इच्छा पर हँसोगी, परन्तु·····'

राधा हाथ से इशारा करते हुए बोली—'आप रुके रहिए मैं अभी आपको सहारा देने के लिए आती हूँ।'

यह कह कर वह जल्दी-जल्दी नीचे उतरी और अपने पिता जी का हाथ थाम लिया। बोली—'आप खामखा इतना कष्ट कर रहे हैं, आपको ऊपर नहीं आना चाहिए था।'

पिता जी ने हल्का-सा कहकहा लगाया—'बेटी, मैं तो नदी किनारे खड़ा सूखा पेड़ हूँ, भला कब तक जिये जाऊँगा ? अब तो जीवन में जो करना था वह कर चुका, सिवा इसके कि मौत का इन्तजार करूँ।'

राधा ने कुछ रूठ कर कहा—'क्यों ऐसी निराशा-भरी बातें करते हैं। ऐसे शब्द मुँह से न निकाला कीजिए क्योंकि मेरा मन उदास हो जाता है।'

'नहीं बेटी, उदास होने की क्या बात है। यह संसार तो एक सराय है जहाँ मुसाफिर कुछ दिन टिकते हैं, फिर अपनी मंजिल की ओर बढ़ जाते हैं। लाखों-करोड़ों मुसाफिर हमसे पहले आए और चले गए। हम भी एक रोज चल देंगे, हमारे बाद भी लाखों-करोड़ों लोग आयेंगे और चले जायेंगे। यही इस जिन्दगी का कानून है।—तुम तो इतनी पढ़ी-लिखी लड़की हो, ऐसी मामूली बातों को अच्छी तरह समझती हो। तुम्हें उदास हरगिज नहीं होना चाहिए !'

इस तरह बातें करते-करते वे दोनों छत पर पहुँच गए। उस ऊँचे स्थान से आत्माराम ने भी चारों ओर नजर दौड़ाई और उसने अपने मन में अजीब प्रकार का उत्साह महसूस किया।

राधा दो कदम आगे बढ़ गई। वह बड़ी खुश दिखाई दे रही थी। एक दम पलट कर बोली—'पिता जी, आज मैं सचमुच बहुत खुश हूँ।'

'सो तो मैं भी देख रहा हूँ बेटी !'

'आज यूँ महसूस करती हूँ जैसे कि बचपन से मैं इसी जगह रह रही हूँ। बीते हुए समय और वह स्थान जहाँ जीवन का काफी बड़ा हिस्सा गुजार चुकी हूँ दिमाग में धुँधला पड़ता जा रहा है। अब मैं अपने आपको इस जगह अपरिचित महसूस नहीं करती। यूँ लगता है कि इस स्थान से मेरा बहुत गहरा सम्बन्ध है।'

'ऐसा होना स्वाभाविक ही है क्योंकि वास्तव में यह तुम्हारी जन्म-भूमि भी है। यहीं पर तुमने पहली बार आँखें खोल कर संसार पर दृष्टि डाली थी।'

'वह सब तो मुझे याद नहीं, लेकिन पिता जी मैं वास्तव में इस स्थान से अपने आपको किसी तरह भी अलग नहीं समझती हूँ।'

'यह तो बड़ी खुशी की बात है।'

एक पल चुप रह कर राधा ने चारों ओर खेतों पर नजर डाली और फिर कहने लगी—'पिता जी, यहाँ के लोग भी बहुत अच्छे हैं। हो सकता है कि भविष्य में कुछ लोग मेरा विरोध करें, परन्तु इस समय तो मुझे वह बहुत ही भोले-भाले और सीधे-सादे नजर आते हैं !'

'हाँ बेटी, देहात में फिर भी सीधे लोग मिल जाते हैं। लेकिन शहरी लोगों के सम्पर्क में आने के बाद इन लोगों में भी कई त्रुटियाँ दिखाई देने लगी हैं। मेरा ख्याल है कि जो देहात अब भी शहरों से अलग हैं वहाँ के लोग तुम्हें सचमुच ही बहुत सीधे दिखाई देंगे।—

फिर भी तुम विश्वास रखो कि यदि तुम जरा होशियारी से काम लोगी, तो तुम्हें इन लोगों का पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा। बस इतना ख्याल रखो कि इनसे सीधी टक्कर न होने पाए। जो बात कहनी हो प्रेम से कहो और जो बात मनवानी हो वह भी प्रेम ही से मनवाओ। बुरे लोग यहाँ भी मिलेंगे, परन्तु उनसे भी झगड़ा करने की जरूरत नहीं। अपने प्रेम-भाव और सेवा-भाव से उन्हें भी अपना बनाया जा सकता है। जो कल तुम्हारा विरोध करेंगे, इसका यह अर्थ नहीं कि वह परसों भी तुम्हार विरोध करेंगे। अपने मन में विश्वास रखो कि यदि तुम्हारे हृदय में कोई पाप नहीं है और किसी के प्रति घृणा नहीं है तो तुम्हें घृणा करने वाला भी एक रोज प्यार का हार बढ़ाने पर मजबूर हो जायगा।'

'मैं आपकी बताई हुई बातों का ख्याल रखूंगी। आप तो मेरे साथ हैं ही इसलिए मुझे आपसे प्रकाश मिलता रहेगा।'

'अवश्य।'

'वैसे पिता जी हमारा यह जलसा तो बहुत सफल रहा····क्यों आपका क्या विचार है ?'

'मैं भी यह समझता हूँ कि जलसा बहुत सफल रहा। अच्छा ही किया जो हमने जलसे की योजना बनाई, क्योंकि हमारा सबसे परिचय भी हो गया और जनता को न केवल हमारी योजनाओं का पता चल गया, बल्कि हम उनकी सहानुभूति और सहयोग प्राप्त करने की आशा भी रख सकते हैं।'

'आपने ठीक कहा····अब तो मुझे आशीर्वाद दीजिए ताकि मैं अपने इस कार्य में सफल रहूँ।'

'बेटी, मेरे शरीर का रोआँ-रोआँ तुम्हें आशीर्वाद देता है। मैं समझता हूँ कि मैं अपनी बेटी पर जितना भी अभिमान करूँ, उतना ही कम है।'

'नहीं पिता जी, यह अभिमान वाली बात मत कहिए। भला अभी मैंने क्या करके दिखाया है जो आप मुझ पर अभिमान महसूस कर रहे

हैं। हाँ, जिस दिन मैं सफलता की मंजिल तक पहुँच जाऊँगी, तो आप बेशक मुझ पर अभिमान कर लीजिएगा।'

आत्माराम ने प्यार से अपनी बेटी के सिर पर हाथ रखते हुए कहा—'मुझे अब भी तुम पर अभिमान है। बेटी! तुमने ऐसा त्याग किया है कि हजारों-लाखों लड़कियों में से एक आध ही ऐसा त्याग कर सकती है—भला उस बाप को अभिमान क्यों न हो, जिसकी ऐसी बेटी हो।'

कुछ देर और बाप-बेटी भविष्य के बारे में बातें करते रहे। अँधेरा हो जाने पर वह छत से नीचे चले आए।

तेरह...

दूसरे ही दिन से राधा ने गाँव के हर घर में जाना आरम्भ कर दिया। वह देहाती औरतों को उनके घरों में देखना चाहती थी। वह कैसे अपनी गृहस्थी चलाती हैं, कैसे घर की सफाई करती हैं, और कैसे बच्चों की देखभाल करती हैं। वह यह सब कुछ अपनी आँखों से देखना, जानना और समझना चाहती थी; ताकि वह उन औरतों को नई-नई बातें बता सके और उनके जीवन में नये-नये रंग भर सके।

जलसा करने का एक बड़ा फायदा यह भी हुआ था कि हर घर की औरत उसे पहचानती थी। उसे अपना परिचय देने की भी जरूरत महसूस नहीं होती थी। सभी औरतें जानती थीं कि वह क्या करना चाहती है, और उनके मन में राधा के प्रति प्रेम और आदर की भावना भी थी। इसीलिए वह जिस घर में जाती, वहाँ की औरतें दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते करतीं और उसके बैठने के लिए चारपाई बिछा देतीं या उसे चौकी, पीढ़ा आदि पर बिठातीं। वह उसकी हर बात कान धर कर सुनतीं और उनकी आँखों से इस बात का साफ पता चलता था कि वे उसकी हर आज्ञा का पालन करना अपना धर्म समझती हैं। इससे राधा का साहस और बढ़ा।

राधा जिस घर में जाकर बैठती तो वह ध्यान से चारों ओर देख भी लेती। कौन औरत घर की सफाई का कितना ख्याल रखती है। किसके बच्चे कितने साफ सुथरे हैं और किसके बच्चे गन्दे हैं। किसके बच्चे तमीज से बोलते हैं और किसके बच्चे गालियाँ बकते हैं। राधा ने इस बात का भी निश्चय कर रखा था कि पहले-पहल वह उनकी कड़ी आलोचना नहीं करेगी क्योंकि वह जानती थी कि हर मनुष्य आलोचना

से घबड़ाता है। वह यह भी नहीं चाहती थी कि वह औरतें अपने आपको मूर्ख महसूस करें क्योंकि इस तरह उनके अन्दर आत्म-विश्वास नहीं रह सकता था। बिना आत्मविश्वास के कोई मनुष्य उन्नति भी नहीं कर सकता। इसीलिए राधा ने पहले चुपचाप उनको अध्ययन कर लेना ही उचित समझा क्योंकि उसकी योजना यह थी कि वह उन औरतों से ऐसा व्यवहार करे जिससे वह उसे अपनी सखी और हमदर्द समझने लगें और बिना कड़ी आलोचना के वह उसके सुझाव स्वीकार करती हुई अपने जीवन में परिवर्तन ला सकें।

कुछ दिन तक तो राधा इसी तरह सब औरतों के घरों में जाती रही और जब शाम को वह अपने घर में अकेली बैठती तो एक कापी में दिन भर की देखी-समझी हुई बातों को लिखती। वह इस बात का भी निर्णय करती कि अपने गाँव में किस प्रकार के सुधार करने की आवश्यकता है। इस तरह धीरे-धीरे उस गाँव की जरूरतों का पूरा चित्र उसकी आँखों के आगे आ गया, तब उसने मन में तय किया कि औरतों की शिक्षा का प्रबन्ध करने से पहले उसे एक बार फिर उन औरतों को अपने यहाँ बुलाना चाहिए। वह कोई बहुत बड़ा जलसा नहीं करने जा रही थी, उसने केवल इतना ही सोचा कि अभी वह अधिक आयु की औरतों को न बुलाकर उन्हीं को बुलाए जिनकी आयु अभी कम है क्योंकि बड़ी-बूढ़ी औरतों का नयी शिक्षा प्राप्त करना और नये ढंग अपनाना असम्भव था। उनकी आदतें जैसी बननी थीं, बन चुकी थीं। ऐसी औरतों के साथ सिर खपाना बेकार था। वह चाहती थी कि अधिक से अधिक चालीस-पैंतालीस वर्ष की केवल कुछ औरतों को वह बुला लेगी, परन्तु उनमें अधिकांश बीस से तीस वर्ष की औरतें ही होंगी। अभी वह इस सम्मेलन में कुवाँरी लड़कियों को भी नहीं बुलाना चाहती थी। अच्छी तरह सोच-विचार करने के बाद उसने औरतों से इस बात का जिक्र किया तो वह फौरन ही तैयार हो गईं। बैठक का समय दोपहर को ही रखा गया जबकि औरतें घर के कामों से फुरसत पाकर

कुछ देर आराम कर सकती हैं। सारी औरतें बड़े हाल में एकत्र हो गईं। उनकी संख्या साठ के लगभग थी।

राधा को यह सब बहुत अच्छा लगा। यूँ मालूम हो रहा था कि जैसे वह एक बहुत बड़ा खानदान है जिसमें वे सब शामिल हों। अगरचे उन सब औरतों में सबसे कम उम्र राधा की ही थी, किन्तु वह औरतें उसे यूँ देख रही थीं जैसे वह उन सब में बड़ी हो। राधा को यूँ भी लगा कि इन औरतों के सम्मेलन में वह बिना संकोच अपने मन की बात कह सकेगी। औरत औरत के मन को अच्छी तरह समझती है इसलिए उसे अपनी बात समझाने और उन औरतों की समस्याओं को समझने की सुविधा रहेगी।

इतने दिनों में उसने इतनी जाँच भी कर ली थी कि उनमें से कौन-कौन-सी औरत दूसरी औरतों से ज्यादा तीव्र बुद्धि की थीं। राधा ने मन में सोच लिया था कि वह औरतें बहुत जल्द ही उसकी शिक्षा को अपना लेंगी—और फिर उन्हीं औरतों के द्वारा दूसरी औरतों को शिक्षा देने का या उनकी सहायता करने का कार्य वह करा सकती थी। उसने उन खास औरतों के नाम भी याद कर लिये थे अर्थात् रन्नो, कल्लो, जमुना, सत्ती, चमेली, बेला आदि। सब औरतें फर्श पर बिछी हुई दरी पर बैठ गईं और राधा उनके सामने बैठ गई। कुछ औरतों की गोद में उनके छोटे-छोटे बच्चे थे जो चाय पीकर चुपचाप सोये पड़े थे। इतनी औरतों का वहाँ इकट्ठा हो जाना ही इस बात का प्रमाण था कि उनको राधा से कुछ न कुछ प्रेम तो जरूर था और वह उसकी बातें भी सुनना चाहती थीं। राधा मन ही मन बहुत खुश हो रही थी क्योंकि उसे यूँ महसूस होने लगा कि जैसे उसने सफलता की पहली सीढ़ी तय कर ली है। यदि वह औरतें उसकी ओर ध्यान न देंती, तो उसे कितना दुःख होता और उनके वहाँ आ जाने से उसकी एक बहुत बड़ी कठिनाई दूर हो गई। अपने मन में इसी प्रकार की बातें सोच कर वह मुस्कराने लगी।

उसे इस तरह चुपचाप मुस्कराते देख कर बेला से न रहा गया। उसने पूछ ही डाला—'बहन जी, आप किस बात पर मुस्करा रही हैं ?'

राधा एकदम चौंक गई। उसके ध्यान में यह बात आई ही नहीं थी कि वह मुस्करा रही थी। वह इस प्रश्न का जल्दी में कुछ उत्तर भी न दे पाई थी कि बेला ने फिर कहा - 'आप यही सोच कर मुस्करा रही होंगी कि कैसी-कैसी मूर्ख देहातिनें यहाँ इकट्ठा हो गई हैं....'

राधा हड़बड़ा गई, जल्दी से बोली—'नहीं, आप लोगों के मन में यह विचार क्यों आया ? ऐसा तो मैंने सोचा भी नहीं था। रही मुस्कराने की बात तो उसके बारे में मैं केवल इतना कह सकती हूँ कि मुझे इस बात का पता ही नहीं चला कि मैं मुस्करा रही हूँ—मैं तो केवल इतना जानती हूँ—आप सब बहनों को अपने यहाँ पर देखकर मेरा मन गद्‌गद् हो उठा, शायद इसीलिए अनजाने में मेरे होठों पर मुस्कान आ गई होगी।'

चमेली भी बेला की तरह बड़ी चुलबुली थी, फौरन ही बोल उठी—'चलिए राधा जी, जो बात आप कह रही हैं हम उसे सच माने लेते हैं—आप चाहे कहें या न कहें परन्तु हम सब जानती हैं कि हम अनपढ़ और मूर्ख हैं....'

राधा ने मुस्करा कर कहा—'नहीं नहीं, आप अपने सम्बन्ध में ऐसी बातें न कहिए। मैं आपको मूर्ख बिल्कुल नहीं समझती हूँ। यदि आप मूर्ख होतीं तो मेरे पास आने का कष्ट नहीं करतीं। रही अनपढ़ होने की बात....तो उस सम्बन्ध में मुझे केवल इतना ही कहना है कि यदि आप अनपढ़ हैं, तो इसमें आपका क्या दोष है। जब किसी ने आपको पढ़ाया ही नहीं तो आप क्या कर सकती हैं—परन्तु यह बात याद रखिए कि ज्ञान ऐसी वस्तु है जिसे जीवन में कभी भी प्राप्त किया जा सकता है। आपकी यह उत्सुकता देखकर तो मुझे विश्वास हो गया है कि आप शीघ्र ही पढ़-लिख जायँगी। पढ़ाई के अतिरिक्त आप कई और

बातें भी सीख जायँगी जिनका जानना आपके लिए आवश्यक है। मुझे तो आप में से कोई भी बहन ऐसी दिखाई नहीं देती जिसके बारे में पूर्ण विश्वास के साथ मैं यह कह सकूँ कि वह कुछ भी न सीख पाएँगी।'

राधा की यह बातें सुन कर सभी औरतें बड़ी प्रसन्न हुईं। तब सत्ती बोली – 'बहन जी, हमने तो पहले दिन जब आपका भाषण सुना तो हम अपने आपको भी भूल गईं। सभी बातें नई-नई-सी थीं। इसके साथ ही हमारे मन में इस बात की भी उत्सुकता हुई कि हम भी आपसे कुछ प्राप्त कर सकें! उस दिन के बाद आप अक्सर हमारे घरों में आतीं और आप का प्रेम-भरा व्यवहार देख कर हमारा मन और भी खुश हुआ। जब आप हमारे घरों में घूम-फिर कर लौट आती थीं, तो हम सब मिल-जुल कर आपकी बातें करती थीं··· मेरे ख्याल में यही कारण है कि आज जब आपने हमें बुलाया तो हम सब बड़े शौक से इतनी बड़ी संख्या में आपके पास चली आईं।'

राधा ने सत्ती की बातों को बड़े ध्यान से सुना और फिर बोली— 'सचमुच ही इस समय मैं खुशी से फूली नहीं समाती – मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि अपने गाँव की बहनों से मुझे इतना प्रेम, इतनी सहानुभूति और इतना उत्साह प्राप्त होगा।—मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि मेरे मन में आपके प्रति जितनी श्रद्धा और सहानुभूति है उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकतीं।'

अब जमुना बोली—'हम तो इसे अपना सौभाग्य समझती हैं कि आप अपने जीवन की खुशियों का बलिदान करके हमारे पास आई हैं। आज-कल का समय ऐसा है कि कोई किसी के दुख में साथ नहीं देता, परन्तु एक आप हैं कि हम गरीबों के लिए अपना जीवन अर्पण कर रही हैं। हमसे आपको कुछ भी नहीं मिलेगा। न आपको हमसे कोई लाभ ही होगा···फिर भी आप हमारे लिए इतना कुछ करने जा रही हैं; तो यह कोई मामूली बात नहीं है। हर कोई आप की तरह नहीं कर सकता।'

यह बातें सुन कर राधा का मन भर आया और वह भरे गले से बोली—'कौन कहता है कि आप मूर्ख हैं····मैं तो समझती हूँ कि आप देवियाँ हैं। भगवान से यही प्रार्थना है कि वह मुझे इतनी शक्ति दें कि मैं आपकी कुछ सेवा कर सकूँ।'

सभी औरतें राधा की इस भावना से प्रभावित हुईं। उनके चेहरों से साफ दिखाई दे रहा था कि उनके मन में राधा के लिए कितना आदर और कितना प्रेम है! राधा फिर बोली—'बहनो, जो स्त्रियाँ और मनुष्य पढ़-लिख कर दूसरों से अधिक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं उन्हें घमंड करने का कोई अधिकार नहीं। यह तो हमारे समाज का दोष है। हमारे समाज का ढाँचा ही ऐसा है कि लोग शिक्षा पा तो सकते हैं, परन्तु अधिकांश थोड़ा-बहुत लिखना-पढ़ना भी नहीं सीख सकते। हालाँकि यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि हर स्त्री-पुरुष को ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए—क्योंकि उनका यह हक है। चुनांचे जो लोग पढ़-लिख जाते हैं उन्हें घमंड करने के बजाय अपना ज्ञान दूसरों तक पहुँचाने की चेष्टा करनी चाहिए। इसीलिए मैंने सीमित रूप में इसका बीड़ा उठाया है। आखिर मुझ जैसी एक लड़की कितने लोगों को पढ़ा-लिखा सकती है? यह तो हमारे समाज और हमारी सरकार का कर्त्तव्य है कि वह पाठशालाएं खोले, बड़े-बड़े कालेज खोले और इसमें देश के हर बच्चे को ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिले—खैर, वह कार्य तो होता ही रहेगा। मैं तो केवल इतना ही कहती हूँ कि पढ़े-लिखे लोगों को अपने तौर से इस शुभ काम को कर डालना चाहिए। विशेषकर स्त्रियों में ज्ञान की बहुत कमी है। स्त्री होने के नाते से मैं अपना कार्य स्त्रियों से ही शुरू करना चाहती हूँ। यदि मुझे पुरुषों का सहयोग मिला तो मैं उन्हें भी शिक्षा देने में संकोच नहीं करूँगी।

आपको शिक्षा देने का अर्थ केवल यही नहीं है कि आपको हिन्दी पढ़ना-लिखना आ जाय या आप थोड़ा बहुत हिसाब-किताब सीख जायँ—यह तो होगा ही, परन्तु मैं चाहती हूँ कि आपके ज्ञान में न

केवल बढ़ोत्तरी हो, बल्कि आपको ठीक प्रकार का ज्ञान प्राप्त हो। इसके सम्बन्ध में जब बड़ा जलसा हुआ था तो मैंने कुछ बातें कही थीं। हो सकता है कि अब मैं उन्हीं बातों में से कुछ दोहरा भी दूँ, परन्तु इसमें कोई हर्ज की बात नहीं। इसलिए कि वह बातें ऐसी हैं कि उन्हें बार-बार समझाने की जरूरत हो सकती है। आप यह बात भी न भूलिए कि हर अनपढ़ मनुष्य में भी कुछ न कुछ ज्ञान अवश्य होता है। चाहे वह ज्ञान अधूरा हो या गलत हो····परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इसी ज्ञान के बूते पर हर स्त्री-पुरुष जीवन का एक दृष्टिकोण बना लेते हैं। इसी दृष्टिकोण को अपने सम्मुख रख कर वह अपना जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु सोचने की बात यह है कि यदि वह ज्ञान अधूरा या गलत होता है तो उसका प्रभाव मनुष्य के सारे जीवन पर ही पड़ता है। यह भी याद रखने की बात है कि ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जिन्हें सही प्रकार का ज्ञान प्राप्त हो—जभी तो हम देखते हैं कि हमारे जीवन अधूरे हैं और हम असफल रह जाते हैं। हमारे जीवन दुखों से भर जाते हैं। बाप की बेटी से नहीं बनती! बेटा बाप को अच्छा नहीं समझता। सास बहू से घृणा करती है, बहू सास को जालिम समझती है। पति पत्नी से खुश नहीं, पत्नी को पति का प्रेम नहीं मिल पाता। भाइयों-भाइयों, तथा पड़ोसी-पड़ोसी में लात-जूता चलते हैं—अब प्रश्न उठता है कि यह सब कुछ क्यों होता है ?··· यदि आपसे यह प्रश्न करूँ तो आपके उत्तर भिन्न-भिन्न होंगे। मेरा ख्याल है कि आप में से हर एक के उत्तर में कुछ न कुछ सत्य अवश्य होगा, परन्तु यदि आप ही मुझसे यह प्रश्न करें तो जानती हैं कि मेरा उत्तर क्या होगा ? मैं आपको बताती हूँ—मेरे विचार में इन सब दुःखों की जड़ माँ होती है। मैं यह नहीं कहती कि इन दुखों का एकमात्र वही कारण है—मैं तो केवल इतना समझती कि मूलरूप से माँ ही के कारण यह दुःख फैलते हैं।

पिछले बड़े जलसे में मैंने इसी सत्य की ओर संकेत करते हुए माँ की महिमा बताई थी। केवल बच्चे जनने से ही कोई स्त्री माँ नहीं बन

जाती। मेरा कहने का उद्देश्य यह है कि बच्चे को जन्म दे देने से कोई स्त्री यह न समझे कि उसने अपने कर्त्तव्य का पालन कर दिया। हरगिज नहीं, बच्चे के जन्म के बाद बच्चे के जीवन को बनाने की पूर्णरूप से चेष्टा करना माँ का कर्त्तव्य है। यूँ तो विशेष रूप में माँ की जरूरत उस समय पड़ती है जब बच्चा बड़ा हो रहा होता है। परन्तु वास्तव में माँ का कर्त्तव्य यह है कि जब तक वह जीती रहे, तब तक बच्चों के जीवन में प्रकाश फैलाती रहे।

मैं जानती हूँ कि आप में से हर कोई मुझसे सहमत होंगे क्योंकि कौन ऐसी माँ हो सकती है जिसे अपने बच्चे प्यारे न हों और जो यह न चाहती हो कि उसके बच्चे बड़े होकर नाम पैदा करें या कम से कम एक सफल जीवन व्यतीत करें।" परन्तु यहीं पहुँच कर हमें एक बहुत बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है" वह कठिनाई क्या है?—कठिनाई यह है कि जब माँ ही को ज्ञान प्राप्त न हुआ हो, जब माँ ही का जीवन सफल न हो, जब माँ ही को इस बात का पता न हो कि बच्चे को किस प्रकार की शिक्षा मिलनी चाहिए ताकि वह अपने जीवन को सफल बना सके····तो फिर केवल माँ बन जाने से तो सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। इसीलिए मैं कहती हूँ कि केवल बच्चे को जन्म दे देने से, और अपना अधूरा और गलत ज्ञान देने से बच्चे का जीवन बनने के बजाय बिगड़ जाता है। उसका जीवन सफल होने की जगह असफल हो जाता है। इसीलिए बच्चा जब बड़ा होता है, तो अपने व्यवहार से मुसीबत मोल लेता है और दुख फैलाता है। अब आपको इस बात का कुछ अन्दाजा लगेगा कि माँ बनने के लिए किसी भी स्त्री को काफी तैयारी की जरूरत है। उसे बहुत-सी बातें जानने की जरूरत है। अँग्रेजी भाषा में एक कहावत है कि स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ दिमाग हो सकता है—अर्थात् स्वस्थ बुद्धि के लिए शरीर का स्वस्थ होना भी आवश्यक है। परन्तु इस गाँव के घरों को इतने दिनों तक देखने के बाद मैंने यही नतीजा निकाला है कि स्वस्थ रहने के लिए और

बच्चों को बिमारियों से बचाने के लिए जिस ज्ञान की आवश्यकता है, उसकी आप लोगों में बहुत कमी पाई जाती है। मेरी इस बात का आप बुरा न मानें, क्योंकि मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि इसके लिए आपको दोषी नहीं ठहराया जा सकता। आपको जितना ज्ञान प्राप्त हुआ, आप उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं और उसी के अनुसार आप अपने बच्चों की देखभाल कर रही हैं और उन्हें शिक्षा दे रही हैं।

ऊपर कही बात स्वीकार कर लेने के बाद हमें चुप नहीं बैठ रहना चाहिए। यह सब बातें कहने का उद्देश्य ही यह है कि हम एक बार अपनी त्रुटियों को समझ लेने के बाद उन्हें दूर करने की चेष्टा करें। बस, इसीलिए मैं आप लोगों के बीच में आई हूँ और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप भी मुझे सहयोग देकर मेरे कार्य को सफल बनाने की कोशिश करेंगी।'

बातें करते समय राधा की दृष्टि उन औरतों पर भी लगी हुई थी। वह लगातार महसूस कर रही थी कि सब औरतों के मन पर उसकी बातों का गहरा प्रभाव पड़ रहा है, तब उसने कुछ समय तक चुप रहने के बाद कहा--'बहनो! आज मैं इस गाँव में अपने आदर्शों का यह एक छोटा-सा पौधा लगाने जा रही हूँ, इस विश्वास के साथ कि एक रोज यही पौधा बढ़ कर पेड़ बन जायगा। बिल्कुल ऐसा ही जैसा हमारे गाँव के बाहर बड़ का पेड़ है। कई वर्षों पहले यह पेड़ भी एक छोटा-सा पौधा रहा होगा, परन्तु आज हम देखती हैं कि इसका तना बहुत मोटा है और बड़े-बड़े पत्तों वाली इसकी शाखाएँ दूर-दूर तक फैली हुई हैं। अब इसकी बड़ी और घनी छाँव के नीचे बारात भी ठहर सकती है। इसी विश्वास को सम्मुख रखते हुए आपको और मुझे अपना कार्य करना होगा।'

अब राधा चुप हो गई। उसकी आँखों से यही दिखाई दे रहा था कि अब वह इस बात की प्रतीक्षा में थी कि वहाँ बैठी हुई औरतें भी

अपनी राय दें। इस पर जमुना बोली – 'हम सबको आपकी यह सब बातें बहुत ही भली लगीं और हम आपके साथ मिलजुल कर आपकी इस योजना को सफल बनाने के लिए उत्सुक हो रही हैं।'

राधा ने कहा—'मैं भी यही महसूस कर रही हूँ कि बातें तो काफी हो चुकीं अब हमें अपना काम आरम्भ कर देना चाहिए। वैसे बातें भी जरूरी थीं क्योंकि जब तक आप यह अच्छी तरह समझ न लें कि हमें किस मार्ग पर चलना है और किस मंजिल तक पहुँचना है, तब तक कुछ करना बेकार है। अब चूँकि आप सारी बातें समझ गई हैं इसलिए मेरे विचार में अब समय आ गया कि हम कार्य शुरू कर दें। हाँ, आप में से किसी के मन में कोई प्रश्न उठे, तो वह मुझसे बेशक पूछ सकती हैं।'

यह कह कर राधा ने सब पर नजर दौड़ाई। लगता था किसी को प्रश्न नहीं पूछना है। फिर बेला कहने लगी—

'राधा बहन, हममें से किसी को कोई प्रश्न नहीं पूछना। अब तो हम केवल इतना जानना चाहती हैं कि यह कार्य किस ढंग से और किस दिन से शुरू होगा ? हम यह भी जानना चाहती हैं कि जो आदर्श आपने हमारे सम्मुख रखा है, उसे पूरा करने के लिए आपने कौन-सी योजना बनाई है ?'

राधा ने उत्तर दिया—'आपने यह बहुत अच्छा प्रश्न किया है। इस सम्बन्ध में मैं थोड़ा-बहुत कह भी चुकी हूँ, किन्तु मेरे विचार में अब आप वास्तविक रूप में जानना चाहती हैं कि मैं किस तरह से इस कार्य को करना चाहूँगी। इस सम्बन्ध में आपके सम्मुख मैं दो-चार बातें रखती हूँ। पहली तो यह कि आपकी विद्या के अनुसार आपको पढ़ाने-लिखाने का कार्य प्रारम्भ किया जायगा। इसके लिए आपको दो गुटों में बाँट दिया जायगा। एक गुट तो उन स्त्रियों का होगा जो पढ़ना-लिखना बिल्कुल ही नहीं जानतीं। दूसरा गुट उन स्त्रियों का जो थोड़ी-बहुत पढ़ी-लिखी हैं। अनपढ़ों को आरम्भ से पढ़ाया जायगा और जो

पढ़ी-लिखी हैं उनकी योग्यता देखते हुए उनकी योग्यता और बढ़ाने की चेष्टा की जायगी ।'

शीलो बोली—'यह तो बहुत अच्छी बात है । जब हमारी बहनें पढ़-लिख जायेंगी, तो फालतू समय में बेकार गप्पें मारने और एक दूसरे की चुगलियाँ करने के बजाय धार्मिक पुस्तकें ही पढ़ा करेंगी ।'

इस पर सभी औरतें हँस दीं और राधा भी हँसते हुए बोली—'फालतू समय के लिए मेरा एक प्रोग्राम है । यही दूसरी बात है जो मैं आपसे कहने जा रही थी । पढ़ाई-लिखाई के अलावा सीने-परोने तथा कढ़ाई का काम भी आप लोगों को सिखाया जायगा । यह काम सीख कर आप घर की चादरों और गिलाफों या साड़ियों पर कढ़ाई कर सकेंगी ।'

चमेली खुश होकर बोली—'यह तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि कढ़ाई के साथ-साथ हम बातें भी तो कर सकती हैं ?'

चमेली की इस बात पर एक बार फिर कहकहा गूँज उठा और कुछ स्त्रियाँ एक साथ बोल उठीं—'राधा बहन, चमेली को बातें करने का बहुत शौक है । वह चाहती हैं कि हाथ चलाने के साथ-साथ जुबान भी चलती रहे ।'

राधा ने दोनों हाथ उठाकर सब को चुप रहने का इशारा किया । जब सब चुप हो गईं, तो वह बोली—'अब तीसरी बात सुनिए—वह यह कि आप लोगों को घर की सफाई के तरीके बताये जायेंगे । अक्सर देखने में आता है कि गन्दगी से कई प्रकार के रोग फैलते हैं । आपको इनके बारे में बताया जाएगा—मकान की सफाई, खाने की सफाई, कपड़ों की सफाई, बच्चों की सफाई आदि । इसके साथ ही यह भी बताया जायगा कि बच्चों का पालन-पोषण किस प्रकार से होना चाहिए । यदि स्त्रियाँ इस कला से जानकारी रखती हैं, तो उनके बच्चे अभी से सुधर जाने से बड़े होकर भी अच्छे नागरिक बन सकेंगे—यहाँ तक क्या आप मेरी बातें समझ गई हैं ?'

बहुत-सी औरतों ने ऊँचे स्वर में कहा—'जी हाँ, हम समझ गई हैं।'

राधा—'तो अब चौथी बात सुनिए। वह यह है कि सभी बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का प्रबन्ध किया जायगा। इसका उद्देश्य केवल यही नहीं है कि बच्चे थोड़ा-बहुत लिख-पढ़ जायँ। इसका उद्देश्य यह है कि जिन बच्चों में आगे बढ़ने की योग्यता हो उन्हें ऊँची से ऊँची शिक्षा दिला कर ऊँचे से ऊँचे पद तक पहुँचाया जाय।'

सत्ती गम्भीरता से बोली—'बहन जी, यह तो बहुत ही आवश्यक बात है। हमारे मुन्ने के पिता तो इन्हीं विचारों के हैं। वह कहते हैं कि यदि भगवान उन्हें धन दे, तो वह बच्चों को ऊँची से ऊँची शिक्षा दिला कर उनके जीवन को सफल बना दें।'

राधा—'बहुत अच्छी बात कही आपने। हर पिता के यही विचार होने चाहिए। अच्छा तो अब मैं आपको यह भी बता दूँ कि मेरा यह इरादा है कि बड़े पुरुषों की शिक्षा का भी प्रबन्ध किया जाय····परन्तु यह बाद की बातें हैं। पहले ऊपर कही बातें पूरी हो जायँ, तो फिर कभी बड़ों की शिक्षा का कार्य भी आरम्भ किया जायगा।'

बेला ने कहा—'राधा बहन, आपने यह भी तो कहा था कि आप रोगियों का इलाज भी किया करेंगी?'

राधा—'हाँ-हाँ, मैं वही बताने जा रही थी। मैं एक छोटी-सी डिस्पेन्सरी यानी औषधालय भी चलाऊँगी। इसमें छोटे-मोटे रोगों का इलाज भी किया जायगा।'

सब औरतों को यह बात भी पसन्द आई। तब राधा ने कहा—'अब काफी समय बीत चुका। आपको भी घर के काम करने होंगे। इसलिए अब इस बैठक को समाप्त करना ही उचित होगा। परन्तु ऐसा करने से पहले मैं आपसे यह जानना चाहती हूँ कि आपके पास फुर्सत

का कौन-सा समय है जब आप मेरे पास आ सकेंगी, क्योंकि स्त्रियों का प्रोग्राम बहुत शीघ्र यानी कल या परसों से शुरू करने का विचार है।'

आपस में सलाह-मशवरा के बाद यही बात तय पाई कि दोपहर का समय ठीक रहेगा क्योंकि उस समय सबको फुरसत होती है।

जब यह बात तय हो गई, तो सब औरतें खुश-खुश अपने घरों को चली गईं।

चौदह...

इस जलसे के तीसरे दिन औरतों ने दोपहर को आना शुरू कर दिया। सुबह नौ बजे के निकट बच्चे आते थे। अभी बच्चों की पाठशाला ठीक तरीके से शुरू नहीं की गई थी, फिर भी उनको थोड़ा-बहुत तैयार करने के लिए राधा एक-डेढ़ घंटे तक पढ़ाती। सुबह साढ़े सात से नौ तक रोगियों का इलाज होता। राधा ने शहर के एक तजुर्बेकर बूढ़े कम्पाउण्डर को गाँव में बुला लिया था। उसका नाम ज्वाला प्रसाद था वह एक सुप्रसिद्ध बंगाली डाक्टर के साथ बीस वर्षों तक काम कर चुका था इसलिए वह भी किसी डाक्टर से कम नहीं था। उसने डाक्टरी पास नहीं की थी, बड़ी-बड़ी पुस्तकें नहीं पढ़ी थीं, फिर भी रोगियों के इलाज का उसे बहुत बड़ा तजुर्बा था। उसका मालिक बंगाली डाक्टर मन का साधू था। जो धनी उसे रुपया दे सकते उनसे वह ले लेता, परन्तु जो गरीब पैसा नहीं दे सकते थे उनका इलाज वह मुफ्त करता था। ज्वाला प्रसाद उसके यहाँ कम्पाउण्डर था, लेकिन डाक्टर साहब हर रोग और उसके इलाज के बारे में उसे सब कुछ बता देते। वह उससे कहते कि मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे तजुर्बे से फायदा उठाओ, ताकि मेरी मृत्यु के बाद भी तुम अपना पेट पाल सको। ज्वाला प्रसाद होशियार आदमी था। उसने काफी दिलचस्पी से काम किया जिसके फलस्वरूप अब वह भी रोगियों के रोग दूर कर सकता था। यूँ तो वह चाहता तो हर महीने काफी रुपया पैदा कर सकता था, परन्तु वह राधा के पिता जी को जानता था। उन्हीं की जबानी जब उसे राधा की योजना का पता चला, तो उसने अलग से काम करने का विचार मन से निकाल दिया और राधा के

पास चला आया। वह पचास साल का हो चुका था। उसके दो लड़के पढ़-लिख कर नौकरी कर रहे थे और अपने बाल-बच्चों के साथ खुशी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। एक लड़की थी सो उसकी शादी हो चुकी थी और वह भी अपने घर में खुश थी इसीलिए ज्वाला प्रसाद ने सोचा कि अब उसे अलग से रुपया कमाने की जरूरत न थी। वह बड़े आराम से राधा की योजना में भाग ले सकता था। उसके जरूरी खर्चों के लिए तो उसकी तनख्वाह बाँध दी गई थी। भगवान ने उसकी स्त्री को अपने पास बुला लिया, परन्तु उसकी गृहस्थी सफल बन चुकी थी। भला अब अधिक लोभ करने का क्या फायदा ? वह राधा बिटिया के साथ रहेगा और उसे सहयोग कर, देश की सेवा करेगा। जो समय बचेगा भगवान के नाम का जाप करेगा।

राधा की भी यह खुशकिस्मती थी कि उसका साथ ऐसे निर्लोभ व्यक्ति दे रहे थे। उसके मन में पहले जरूर कुछ घुटन-सी थी कि मैं डिस्पेन्सरी का काम बहुत अच्छी तरह न चला सकूँगी। डाक्टरी में उसका ज्ञान बहुत कम था, परन्तु जब ज्वाला प्रसाद आ गया तो निश्चिन्त हो गई।

सुबह साढ़े सात से नौ तक राधा ज्वाला प्रसाद का हाथ बँटाती। वह मरहम-पट्टी करना तो जानती ही थी, इसलिए ज्वाला प्रसाद का काफी समय व श्रम बच जाता। नौ बजे बच्चे पढ़ने आते। राधा केवल पढ़ाई का काम नहीं करती थी, बल्कि वह बच्चों का मन बहलाने के लिए उन्हें कहानियाँ भी सुनाती थी। उसने उन्हें बातों ही बातों में सारी रामायण और सारी महाभारत सुना डाली। वह उन्हें अच्छी-अच्छी बातें समझाती, उन्हें अच्छे बच्चे बनने की शिक्षा देती। बच्चों को खाने-पीने को भी मिलता। यदि उनमें से किसी को नींद आ जाती, तो उसे वह सुला देती। इन सब बातों का नतीजा यह निकला कि बच्चे राधा के पास आने के लिए उत्सुक रहते और वह सुबह समय से कुछ पहले ही एकत्र हो जाते।

राधा भी यही चाहती थी कि बच्चे आवारागर्दी भूल कर एक ढंग से बैठना और सभ्य तरीके से बातचीत करना तथा साफ-सुथरा रहना सीख जायँ।

साढ़े दस के लगभग वह बच्चों की छुट्टी कर देती और गाँव में प्रवेश करती। एक दिन में वह केवल दो-तीन घरों में जा पाती, क्योंकि अब वह हर घर में काफी समय लगाती। इस तरह धीरे-धीरे उसने गाँव के सभी घरों में जा-जाकर औरतों को गृहस्थी की सब जरूरी चीजें समझा दीं। बातें छोटी-छोटी थीं, परन्तु उनका सुधार हो जाने पर गाँव की काया-पलट ही हो गई। उसने स्त्रियों को इस बात से मना कर दिया कि वह अपने घरों का कूड़ा-कबाड़ सेहन में या गली में न फेंकें, बल्कि हर औरत घर का कूड़ा गाँव के बाहर फेंक आए। उसने उन्हें समझाया कि गाँव की नालियों की सफाई करना भी उनका कर्त्तव्य है। यदि हर औरत अपने घर के सामने की गली को साफ रखेगी, तो इससे गाँव की सारी गलियाँ साफ रह सकेंगी। हर सप्ताह हर औरत को अपने घर की दीवारों को ऊपर से नीचे तक लीपना पड़ता था। सफाई की इस भावना का नतीजा यह निकला कि थोड़े ही दिनों में सारा गाँव जगमग-जगमग करने लगा।

गाँव की सफाई हो चुकी तो राधा ने गाँव वालों को समझाया कि मलेरिया बुखार कैसे फैलता है। हैजा और चेचक जिसे वह माता कहते थे आदि बीमारियाँ कैसे फैलती हैं। गाँव के आस-पास पानी के जितने गड्ढे थे उनमें राधा मिट्टी का तेल डलवा देती, ताकि पानी की सतह पर मच्छर अंडे न दे सकें, क्योंकि मच्छरों से ही मलेरिया फैलता था। राधा ने इस बात का प्रबन्ध भी कर दिया कि गाँव के हर घर में डी० टी० टी० का छिड़काव हो। उसने मच्छरदानी के गुण भी समझाये। जो लोग पैसा खर्च कर सकते थे, उन्हें उसने सस्ते दामों में मच्छरदानियाँ बनवा दीं। जो लोग पैसा नहीं खर्च कर सकते थे, उन्हें भी उसने मच्छर-

दानियाँ अपनी ओर से दिलवा दीं —सारे घर वालों के लिए तो नहीं, परन्तु बच्चों के लिए। मच्छर कम हो जाने के कारण और घरों की सफाई हो जाने के कारण मलेरिया बुखार कम लोगों पर हमला करता। यदि किसी को बुखार हो भी जाता, तो उसका फौरन ही बड़े ध्यान से इलाज किया जाता, जिससे वह मरने से बच जाता। इसी तरह से हैजे के बारे में राधा ने गाँव वालों में खूब प्रचार किया। उसने उनको समझाया कि कैसे मक्खियाँ इस बीमारी के कीटाणुओं को एक से दूसरी जगह तक पहुँचाती हैं और किस तरह मनुष्य के खाने में मक्खियाँ इस रोग के कीटाणुओं को अपनी टाँगों द्वारा मिला देती हैं और जब वह खाना खाया जाता है, तो अच्छा-भला आदमी उस रोग के काबू में आ जाता है। इसलिए सब से जरूरी बात यह थी कि मक्खियाँ दिखाई न दें। इतनी सफाई रखी जाय कि मक्खियाँ खत्म हो जायँ। दूसरी बात यह थी कि खाने की हर वस्तु को ढँककर रखा जाय चाहे जाली में या मलमल के साफ-सुथरे टुकड़े से खाना ढक दिया जाय, ताकि उस पर मक्खियाँ न बैठ सकें।

चेचक के सम्बन्ध में राधा को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि इस रोग के बारे में लोगों के बहुत ही पुराने विचार थे। इस रोग में सफाई से काम न लेने के कारण यह रोग काफी फैल जाता था, जिससे बहुत से बच्चों को दुख उठाना पड़ता और अक्सर बच्चे मर जाते थे। यद्यपि देहाती जल्दी से इन बातों को मानने के लिए तैयार नहीं हुए, परन्तु चूँकि उनके मन में राधा के प्रति गहरी श्रद्धा थी इसलिए वह धीरे-धीरे उसकी बातों पर कान धरने लगे। इसका नतीजा भी अच्छा निकला। हर बच्चे को डिस्पेन्सरी में चेचक का टीका लगाया जाता और जब कभी कोई बच्चा बीमार हो जाता, तो उसे फौरन ही दूसरे बच्चे से अलग कर दिया जाता। राधा ऐसे रोगी को उसके घर में न रखकर डिस्पेन्सरी के एक कमरे में रख देती। वहाँ उसकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल की जाती। जब कभी देहाती आकर झाँकते,

तो उन्हें पता चलता कि रोगी को कितनी अच्छी तरह रखा जा रहा है।

औरतों ने पढ़ाई के अतिरिक्त सीना-पिरोना और घर के कई छोटे-मोटे कामों को नये ढंग से करना सीख लिया, तो उनके घरों की शकल ही बदल गई।

उनकी देखा-देखी आस-पास के गाँव वालों को भी इस बात का चाव हुआ कि वह भी अपने घरों और गाँवों का उसी ढंग से सुधार करें। इसलिए आस-पास के देहात से स्त्रियाँ और पुरुष राधा के पास आकर उसकी सहायता माँगने लगे। राधा के पास भी इतना समय तो नहीं था कि वह हर जगह पहुँच सकती फिर भी उसने हर प्रकार से दूसरे गाँव वालों की सहायता करने में संकोच नहीं किया। उन्होंने राधा की प्रेरणा पा कर अपने-अपने गाँव को खूब सुधारा।

यह तो मानी हुई बात है कि जिस तरह बुराई फलती-फूलती है उसी तरह सहारा मिलने पर अच्छाई भी फलती-फूलती है। इसीलिए तो आस-पास के देहातों पर राधा की शिक्षा का प्रभाव पड़ा। इस शिक्षा में सब लोगों को अपनी भलाई दिखाई देती थी। जहाँ तक राधा का सम्बन्ध था वह किसी को भी सहायता देने से इनकार नहीं करती थी। फिर भी उसके मन में यह बात थी कि सबसे पहले वह अपने गाँव को एक आदर्श गाँव बना दे। इसमें खुदगर्जी की कोई भावना नहीं थी। परन्तु बात केवल इतनी सी थी कि राधा को मालूम था कि यदि उसने दूर-दूर देहातों में भागना शुरू कर दिया, तो अपने गाँव में उसका काम अधूरा रह जायगा। ऐसा वह नहीं चाहती थी। बहुत से देहातों का सुधार करना अकेली राधा के बस की बात तो नहीं थी। यह कार्य तो कोई बड़ी संस्था ही कर सकती थी। राधा ने इस बात को पहले से ही समझ लिया था। इसलिए उसने मुख्य रूप से अपने गाँव को आगे बढ़ाने की कोशिश की। वह यह जानती थी कि जब एक आदर्श गाँव का

नमूना सबके सामने आयेगा, तो दूसरे गाँव भी उस मिसाल से प्रबोधित होंगे। राधा का यह विचार ठीक ही निकला क्योंकि आस-पास के देहाती इसके कार्य में काफी दिलचस्पी लेने लगे थे। इसके लिए उनमें लगन भी काफी गहरी थी। राधा से थोड़ी सहायता पाकर वे अपना सुधार कर रहे थे क्योंकि एक मिसाल उनके सामने थी ही।

इन सब कामों से फुरसत पाकर राधा ने बच्चों की ओर बहुत अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया। अब गाँव की स्त्रियाँ बहुत कुछ समझ चुकी थीं और पहले के अतिरिक्त काफी आगे बढ़ चुकी थीं, इसलिए अब उन्हें ज्यादा समझाने की आवश्यकता नहीं रही थी। अब वह काफी बातों को जानने लगी थीं या यूँ कहना चाहिए कि अब वे साफ-सुथरे, सीधे और समतल मार्ग पर पहुँच चुकी थीं। अब राधा के लिए उन्हें और आगे बढ़ाना कोई कठिन कार्य नहीं रहा था। इसीलिए उसने बच्चों को पढ़ाने के काम में बहुत ज्यादा समय देना शुरू कर दिया। वह उन्हें केवल पढ़ाना-लिखाना ही नहीं चाहती थी, बल्कि वह चाहती थी कि वे देश के अच्छे नागरिक बनें। अच्छा नागरिक बनने के लिए अभी से तैयारी करनी आवश्यक थी।

पढ़ाने के अलावा राधा बच्चों को नए-नए खेल सिखाती। उन्हें अच्छे ढंग से बोलना और काम करना सिखाती। उसने उनके सामने ऊँचे आदर्श रखे। उन्हें बताया कि केवल उनका गाँव या आस-पास के गाँव ही संसार नहीं, बल्कि संसार बहुत ही विशाल है, जिसमें कई छोटे-बड़े देश हैं। संसार के बड़े देशों में से एक महान् देश भारत है जहाँ के वह रहने वाले थे। उसने बच्चों को भारत के महापुरुषों के बारे में बताया। बुद्ध, अकबर, गुरु नानक, तुलसीदास, कबीर, शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गाँधी, मोती लाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू आदि अनेक भारतीय महापुरुषों के बारे में बच्चों का ज्ञान बढ़ा। राधा बच्चों की टोलियों को लेकर कभी झील

के किनारे आती, कभी बारहदरी जाती। वह खूब खेलते-कूदते और हँसी-मजाक में समय गुजारते। परन्तु राधा बच्चों के मन में यह बात भी बैठाती रहती थी कि उन्हें भी एक रोज महापुरुष बनना है, देश-भक्त बनना है। अपने देश के अनेक नर और नारियों की सहायता करनी है। इस तरह बातों ही बातों में राधा बच्चों के सामने ऊँचे आदर्श रखती। वह इन्हें वेदों और उपनिषदों के बारे में भी बतलाती। रामायण और महाभारत की कथाएँ भी सुनाती। इस तरह बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनकी शिक्षा भी चलती रहती थी। बच्चे भी राधा को बहुत प्यार करने लगे थे। वह उसे दीदी कह कर पुकारते और उसकी हर आज्ञा का पालन करना अपना धर्म समझते थे। वे जो बातें दीदी से सीखते वही घरों में भी बताते। उनके माता-पिता अपने बच्चों के यह विचार सुनकर बहुत खुश होते। उनमें से अक्सर राधा के पास आकर इसके लिए उसको धन्यवाद देते।—राधा ने और बातों के साथ-साथ बच्चों को परिश्रम करने की आदत भी सिखाई। फलस्वरूप बच्चे घर में अपना समय नष्ट नहीं करते थे। राधा उन्हें काफी समय देती थी कि वह खेतों में जाकर अपने बड़ों की सहायता करें और घरों में रह कर घर के काम-काज में भी हाथ बटायें।

एक रोज आत्माराम ने चाय पीते हुए कहा—'बेटी, अगरचे अभी थोड़ा ही समय बीता है फिर भी मैं देखता हूँ कि तुमने गाँव की काया ही पलट दी है····'

'पिता जी ! यह सब तो आपही के आशीर्वाद से हो रहा है।'

'हाँ बेटी, मेरा आशीर्वाद तो सदा ही तुम्हारे साथ है, जैसा कि हर पिता का होना चाहिए···परन्तु, इसमें भगवान् की भी कृपा है क्योंकि जितनी कठिनाइयों का अनुभव किया था वह कठिनाइयाँ बहुत ही हल्के रूप में हमारे सामने आईं। मैं यह महसूस करता हूँ कि इसके लिए भी तुम्हारी ही तारीफ करनी पड़ेगी। तुम्हारी जगह कोई और होता तो

मुझे विश्वास नहीं कि वह इतने कम समय में इतनी अधिक सफलता प्राप्त कर सकता।'

यह सुन कर राधा का मन नाच उठा, लेकिन दूसरे ही पल वह गम्भीर होकर बोली— 'पिता जी, अभी तो मैंने अपने इस यज्ञ को प्रारंभ ही किया है। अभी तो मंजिल बहुत दूर है, इसलिए आपका आशीर्वाद और भगवान की कृपा चाहती हूँ, ताकि मैं अपनी मंजिल तक पहुँच जाऊँ।'

'बेटी, घबराने की कोई बात नहीं क्योंकि सबसे आवश्यक चीज तो सीधा और सच्चा मार्ग है। जो कोई उस मार्ग पर चल सके, वह एक रोज अपनी मंजिल तक पहुँच ही जाता है।—बेटी, हो सकता है कि तुम अपनी मंजिल तक बीस-पचीस वर्ष में पहुँचो क्योंकि जब इसी गाँव का कोई बच्चा बड़ा होकर कोई ऊँचा पद पाएगा तभी तुम महसूस करोगी कि तुम अपनी मंजिल तक पहुँच पाई हो। वह दिन ऐसा होगा जब इस गाँव की हर माँ का दृष्टिकोण ही बदल चुका होगा। हर स्त्री न केवल आदर्श पत्नी होगी, बल्कि आदर्श माँ भी होगी। मेरा विचार है कि आजकल भी भारत में आदर्श पत्नियाँ तो मिल जाती हैं, परन्तु आदर्श माँ बहुत कम मिलती हैं····क्यों, तुम्हारा क्या विचार है इसके बारे में ?'

राधा अपने पिता जी की इस बात से बड़ी प्रभावित हुई, बोली— 'पिता जी ! आपने एक बहुत बड़ी बात कह दी है। सचमुच ही आदर्श माताओं का तो हमारे देश में नितान्त अभाव है। माँ का अर्थ केवल यही तो नहीं कि वह अपने बच्चों को उस तरह प्यार करे जिस तरह गाय अपने बछड़े से करती है। माँ का महत्व तो बहुत ऊँचा है। आदर्श माँ बनने के लिए बड़ी तपस्या करनी पड़ती है, तैयारी करनी पड़ती है। जिस दिन भारत की स्त्रियाँ आदर्श माँ बनना सीख जायेंगी, उस दिन से भारत का रूप ही बदल जायगा। भारत के होनहार बच्चे अपने देश का

रंग-रूप बदल देंगे। वे केवल अपने देश के सेवक नहीं बनेंगे, बल्कि सारे संसार के सेवक बन जायेंगे। एक बार फिर भारत का दर्जा ऊँचा हो जायगा। प्राचीन समय की तरह एक बार फिर दूर-दूर के देशों से लोग यहाँ शिक्षा प्राप्त करने आया करेंगे।'

राधा ने यह बातें कहते हुए पल भर को आँखें मूँद लीं। फिर धीरे-धीरे बोली—'कितना सुहावना स्वप्न है यह····बहुत सुन्दर····· बहुत प्यारा! परन्तु क्या सचमुच ऐसा हो सकेगा? मैं जब यह स्वप्न देखती हूँ तो बहुत खुश होती हूँ। परन्तु कभी-कभी मेरा हृदय काँप उठता है, जैसे किसी बहुत ऊँची बिल्डिंग पर चढ़ने के ख्याल से डर लगता है। उसी तरह सोचती हूँ कि क्या इतना सुन्दर और इतना प्यारा स्वप्न सच्चा भी हो सकता है? क्या मैं इतनी भाग्यवान् हूँ कि इस स्वप्न को पूरा होते देखूँ?····अक्सर मैं यही सोचती रहती हूँ····'

उसके पिताजी ने एक हलका-सा कहकहा लगाया और फिर उन्होंने गर्दन आगे को बढ़ाते हुए कहा—'बेटी, स्वप्न देखना भी बड़ा आवश्यक है। मनुष्य के सारे कार्य यों ही पहले उसके दिमाग में आते हैं फिर वह उन्हें असलियत का रूप देता है। स्वप्न देखना मनुष्य के लिए अच्छा है। क्योंकि जब वह स्वप्न देखता है, तभी वह अपने जीवन को उस स्वप्न के रूप में ढालने की कोशिश भी करता है। हाँ, यह भी जरूरी है कि मनुष्य केवल स्वप्न ही देखता न रहे, बल्कि कुछ करके भी दिखाए। इस लिए यदि आज मैं और तुम मिलकर स्वप्न देखते हैं, तो इसमें दोष की कोई बात नहीं। और फिर यह भी सोचने की बात है कि तुम केवल स्वप्न नहीं देख रही हो, बल्कि कुछ काम भी कर रही हो। तुम्हारा यह परिश्रम एक दिन अवश्य तुम्हें अपनी मंजिल तक पहुँचाएगा····हो सकता है कि मैं उस समय तक तुम्हारे पास न रहूँ, लेकिन मेरी भगवान् से यही प्रार्थना है और तुमको भी यही आशीर्वाद देता हूँ कि तुम एक रोज इस स्वप्न को असलियत के रूप में देख पाओ····मेरी आत्मा जहाँ

कहीं भी होगी, वह तुम्हारी इस सफलता को देख कर फूली नहीं समाएगी।'

पिता जी के अन्तिम वाक्य सुन कर राधा कुछ उदास-सी हो गई। उसके लिए यह विचार ही कितना भयंकर था कि एक रोज पिता जी उसके साथ न रहेंगे। अक्सर ही पिता जी बातों-बातों में अपनी मृत्यु की ओर संकेत भी कर देते। वह ऐसा क्यों करते थे? वह उसे उदास तो नहीं करना चाहते थे····शायद वह इसलिए कहते थे ताकि उसकी बेटी उस घड़ी के लिए भी तैयार हो जाए, जब वे एक दूसरे से अलग हो जायेंगे।

राधा को इस तरह सोच में डूबी देख कर उसके पिताजी उसके मन की दशा को भाँप गए और फौरन ही मुस्करा कर बोले—'क्यों बेटी, उदास हो गई क्या? वाह भला ऐसे बच्चों की तरह उदास होना चाहिए? मैंने माना कि तुम सचमुच ही बच्ची हो····लेकिन तुम पढ़ी-लिखी हो, ऊँची सूझ-बूझ रखती हो और फिर इसमें उदास होने की क्या बात है? इस संसार में कौन किसके साथ रहा है, कौन किसके साथ रह सकता है? यह सब चीजें तो भगवान के हाथ में हैं—मेरी बात मानो तो तुम प्रतिदिन भगवद्गीता का पाठ अवश्य किया करो, जिसमें भगवान कहते हैं कि बिना भगवान के मारे कोई मर नहीं सकता है। जब शरीर बेकार हो जाता है तो उसे आत्मा भी छोड़ देती है जैसा मनुष्य पुराने वस्त्र उतार कर फेंक देता है। इस विषय पर कभी अपने आपको अशान्त मत होने दो। याद रखो जिस तरह तुम मुझसे बिछुड़ना नहीं चाहती, उसी तरह मैं तुमसे बिछुड़ना नहीं चाहता। परन्तु तुम इस विचार से उदास हो जाती हो जबकि मैं उदास नहीं होता। कारण यह है कि तुम यह समझती हो कि शरीर बिछुड़ जाने से सचमुच ही दो व्यक्ति एक दूसरे से अलग हो सकते हैं, परन्तु मैं जानता हूँ कि ऐसा सोचना केवल तुम्हारी भूल है। आत्मा आत्मा से अलग नहीं हो सकती

क्योंकि आत्मा न मरती है न जलाई जा सकती है, न नष्ट हो सकती है। इसलिए जहाँ दो आत्माओं का मिलाप हो जाता है वहाँ एक दूसरे के बिछुड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।'

पिता जी की आवाज और उनके शब्द शहद में घुले हुए थे। उनमें न केवल मिठास थी, बल्कि उनमें अमृत की तरह अमर कर देने वाली शक्ति भी थी। कुछ पलों तक राधा अपने पिता जी के विचारों में डूबी रही। उससे उसके मन को शान्ति प्राप्त हुई और उसने यह महसूस किया जैसे उसकी आत्मा पर छाए हुए काले बादल ढह गए हों। कुछ पल ही में उसे फिर एक नया उत्साह प्राप्त हो गया। उसने महसूस किया कि भगवान उसके साथ हैं और पिता जी भी उसके साथ रहेंगे। सम्भव है उनका शरीर उसके साथ न रहे, तो भी उनकी आत्मा और उनका आशीर्वाद सदा ही उसके साथ रहेगा। यहाँ तक कि एक दिन जब वह अपने कर्तव्य और धर्म का पालन कर चुकेगी तो उसकी आत्मा भी इस शरीर को छोड़ कर अपने पिता जी के पास पहुँच जाएगी।'

राधा ने बात का रुख पलटते हुए कहा—'पिता जी, हमारे देश में गरीबी बहुत ज्यादा है। देखिए ना, इस गाँव के अधिकांश लोग कितने गरीब हैं। उनके जीवन के स्तर को ऊँचा उठाना कितना कठिन काम है। मेरा अर्थ यह है कि यदि यह गरीब चाहें भी तो अपने रहन-सहन के स्तर को ऊपर नहीं उठा सकते। कभी-कभी तो मेरा मन दुखी होकर भर आता है''' काश! हमारे पास भी इतना धन होता, तो हम इन लोगों की कई प्रकार से सहायता कर सकते थे।

'जिस बात पर हमारा कुछ जोर नहीं उसके लिये दुःखी होना बेकार है।'

'पिता जी, क्या आप यह कहना चाहते हैं कि इन लोगों के जीवन को कभी सुखी नहीं बनाया जा सकता। क्या इनके रहन-सहन का स्तर कभी ऊँचा नहीं उठ सकता?

'नहीं बेटी, नहीं, मेरा यह अर्थ नहीं था। मैं तो यह कहना चाहता था कि इनकी गरीबी हमारी लाई हुई नहीं है और न इसमें इन गरीबों का ही कोई दोष है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि इनकी यह दशा देखकर हमें निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि यदि हम ही निराश हो गए, तो यह बिचारे क्या कर पायेंगे। उनको सिवाय इसके कोई चारा नहीं रहेगा कि वे इसी तरह गरीबी में अपना जीवन व्यतीत करते रहें।'

'यही तो मैं कहती हूँ, पिता जी।'

'बस तो ठीक है। यदि वह गरीब हैं तो इसमें परेशानी की कोई बात नहीं और न निराश होने की जरूरत है—हमें तो इस बात की चेष्टा करनी है कि उनकी गरीबी कैसे दूर हो। इसके लिए इन लोगों को काफी परिश्रम करना होगा।'

'परिश्रम ?···पिता जी ! आपके विचार में क्या यह बिचारे कुछ कम परिश्रम करते हैं····नहीं, मैं तो समझती हूँ कि यह लोग बड़े मेहनती हैं और यह मेहनत से भागते भी नहीं।'

'मैं भी मानता हूँ कि यह मेहनती हैं और मेहनत करने से जी नहीं चुराते, परन्तु इतना तो बताओ कि इनके पास काम है कहाँ ? सभी लोग छोटे-मोटे कामों पर मेहनत करते हैं, इसके बाद उनका सारा समय बेकारी में गुजर जाता है। जिस प्रकार का वह काम करते हैं उससे उनकी आमदनी बहुत कम होती है। फलस्वरूप उनकी गरीबी दूर नहीं होती, बल्कि बढ़ती ही चली जाती है···और राधा, यह भी याद रखने की बात है कि केवल गदहे की तरह मेहनत कर लेने से ही सफलता प्राप्त नहीं हो जाती, बल्कि मेहनत ठीक दिशा की ओर होनी चाहिए, तभी वह मेहनत सफल होती है। यदि हम कोल्हू के बैल की तरह एक ही स्थान पर घूमते रहें, तो इसका नतीजा क्या होगा ? मैंने माना कि बैल सारा दिन चलता है। परन्तु वह इतना चल लेने के बाद भी जहाँ का तहाँ रहता है····इसी तरह जब मनुष्य एक बने-

बनाए और पिटे-पिटाए ढर्रे पर चलता है, तो वह जहाँ का तहाँ रहता है। जीवन की परिस्थितियाँ सदा ही बदलती रहती हैं। इसलिए जो मनुष्य हर परिस्थिति को उसके असली रूप में नहीं देखता और नए-नए रास्ते नहीं निकालता, वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। यह सोचना हमारी भूल है कि आज अपने काम को जिस ढंग से चला कर हम पैसा पैदा करते हैं पाँच वर्षों के बाद भी हम उसी ढंग से कार्य करके रुपया पैदा कर सकेंगे। हो सकता है कि हमें नए ढंग से सोचना पड़े, अपने कार्य को नया रूप देना पड़े, काम करने के ढंग को भी बदलना पड़े। यदि हम इन बातों को सोचते रहते हैं और बदलती हुई परिस्थितियों का साथ देते हैं, तो अवश्य ही हम घाटे से बचे रहते हैं।'

राधा को पिताजी की यह बात बड़ी जँची। उसने महसूस किया कि पिता जी ने एक नए ढंग से पुरानी बात समझा दी है, या यों कहना चाहिए कि उन्होंने आज एक भारी समस्या पर पड़े हुए पर्दे को उठा दिया है। वह बोली—आपका अर्थ यह है कि यहाँ के लोग शताब्दियों से एक चक्कर में फँसे हैं। कोल्हू के बैल की तरह एक ढर्रे चले जा रहे हैं। वह मेहनत भी करते हैं परन्तु उनकी मेहनत पर विचारों सहित नहीं होती। संसार की परिस्थितियाँ बदल गई जिनमें पुराने ढंग का परिश्रम कोई लाभ नहीं दे सकता। इसीलिए इन गरीबों की मेहनत बेकार जाती है। वह बेचारे परेशान होते हैं कि इतनी मेहनत करके भी उनकी हालत नहीं सुधरती, परन्तु वह नहीं जानते कि परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं और उन बदलती हुई परिस्थितियों के साथ स्वयं उनका बदलना भी आवश्यक है।'

पिता जी मुस्कराए और बोले—'तुम ठीक समझीं—यही है इन गरीबों की समस्या पुराने ढर्रे पर चलकर इनकी आर्थिक दशा सुधर नहीं सकती और नए ढंग से सोचने की इनमें शक्ति ही नहीं है।'

'तो पिता जी, यह हमारा ही कर्त्तव्य है कि हम उन्हें नए ढंग से सोचना सिखायें।'

'ठीक है,··· परन्तु इतना ही काफी नहीं है। हम न केवल नए ढंग से सोचना ही सिखायें; बल्कि उन्हें नए मार्गों पर चलने के लिए सहारा भी दें। बिना सहारे के वह कुछ कर भी नहीं सकते। वह छोटे बच्चों की तरह हैं, जिन्हें न केवल अच्छी बातें बतानी पड़ती हैं, बल्कि अच्छी बातों पर चलने का सहारा भी देना पड़ता है—फिर यह भी तो सोचने की बात है कि इन गरीबों के पास ऐसे साधन भी तो नहीं हैं कि वे नई-नई योजनाएँ बनायें और उन्हें पूरा भी कर सकें।'

उनकी बातचीत यहीं तक पहुँची थी कि इतने में गाँव के कुछ बड़े-बूढ़े उसके पिता जी के पास आ पहुँचे। वह जानती थी कि वे लोग आपस में अपने ही ढंग की बातें करेंगे। इसलिए वह वहाँ से उठकर छत पर चली गई।

सूर्यास्त हो चुका था और धीरे-धीरे अँधेरा गहरा होने लगा था। राधा दूर तक फैले हुए खेतों को देखती रही। उसने महसूस किया कि उसके मन की गहराइयों में एक कोना ऐसा भी है जो बिल्कुल सूना पड़ा था। उस कोने में एक सिंहासन था जिस पर उसने किसी को बैठाया था। आखिरकार वह एक नारी ही थी। त्याग करने की उसमें एक महान सहनशक्ति अवश्य थी फिर भी····

उसके पिता जी ने कहा था कि बीस-पचीस वर्षों तक तुम अपनी मंजिल तक पहुँच सकोगी—वह सोचने लगी कि क्या सचमुच ही वह अपनी मंजिल तक पहुँच जाएगी!

यह सोचते-सोचते उसकी आँखों में न जाने क्यों जल भर आया।

पन्द्रह...

आँख झपकते में एक वर्ष गुजर गया। यह ठीक है कि राधा के मन का एक कोना सुनसान पड़ा था। आखिर मनुष्य मनुष्य ही होता है और उस पर से राधा जैसी नारी ·· जिसने जीवन में पहला व आखिरी प्यार किया था! राधा प्राण को भुलाना चाह कर भी न भुला सकी। यह कहना गलत होगा कि उसे प्राण की याद बुरी तरह से सताती थी, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि राधा को अपने हृदय पर एक ऐसा घाव महसूस होता था जो एक वर्ष में भी भर नहीं पाया था। कहने को तो उसने प्राण को भुला दिया, मगर वह घाव जो दब जाने पर भी कभी-कभी उभर आता था भला कैसे वह उसका कोई उपचार कर पाती। ऐसे अवसर पर वह भगवान से प्रार्थना करती कि भगवान! मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं इस घाव को भूल जाऊँ या तुम ही इस घाव को भर दो।

यह सब उसके मन की बातें थीं। उसे देखने वालों को कभी इस बात का शक भी नहीं हुआ कि वह अपने हृदय में ऐसा गहरा घाव लिये फिरती है। राधा ने भी अपने कामों में ऐसा मन लगाया कि दिन को दिन और रात को रात नहीं समझी। यदि वह इतनी व्यस्त न रहती तो निश्चय ही उसे एक वर्ष एक शताब्दी से कम महसूस न होता। वह घायल होते हुए भी अपने कर्त्तव्य और अपने धर्म का पालन करती रही। जिनका हृदय घायल न हो उनके लिए किसी कार्य को करना इतना कठिन नहीं होता जितना कि एक घायल व्यक्ति को होता है। पराये लोग तो राधा के दिल की दशा को क्या भाँप सकते, जबकि उसके पिता जी भी बेटी के मन की गहराइयों में नहीं पहुँच सके! वह देखते थे कि राधा हर प्रकार से सन्तुष्ट दिखाई देती थी। कभी उसके

माथे पर बल नहीं आया। कभी ऐसा नहीं हुआ कि उसने काम करने से जी चुराया हो। कोई सबूत न मिलने पर भी कभी-कभी, पल भर को, अनुभवी आत्माराम महसूस करते कि उनकी बेटी अपने दुख पर सम्पूर्ण रूप से काबू नहीं पा सकी। कभी वह सोचते कि शायद यह उनके मन का भ्रम हो। इसीलिए तो उन्होंने कभी प्राण का जिक्र तक नहीं छेड़ा। वह अपने मन में सोचते कि मैंने तो अपनी बेटी को इस बात का पूरा मौका दिया था कि वह चाहे तो प्राण से शादी कर सकती है। बल्कि बाद में तो उन्होंने इस बात पर जोर भी दिया, और मन से चाहा भी कि उनकी बेटी प्राण के साथ हँसी-खुशी जीवन व्यतीत करे। परन्तु राधा ने ही अपनी मर्जी से एक नया मार्ग चुना, और बड़े उत्साह से उस मार्ग पर चल दी। इसमें उनका अपना तो कोई दोष नहीं था —धीरे-धीरे उन्होंने यह भी सोचा कि समय गुजरने पर राधा अपने आप सँभल जाएगी। चूँकि उसके मन में एक लगन थी, दृढ़ निश्चय था, इसलिए उसका अपनी मंजिल तक पहुँचना असम्भव नहीं था। उन्होंने सोचा कि जब उनकी बेटी ही प्राण का जिक्र कभी नहीं छेड़ती, तो फिर उन्हें क्या जरूरत कि वह खामखा एक दबे हुए घाव को कुरेदें क्योंकि इसका नतीजा यह भी तो हो सकता था कि राधा बुरा मान जाय। वह समझे कि उसके पिता जी उसे सहारा देने के बजाय उलटे पुरानी बातें याद दिला कर उसकी हिम्मत पस्त कर रहे हैं, उसके उत्साह को समाप्त कर रहे हैं, उसके अन्दर एक कमजोरी पैदा कर रहे हैं। यही सब कुछ सोच कर वह इस विषय पर बिलकुल ही चुप रहे। वह जहाँ तक बन पड़ा अपनी बेटी की सहायता करते रहे, उसका उत्साह बढ़ाते रहे।

हाँ, तो इसी तरह एक वर्ष गुजर गया। राधा के मन की जो भी दशा रही हो, परन्तु उसने जिस काम का बीड़ा उठाया था उसमें उसे बड़ी भारी सफलता प्राप्त हुई। अब तो लोगों के मन पर उसका गहरा प्रभाव पड़ चुका था। यह भी ठीक है कि बीच-बीच में कुछ गन्दे लोगों

ने उसकी बुराई भी की, और कुछ ने उसे बदनाम करने की कोशिश भी की। बाज पुराने विचारों की औरतों ने नाक-भौं चढ़ा कर यह भी कहा कि राधा तो विधवा है इसलिए सुहागिनों को इसकी परछाईं से भी बचना चाहिए। परन्तु यों लगता है जैसे भगवान राधा के साथ थे, इसीलिए किसी की कोई चाल सफल नहीं हो सकी। अब एक वर्ष गुजर जाने के बाद किसी में इतनी हिम्मत नहीं हो सकती थी कि वह राधा के विरुद्ध एक बात भी सोचे, कहना तो दूर रहा। अब तो राधा की लोकप्रियता का यह हाल था कि वह जिधर भी निकल जाती लोग उसके रास्ते में अपनी आँखें बिछा देते। भला अब राधा पर कौन उँगली उठा सकता था? लोग ऐसी उँगली को उठने से पहले ही काट कर फेंक देते। अब तो वह पूजी जाती थी। उसके मुँह से निकला हुआ शब्द एक ऐसी आज्ञा की तरह माना जाता कि जिसके अनुसार चलना हर व्यक्ति अपना धर्म समझता था। राधा की सफलता का भेद इसमें भी था कि वह स्त्रियों में बहुत मानी जाती थी। जब स्त्रियाँ ही उसकी पूजा करने लगीं, तो भला पुरुष उसके सामने कैसे सिर उठा सकते थे।

अपने इस एक वर्ष के कार्य की वर्षगाँठ मनाने के लिए उसने भारी जलसा भी किया। जलसा मनाने से पहले बाप-बेटी ने निजी तौर से इस वर्षगाँठ को मनाया। उस दिन राधा ने अपने पिता जी के लिए हलुआ बनाया। गरमागरम कचौड़ियाँ निकालीं। मतलब यह कि बाप-बेटी ने घर में ही दावत खाई। खाना खाने के बाद जब वे आराम से बैठे तो पिता जी बोले—'बेटी! आज एक वर्ष बीत चुका है, परन्तु ऐसा लगता नहीं। यूँ लगता है जैसे कल ही की बात हो जबकि हम एक योजना बनाकर और मन में एक आशा लेकर इस गाँव में आए थे···· मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि एक वर्ष में हमें इतनी अधिक सफलता प्राप्त हो सकेगी। सच पूछो तो यह सब कुछ तुम्हारे दिन-रात के परिश्रम का फल है। यदि तुम इतनी मेहनत न करतीं और इतनी लगन से काम न करतीं तो यह सब कुछ होना असम्भव था।'

राधा भी मन में बहुत खुश थी। परन्तु इस समय अपने पिता जी की बात सुनकर उसने बड़ी नम्रता से सिर झुक लिया, और उसकी आँखें धरती पर गड़ गईं। वह मीठे स्वर में बोली—'आप इसे मेरी मेहनत का फल समझते हैं, परन्तु मैं इसे आपके आशीर्वाद और भगवान की कृपा का फल समझती हूँ।'

'जीती रहो बेटी इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि यदि तुम्हारे ऊपर भगवान की कृपा दृष्टि न होती, तो निश्चय ही तुम इतनी सफलता प्राप्त न कर सकतीं। परन्तु यह भी तो सोचने की बात है कि भगवान की तुम पर इतनी कृपा क्यों हुई। मैं तो यही समझता हूँ कि भगवान भी तुम्हारे त्याग तथा निष्काम सेवा भाव से प्रभावित हुए। और उन्होंने सोचा कि ऐसी लड़की का सफल होना आवश्यक है—खैर! बात जो भी रही हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज हमारे लिए वाकई खुशी का दिन है, क्योंकि आज हमारे सामने तुम्हारे परिश्रम का इतना अच्छा फल दिखाई दे रहा है।'

इतनी बात सुन कर राधा कुछ गम्भीर होकर बोली—'मैंने इस काम को इतना फैला दिया है कि अब मुझे कुछ घबराहट-सी हो रही है।'

'घबराहट?'

'जी!'

घबराहट कैसी? लो, आज जबकि तुम्हारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं होना चाहिए, तुम गम्भीर, बल्कि उदास-सी नजर आती हो।'

'पिता जी, मैं यही महसूस करती हूँ कि अभी तो मेरी मंजिल बहुत दूर है।'

'हाँ, यह तो मैं भी समझता हूँ। तुम्हारा आदर्श बहुत ऊँचा है, इसीलिए तुम्हारी मंजिल भी दूर है, परन्तु यह न समझो कि अब तक जो सफलता तुमने प्राप्त की वह कोई मामूली वस्तु है।'

'मैं यह स्वीकार करती हुई भी महसूस करती हूँ कि हमें अब और विशाल धरती में कदम रखना होगा। परन्तु यह कदम मैं कैसे रख सकूँगी ?'

'बेटी, तुम्हारी निराशा पर मुझे आश्चर्य हो रहा है ! मैं पूछता हूँ कि भला तुम उस विशाल धरती पर कदम क्यों नहीं रख सकती ? कौन-सी ऐसी शक्ति है जो तुम्हारे कामों को रोक सकती है ?'

राधा ने कुछ झिझकते हुए कहा – 'पिता जी, अब मैं महसूस करती हूँ कि और आगे बढ़ने के लिए बहुत अधिक धन की जरूरत है।'

'तो फिर इसमें निराशा की क्या बात है ?'

राधा ने एकाएक सिर उठाकर आश्चर्य-भरी नजरों से अपने पिता की ओर देखा और दबे स्वर में बोली – 'मैं आपकी बात समझी नहीं !'

'मैं केवल यही कहना चाहता हूँ कि तुम को धन की जरूरत है, तो तुम्हें धन मिल जाएगा—जितना धन तुम चाहोगी उतना।'

राधा ने और भी हैरान होकर कहा – 'पिता जी, आप तो यह बात यों कह रहे हैं जैसे आपके पास कोई दबा हुआ खजाना पड़ा हो—आपके पास जो कुछ था वह तो मैंने ले लिया, अब आपके पास और कौन-सा खजाना है ?'

इस पर आत्माराम ने जोर का कहकहा लगाया और बोले—'यही तो तुम्हें मालूम नहीं, बड़ी भोली हो तुम—अरी मेरी नन्ही बेटी, मेरे पास सचमुच ही एक खजाना है।'

'कहाँ है वह खजाना ?'

'तुम जानना चाहती हो तो सुनो—यह जो साल भर मेहनत की है और उसका जो फल निकला है, बस यही है मेरा खजाना।'

राधा ने रूठने के अंदाज से मुँह बना कर कहा 'जाइये पिता जी, आप तो हमसे मजाक करते हैं।'

'नहीं बेटी, यह मजाक करने का मौका नहीं है—अरी पगली, तुम तो इतने बड़े-बड़े स्वप्न देख रही हो, और मैं तुम्हारा पिता होकर भला तुम्हारा मजाक उड़ाऊँगा···ऐसा तो तुम्हें सोचना भी नहीं चाहिए।'

'पर पिता जी, जब आप बात ही मजाक की करते हैं, तो फिर मैं और क्या समझूँ ?'

'बस तुम सदा की तरह अपने पिता पर विश्वास रखो। देखो यह जो सफलता तुमने प्राप्त की है इसी के बूते पर हम काफी धन इकट्ठा कर सकते हैं। हम वर्षगाँठ के जलसे में कुछ बड़े-बड़े लोगों को बुलायेंगे, और जब हम उन्हें अपनी सफलता का फल दिखायेंगे, तो वह अवश्य ही धन देकर हमारी सहायता करेंगे।'

यह सुनकर राधा चौंक पड़ी। वह चकित रह गयी·····और वह बहुत खुश भी थी।

पिता जी ने उसके चेहरे पर यह भाव देखा तो हँस कर बोले—'क्यों हो गई खुश ?'

'जी हाँ—आपने तो वाकई बड़ी अच्छी तरकीब सोची।'

अब तो आत्माराम भी मौज में आ गए, और जान-बूझकर बच्चों जैसे अन्दाज में रोब जमाते हुए बोले—'बेटी, तुम देखती जाओ, इस बूढ़ी खोपड़ी में से कैसे-कैसे विचार निकलते हैं।'

यह सुनकर और बूढ़े बाप की यह अदा देख कर राधा को इतनी हँसी आई कि वह हँसते-हँसते दोहरी हो गई। जब हँसी कुछ थमी तो बोली—'पिता जी, यह कोई मजाक की बात तो नहीं कह रही हूँ। आप इस सफलता के लिए मुझे इतना खामखा उछालते रहते हैं, पर मैं अपने मन में सोचती रहती हूँ और अपने आप से कहती भी हूँ कि राधा, तेरे पिता जी तेरे साथ न होते, तो तू अपनी मंजिल की ओर एक कदम भी न बढ़ सकती।'

पिता जी अच्छे मूड में थे। यह सुनकर उन्होंने कहकहा लगाया, फिर कहने लगे—'नहीं बेटी, मैं तुम्हारी झूठी प्रशंसा नहीं करता। यह ठीक है कि मैं तुम्हें रास्ता दिखाता रहता हूँ, परन्तु किसी के रास्ता दिखा देने से तो कोई मंजिल तक नहीं पहुँच सकता ? मंजिल पर तो तभी पहुँचेगा, जब राही कदम उठाकर उस रास्ते पर चलता चला जायगा।'

राधा ने बच्चों की तरह सिर हिलाते हुए कहा 'जी नहीं, आप मुझे बनाते हैं, अधिक प्रशंसा तो आप ही की होनी चाहिए।'

'अरे, जो तुम अपने पिता की ही प्रशंसा करना चाहती हो, तो भला मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती है। फिर भी असलियत यही है कि तुमने सचमुच ही कमाल कर दिखाया है। मेरी इस बात में बिलकुल झूठ न जानो कि यदि तुम इतनी दूर दृष्टि के साथ इतना परिश्रम न करतो तो कुछ भी न हो पाता—सच्ची बात तो यह है कि मैं, जिसे तुम सब कुछ बताने वाला समझती हो····जो मैं भी इस कार्य को स्वयं करता, तो जितनी सफलता तुम्हें प्राप्त हुई है उसका मैं चौथाई भी न प्राप्त कर पाता।'

'ठीक है पिता जी, आप जो कुछ कहते हैं भला मैं उसे कैसे झुठला सकती हूँ ! फिर भी मैं इतना जरूर कहूँगी कि आप मेरी इतनी तारीफ न कीजिए कि मैं घमण्डी बन जाऊँ, और फिर उतना अच्छा काम भी न करूँ जो मुझे करना चाहिए।'

'अजी नहीं, घमण्ड तो मेरी बेटी को छू भी नहीं गया। जिसकी आत्मा नम्र हो वह इस संसार की किसी भी सफलता पर घमण्ड नहीं करता। बेटी, तुम अपनी महानता को नहीं समझती हो····इसे तो केवल मैं ही समझता हूँ। यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास न हो, क्या विश्वास होते हुए भी तुम यह समझो कि पिता होने के नाते मैं लाड में आकर तुम्हारी इतनी प्रशंसा कर रहा हूँ—तो फिर तुम दूसरे लोगों से ही पूछो। यदि तुम उनके दिलों में झाँक सको, तो देखोगी कि वे तुम्हें देवी समझते हैं।

मन में वे सब तुम्हारी पूजा करते हैं—भला बताओ कि मुझे तो तुम टाल सकती हो कि मैं लाड के मारे तुम्हारा ठीक अन्दाजा नहीं लगा सकता, परन्तु तुम अपने हजारों प्रशंसकों के बारे में क्या कहोगी ? वे सब अपनी बुद्धि नहीं खो बैठे, अरी पगली, अवश्य ही तुम्हारे अन्दर उन लोगों को ऐसे गुण दिखाई देते हैं, जिनके कारण वे तुम्हारी पूजा करते हैं····तुम्हें देवी समझते हैं।

यह सब बातें सुनकर राधा को बड़ी खुशी तो हुई लेकिन फिर भी उसने मन में भगवान की अपार कृपा की भावना लिये हुए अपने सिर को नीचे झुका दिया और मन में प्रार्थना की कि हे भगवान ! जिस तरह तूने आज तक मेरा साथ दिया है उसी तरह अब भी मेरा साथ देना, मुझको सीधे मार्ग से भटकने मत देना और मुझे मेरी मंजिल तक पहुँचने की शक्ति देना।

सोलह...

जलसे की जोर-शोर से तैयारियाँ होने लगीं। एक वर्ष पहले के जलसे की तैयारियाँ उसने स्वयं की थीं, परन्तु आज उसका साथ देने वाले सारे गाँव के पुरुष और नारियाँ भी थीं।

उन तैयारियों में बातचीत भी होती रही। एक रोज सभी स्त्रियों को बुलाकर राधा ने होने वाले जलसे के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उसने कहा—'बहनो! शायद आप इस बात का अनुमान नहीं लगा सकतीं कि इस अवसर पर मुझे कितना हर्ष हो रहा है। आज से एक ही वर्ष पहले की बात है कि जब मैंने अपने पिता जी के साथ मिलकर इस कार्य को प्रारम्भ किया था। आप नहीं जानतीं कि उस समय मेरा हृदय आशा और निराशा के बीच में घिरा हुआ था। मैं पूरे विश्वास से नहीं कह सकती थी कि मुझे सफलता प्राप्त होगी या नहीं। परन्तु आज मैं सफलता की इस सीमा तक पहुँच कर फूली नहीं समाती हूँ। मुझे अपने लिए किसी भी वस्तु की जरूरत नहीं थी। मैं तो कुछ ऊँचा ही आदर्श अपने सम्मुख रखे हुए थी, पर मैं इतना जानती हूँ कि यदि मुझे आप लोगों का सहयोग प्राप्त न होता तो आज मैं इस सफलता पर गर्व न कर सकती।'

चंचल चमेली बोल उठी—'अजी हमने आपको क्या सहयोग दिया है—एक तो आपने हमें ज्ञान देकर एक गिरी हुई दशा से उठाकर जीवन के ऊँचे स्तर पर रख दिया। दूसरे, आप हमारी ही आभारी हो रही हैं। भला यह तो वही उल्टी गंगा बहने वाली बात हुई। आभारी तो हम हैं आपकी। सच पूछिए तो आप एक देवी हैं जिन्हें भगवान ने हमारी दीन दशा पर दया खाकर हमारे बीच में भेजा। आपने हमारे सब

क्लेश दूर भगा दिये और आज हम महसूस कर रहे हैं कि हम भी मनुष्य हैं। आप ही कहिए कि आज से एक वर्ष पहले हमारी दशा जानवरों से तो बेहतर नहीं थी। आज हमें जिस-जिस बात का ज्ञान प्राप्त हुआ है उसके लिए आप ही को धन्यवाद मिलना चाहिए—कहीं आप यह न समझ बैठियेगा कि यह बात केवल चमेली ही कह रही है, बल्कि मैं दावा कर सकती हूँ कि मेरे इन विचारों से सभी बहनें सहमत हैं।'

चमेली के इतना कहने पर सभी औरतें एक स्वर में बोल उठीं—'चमेली ठीक कहती है। उसने हमारे मन की बात कही है!'

राधा ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर उन्हें हिलाते हुए सबको चुप रहने का इशारा किया। जब वे चुप हो गईं तो राधा बोली—'आपने जो मुझे मान दिया है उसका धन्यवाद भला मैं कैसे दे सकती हूँ। केवल भगवान से प्रार्थना है कि हम सब मिल-जुलकर इसी तरह आगे बढ़ती चली जायँ—अच्छा यह सब बातें तो होती ही रहेंगी, परन्तु मैं आज आपको कुछ और जरूरी बातें कहना चाहती हूँ। आपको याद होगा कि मैंने पहले भी आपसे कहा था कि हमारी मंजिल कहाँ है। जहाँ तक हम आ पहुँचे हैं, यह आपके और हमारे दोनों के लिए गर्व की बात है, परन्तु हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि यह हमारी मंजिल नहीं है। आज फिर मैं आपको बता दूँ कि मैं अपने आपको तभी सफल समझूँगी जिस रोज इस गाँव के कम से कम कुछ बच्चे ऊँची शिक्षा पाकर और ऊँची पदवी प्राप्त करके अपने देश की सेवा में जुट जायेंगे। उस समय हमारे इस छोटे से गाँव का नाम पूरे भारत में गूँज उठेगा, तब सब लोग जान सकेंगे कि स्त्रियों के अन्दर भी कैसी शक्ति होती है। तभी हम दुनियाँ को बता सकेंगे कि माताएँ जब ऊँचे स्तर पर पहुँच जायँ, तो वह अपने बच्चों को कहाँ से कहाँ तक पहुँचा सकती हैं····हम यह सिद्ध करना चाहती हैं कि माताएँ अपनी देखभाल और शिक्षा से अपने बच्चों को महान् बना सकती हैं।'

राधा की यह बात सुनकर सब औरतें मारे खुशी के तालियाँ बजाने लगीं। चमेली ने हाथ उठाकर कहा—'राधा बहन की····'

सब औरतें—'जय !'

चमेली फिर बोली--'राधा बहन····'

सब औरतें—'जिन्दाबाद !'

'राधा बहन····'

'जिन्दाबाद !'

औरतें इसी तरह नारे लगाती रहीं, तब एक बार फिर राधा को दोनों हाथ उठा कर उन्हें चुप करना पड़ा। जब वह चुप हो गईं, तो उसने यूँ अपने भाषण को जारी रखा—बहनो ! आपका यह उत्साह और प्रेम देख कर तो मेरा लहू ही बढ़ गया है—अच्छा, तो अब आगे की बात सुनिए। मैं आपसे यह कहने जा रही थी कि जिस मंजिल का मैंने अभी-अभी आपसे जिक्र किया है, वहाँ तक पहुँचने के लिए और गुणों के अलावा बहुत काफी धन की भी जरूरत है। काश कि भगवान ने मुझे धनी बनाया होता, तो आज मुझे यह बात कहने की कोई आवश्यकता ही महसूस न होती। कहने का मतलब यह है कि जितने धन की जरूरत है वह न आपके पास है, न मेरे पास। मैं काफी दुविधा में थी कि यह समस्या कैसे हल हो। पिता जी से सलाह करने के बाद हमने यह सम्मेलन करने की ठानी। हमारी योजना यह है कि इस सम्मेलन में देश के कुछ महान् व्यक्तियों को भी बुलाया जाय जिनमें कुछ ऐसे हो सकते हैं जो स्वयं धन से हमारी सहायता कर सकें, और कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो हमें दूसरों से धन दिलवा सकें। तब हमें जो भी सबसे अधिक तीव्र बुद्धि के बच्चे दिखाई देंगे, उन्हें हम ऊँची-से-ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिये शहर में भेज सकेंगे।'

यह बात सुनकर सभी औरतें मारे खुशी के हँस-हँस कर आपस में

बातें करने लगीं। थोड़ी देर बाद राधा मुस्करा कर बोली—'जरा रुकिए, अभी मेरी बात खत्म नहीं हुई। पहले आप मेरी बात सुन लीजिए, फिर अपनी बातें कीजिएगा।'

सभी स्त्रियाँ इतना सुन कर एकदम चुप हो गईं। राधा ने फिर कहा—'अब आपको यह बात याद रखनी चाहिए कि इस जलसे को हमें अधिक से अधिक सफल बनाना है। इसके लिए हम सबको मेहनत करनी होगी। याद रखिए जलसे के दिन आपके मकान और गाँव की गलियाँ शीशे की तरह साफ होनी चाहिए। कोई बच्चा तक गन्दा नजर न आये। सबको नहला-धुलाकर अच्छे साफ कपड़े पहनाये जायँ। यह भी याद रखिए कि आपने जो-जो कढ़ाई के काम किये हैं वह जलसे के एक रोज पहले यहाँ मेरे पास पहुँचा दीजिएगा। मैं इन सबको एक अलग कमरे में सजा दूँगी, ताकि हमारे मेहमान देख सकें कि हम इस गाँव की सीधी-सादी महिलाओं ने कैसे-कैसे सुन्दर काम किये हैं।'

सब स्त्रियों ने इस बात को पसन्द किया। फिर सम्मेलन का काम जोर-शोर से शुरू हो गया। अब तो सब औरतों ने महसूस कर लिया कि इस जलसे को सफल बनाना उनका कर्त्तव्य है।

जब जलसा हुआ, तो पहले साल से कहीं अधिक सजावट की गई। जलसे में बड़े-बड़े लोग आए। राधा ने एक लम्बे भाषण में उन्हें बहुत-सी बातें बताईं, अन्त में उसने कहा —'आज से एक वर्ष पहले इस गाँव का एक बच्चा भी पढ़ना-लिखना नहीं जानता था, आज यहाँ का हर एक बच्चा पढ़-लिख सकता है। पहले यहाँ की एक भी स्त्री कढ़ाई का काम नहीं जानती थी, परन्तु एक वर्ष के समय में जो कुछ उन्होंने कर दिखाया है इसकी छोटी-सी प्रदर्शनी आप भी देख सकते हैं। आप हमारे गाँव में घूम चुके हैं और आप इस बात की गवाही दे सकते हैं कि इतना साफ-सुथरा गाँव आपने कहीं नहीं देखा होगा। आप एक-एक घर में चल कर देखेंगे कि यहाँ के सीधे-सादे देहातियों ने साधारण रूप से ही

अपने घरों को कितना साफ-सुथरा और सुन्दर बनाया है। अब महिलाएँ अपने बच्चों की देखभाल करना सीख गयी हैं। यहाँ के बच्चे आपके सामने बैठे हैं। भले ही इन्होंने बहुमूल्य कपड़े नहीं पहन रखे, तो भी इनके वस्त्र सदा ही साफ-सुथरे रहते हैं। मुझे इस बात का दावा है कि यह बच्चे पढ़ने-लिखने में और खेल-कूद में शहर के बच्चों से कम नहीं हैं, बल्कि उनसे बढ़-चढ़ कर ही होंगे। आज हमारे गाँव में बीमारियाँ कम हो गई हैं। हमने मलेरिया और हैजे की रोकथाम करली है, क्योंकि अब सब देहाती भाई और बहनें समझ गई हैं कि यह रोग क्यों फैलते हैं। जो कुछ हमने किया है और जो उन्नति इस गाँव ने की है इसके बारे में शायद कुछ कहने की जरूरत नहीं क्योंकि सभी कुछ आप अपनी आँखों से देख व पूछ सकते हैं।'

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके इस जलसे का सभी आने वालों पर गहरा प्रभाव पड़ा। थोड़े ही समय में राधा की आशा से भी बढ़-चढ़ कर धन की प्राप्ति हुई और राधा को अपनी योजनाओं का भविष्य उज्ज्वल दिखाई देने लगा।

सत्रह...

दिन गुजरे, महीने गुजरे, वर्ष गुजरे—इतने समय में राधा की सभी योजनाएँ यूँ सफल हुईं जैसे अच्छे मौसम में आमों के पेड़ फलों से लद जाते हैं। हरियामा, राधा का गाँव हरियामा, न केवल आस-पास के देहातों में, बल्कि पूरे देश में मशहूर हो गया। हर वर्ष एक नया जलसा होता और देश के नेतागण राधा की त्याग-भरी इस फूलती-फलती योजना को देख कर खुश होते। वे न केवल जबानी राधा की प्रशंसा करते, बल्कि हर तरीके से उसकी सहायता करते। राधा को हर साल अपनी योजना आगे बढ़ाने के लिए धन की जरूरत होती थी जिसे उसके प्रशंसक पूरा कर देते। इसी तरह राधा की आयु बढ़ती चली गई, उसकी जवानी ढलती चली गई, परन्तु उसकी योजना पर जवानी चढ़ती चली गई। यों लगता था जैसे वह इस योजना को अपने लहू सींच-सींच कर इसे परवान चढ़ा रही थी। वहाँ की कोई ऐसी वस्तु, नर या नारी ऐसी नहीं थी जिस पर राधा की छाप दिखाई न दे। पहले तो लोग उसे पूजा करने लायक समझते थे, परन्तु अब तो सचमुच ही उसकी पूजा होने लगी थी। सब पुरुषों की वह बहन थी, सारी स्त्रियों की वह दीदी थी और सारे छोटे बच्चों की वह माता थी।

उसके पिता जी आयु बढ़ने के साथ और दमे के रोग के कारण बिल्कुल ही खाट से लग गये थे। यहाँ तक कि टट्टी-पेशाब के लिए भी कभी उठ पाते और कभी बिल्कुल ही नहीं उठ सकते। शायद और कोई इस प्रकार का रोगी होता, तो कब का इस संसार को छोड़ गया होता। लेकिन न-जाने आत्माराम के अन्दर कौन-सी अमर ज्योति का प्रकाश था कि उसके बूते पर वह अभी तक काया के पिंजरे में आत्मा को

थामे बैठे थे। कभी-कभी तो उन्हें आश्चर्य होने लगता कि वह इतने वर्षों तक कैसे जी गए। परन्तु यह मानना पड़ेगा कि मनुष्य के विचार और दृढ़ता में बहुत भारी शक्ति होती है। राधा के त्याग और उसके दृढ़ निश्चय को देखकर बाप के अन्दर भी एक आत्मबल उत्पन्न हुआ। बाप ने भी दृढ़ निश्चय कर लिया कि इस शुभ कार्य में वह अपनी बेटी का साथ देगा। इस निश्चय के साथ-साथ भगवान से प्रार्थना भी की जाती और भगवान ने वह प्रार्थना स्वीकार भी कर ली। अब आत्माराम महसूस करते कि उन्हें यह शरीर त्याग देना चाहिए। अब बेटी सत्रह-अट्ठारह वर्ष तक उनके साथ रह कर यह शुभ कार्य कर चुकी थी। अब उसे पिता के सहारे की कुछ भी आवश्यकता नहीं थी। कभी वह सोचते कि बेटी से कह दूँ कि अब वह बाप को बिदा करने के लिए तैयार हो जाए। उन्हें विश्वास था कि अब उनकी बेटी के विचार कच्चे नहीं रह गए थे। बल्कि कहना चाहिए कि अब वह बच्ची नहीं रही थी, इसलिए यदि वह इतनी बात कह भी दें, तो राधा को वैसा दुःख नहीं होगा जैसा आज से कई वर्ष पहले होता····आत्माराम मन ही मन यह बातें सोचते तो जरूर, परन्तु मुँह से न कह पाते। वह देखते थे कि उनकी बेटी कितनी खुश थी, अब उसके चेहरे पर आत्म-विश्वास और आत्म-तुष्टि झलकती थी। वह सोचते कि ऐसे में मैं क्यों बेटी को उदास करूँ, जब मुझे समय आने पर जाना पड़ेगा, तो मैं चला ही जाऊँगा। आखिर राधा भी तो इन बातों को बिना कहे ही समझती होगी। वह भी जानती होगी कि उसके पिता आशा से बढ़ कर लम्बा जीवन पा गए। इसके लिए तो उसे भगवान का आभारी होना चाहिए, जिसने इतने लम्बे समय तक उसके पिता की परछाईं हटने नहीं दी। यही सब कुछ सोचकर वह चुप हो रहते, बल्कि खुश होकर अपनी बेटी की योजनाओं की बातें करते। अब भी वह सलाहमशविरा देते।

राधा ने अपने गाँव में इतना प्रबन्ध कर लिया था कि वहाँ बच्चे

हाई स्कूल तक की परीक्षा दे सकें। अब तो बारहवें दर्जे तक की पढ़ाई का प्रबन्ध होने वाला था। जो लड़के अच्छे निकल जाते अपने पास से खर्चा देकर वह ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें किसी न किसी यूनिवर्सिटी में भी भेज सकती थी। यही सब कुछ हो रहा था। उसके हाथ से निकले हुए शिष्य बड़े शहर और यूनिवर्सिटी में भी पहुँच कर राधा की दी हुई शिक्षा को नहीं भूलते थे। उनका चरित्र-व्यक्तित्व सदा ही दूसरे विद्यार्थियों से भिन्न होता था। वह अपने व्यवहार, अपने परिश्रम और अपने आदर्शों के कारण सबसे अलग पहचाने जाते थे। कहीं भी वह किसी से कमजोर नहीं सिद्ध होते थे। राधा उनका चुनाव भी तो बड़ी सख्ती से करती थी। केवल बहुत होशियार लड़के ही आगे भेजे जाते थे।

जो लड़के पढ़ाई-लिखाई में बहुत अच्छे सिद्ध नहीं होते थे, उनको भी यों ही छोड़ा नहीं जाता था। राधा ने अपने यहाँ ऐसा प्रबन्ध कर दिया था कि इस प्रकार के लड़के अपने जीवन को सफल बनाने और स्वयं अपनी रोटी कमाने-खाने के योग्य हो जायँ। वहाँ दर्जी का काम, साइकिलों की मरम्मत का हुनर, रेडियो की मरम्मत और इसी प्रकार के कई छोटे-मोटे काम सिखाये जाते थे। बाज लड़के जिनकी सहायता की उनके माँ-बाप को बहुत जरूरत होती थी, उन्हें अच्छे ढंग से खेती-बारी करने के ढंग सिखाये जाते थे। राधा सबसे अधिक आचरण पर जोर देती थी। लड़के बहुत अधिक पढ़ाई-लिखाई करने के योग्य न भी हों, तो वह अच्छे नागरिक बन कर जीवन व्यतीत कर कर सकें।

राधा ने समय को नष्ट करना बिल्कुल बन्द कर दिया। उसने कहा कि समय नष्ट करना मूल पाप है। खेतों में काम करने वाले किसानों और घर में व्यस्त रहने वाली स्त्रियों को फालतू समय में बेकार बैठने का मौका नहीं मिलता था। वे घरेलू दस्तकारी की योजना

के अनुसार कुछ न कुछ काम करते और उससे हर महीने मर्द और औरतें कुछ फालतू रुपया कमा लेते। उन सीधे-सादे देहातियों को पहले इन सब बातों का कुछ भी ज्ञान नहीं था। वे समझते थे कि वे बहुत परिश्रम करते हैं, परन्तु फिर भी उन्हें पेट भर खाना और तन ढकने को कपड़ा भी नहीं मिलता। इसके लिए वह अपनी किस्मत को कोसते। वे समझते थे कि उन्होंने पिछले जन्म में अवश्य ही कुछ खोटे कर्म किये होंगे, जभी तो इस जन्म में कर्मों का फल भोग रहे हैं। राधा ने उनके मन में से यह सब सन्देह निकाल दिये। उसने ऐसा प्रबन्ध किया कि शहर के दुकानदारों से स्त्रियों और पुरुषों के करने लायक कोई काम मिल जाय, जिसे वे देहाती अपने घरों में बैठकर जब भी फालतू समय मिलता तो पूरा कर लेते। मुँह से गप्पें हाँकते रहते और मुँह के साथ हाथ भी हिलते रहते। इस तरह वे प्रतिदिन कुछ न कुछ काम करते और उन्हें उस काम का पारिश्रमिक भी मिलता। अब हर एक को खाने के लिए अच्छा भोजन और पहनने के लिए अच्छे वस्त्र मिल जाते थे। जभी तो वह राधा को देवी समझ कर उसकी पूजा करते थे। यों तो कई साधू-महात्मा पहले उनके जीवन में आते। उन्हें जबानी इधर-उधर का ज्ञान समझाते, और उलटा इन्हीं गरीबों के पल्ले से खाना भी खाते और कपड़े भी लेते। यह तो राधा ही थी जिसने उनको फोकट की बातें नहीं बताईं, बल्कि उन्हें कुछ करके दिखा दिया। उसने उन्हें यह बात सिद्ध करके सिखा दी कि भूखे आदमी का न कोई आचरण हो सकता है और न वह इज्जत और आबरू का जीवन ही व्यतीत कर सकता है। पहले वह अपने साथ रहने वाले बैलों का सा जीवन व्यतीत करते थे। मनुष्य होते हुए भी वह जानवरों की तरह जीने पर मजबूर थे, उनका दिल तड़पता था, आँखें रोती थीं और छाती में बरछियाँ चुभती थीं। परन्तु वह क्या कर सकते। उनके चारों ओर अज्ञानता और मजबूरी का अन्धेरा छाया हुआ था। इस अन्धेरे में वह हाथ-पाँव मारते, ठण्डी आहें भरते और दाँत पीस कर रह जाते।

धीरे-धीरे उनकी ऐसी दशा हो गई कि उन्हें यह भी नहीं महसूस होता था कि वे भी मनुष्य हैं। उन्होंने शास्त्रों, वेदों और ग्रन्थों की बातें पंडितों से सुनीं, परन्तु वह ब्राह्मण उनके जीवन को ऊपर न उठा सके, कोई ऐसा तरीका न बता सके जिससे कि उनके दुखों की बेड़ियाँ कट सकें। पंडित बड़ी ऊँची-ऊँची हवाई बातें करते थे, पूजा-पाठ की शिक्षा देते और भगवान पर भरोसा रखने को कहते। वे ऐसी चुपड़ी-चुपड़ी बातें सुना कर उनके शरीर का लहू चूस लेते, और फिर उनसे मुँह मोड़कर अपने रास्ते पर चल देते।

ऐसे ही अन्धेरे में राधा नाम की एक देवी मन में उनके लिए दर्द बसाए, और हाथ में ज्ञान की मशाल उठाए आई। उसने फोकट की बातें नहीं कीं, उसने आसन जमाकर दूसरों को खोखली शिक्षा नहीं दी। उसने कभी गरीबों से अपनी सेवा नहीं कराई, कभी उसने हाथ फैलाकर गाँव वालों से भीख नहीं माँगी। बल्कि उसने हमेशा देहाती भाइयों और बहनों को अपने पल्ले से खिलाया, अपनी पूँजी खर्च करके उनके जीवन को सुधारने की कोशिश की। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि राधा ने अपना घर फूँक कर तमाशा देखा। जब उसका अपना रुपया समाप्त हो गया, तो उसने दूसरों से धन इकट्ठा किया। परन्तु यह धन अपने लिए नहीं, बल्कि अपने देहाती भाइयों की भलाई के लिए खर्च किया। ऐसे व्यक्ति शताब्दियों बाद जन्म लेते हैं। वे अपनी भलाई की बात नहीं सोचते। वे सदा मनुष्य-जाति की भलाई की बात सोचते हैं—राधा ऐसे ही महान् व्यक्तियों में से थी।

अट्ठारह...

बहुत से लड़कों और बच्चों के कहकहों में अपनी हँसी मिलाती राधा बच्चों और लड़कों की एक बड़ी टोली के साथ झील की ओर बढ़ी जा रही थी। खेतों में काम करते हुए पुरुषों के लिए यह कोई नया दृश्य नहीं था। वे अकसर ही राधा को बच्चों के साथ कभी झील और कभी बारहदरी वाले बाग की ओर जाते देखा करते थे। वह जानते थे कि राधा उन लड़कों की बहन और बच्चों की माता है। रास्ते में जिस खेत के निकट से राधा गुजरती उस खेत में काम करने वाले अपना काम रोक देते और दोनों हाथ जोड़ कर सिर झुका देते। वह उनके नमस्कार का उत्तर देती हुई आगे बढ़ जाती, परन्तु वह भोले-भाले देहाती उसके गुजर जाने के बाद भी काफी देर तक उसे देखते रहते।

जब भी राधा को बच्चों और लड़कों के साथ इस प्रकार घूमने का अवसर मिलता, तो वह खुश होती थी। अगरचे उसने इस दृष्टि से कभी नहीं सोचा था, परन्तु वह शादी कर भी लेती तो दो-तीन बच्चों की माँ बन जाती। परन्तु आज यह सभी लड़के-बाले उसको अपने बच्चे जैसे दिखाई देते थे और फिर कितने अच्छे बच्चे थे वे, कितना चाहते थे उसे ! उनकी चमकती हुई आँखें सदा ही उसके चेहरे पर जमी रहतीं। वह इस बात के लिए उत्सुक रहते कि यदि उनकी माता राधा इशारा करे तो वह आग के दरिया में भी कूद पड़ें या आकाश से तारे तोड़ लाएँ। राधा भी एक-एक बच्चे का ख्याल रखती थी। जरा-सा किसी के सिर में भी दर्द हो जाय या जरा-सी चोट भी लग जाय, तो राधा व्याकुल हो उठती। उसे बच्चों से केवल

लगाव ही नहीं था, बल्कि वे उसे इतने प्यारे लगते थे, जैसे उसने उन्हें अपनी कोख से जन्म दिया हो। बच्चे प्यार के भूखे तो होते ही हैं, इसलिए राधा के अनोखे प्रेम को पाकर वह भी फूले नहीं समाते थे।

इसी तरह बोलते-चालते और हँसते हुए वे लोग झील के किनारे पहुँच गए। बड़े लड़कों ने आव देखा न ताव, फौरन ही वे जाँघिये पहन-पहन कर झील में कूद गए। उनके कूदते ही झील में जैसे ज्वार-भाटा आ गया। तैरते समय वे इतने जोर से हाथ-पाँव मारते थे कि पानी चारों तरफ उड़ने लगता और फुहारों की चादर में स्वयं लड़के भी पड़ कर गायब हो जाते।

बेचारे छोटे बच्चे बड़ी हसरत से बड़े लड़कों को तैरते देखते, परन्तु वह स्वयं तो नहीं तैर सकते थे और न उन्हें पानी में घुसने की आज्ञा ही मिल सकती थी। इसलिए वे झील के किनारे बैठ कर कागज की नौकाएं बनाने लगे। क्या हुआ जो वे खुद नहीं तैर सकते थे, कम से कम वे अपनी नौकाएं तो तैरा सकते थे। अपनी-अपनी नाव को पानी में छोड़ कर उसके पीछे छोटे-छोटे हाथों से पानी को हिलाते ताकि उसके जोर से नौकाएँ तेजी से आगे जा सकें। उनका एक दूसरे से मुकाबला हो रहा था, हर एक की यही इच्छा थी कि उसकी नाव दूसरों से आगे निकल जाय। इसी धुन में वह बाकी सारी बातें भूल गए।

राधा एक ओर बैठी यह तमाशा देख-देख कर खुश हो रही थी। अनजाने में ही वह बहुत बड़े परिवार का आनन्द ले रही थी।

दस-पन्द्रह मिनट यूँ ही गुजर गए, तो राधा ने मुँह में सीटी लेकर जोर से बजाई, जिसे सुनकर तैरने वाले लड़के किनारे की ओर लौटे। जितनी देर तक वे तैरते रहे राधा किनारे से चिल्ला-चिल्ला कर बहुत आगे जाने से मना करती रही। असल में वह तो चाहती ही नहीं थी कि लड़के तैरने जायँ क्योंकि उसके मन में दुविधा रहती कि कहीं ऐसा न

हो कि कोई दुर्घटना हो जाय। फिर भी कभी-कभार जब बड़े लड़के बहुत जिद् करते, तो वह उन्हें अपने साथ ही झील पर ले आती और दस-पन्द्रह मिनट तक तैरने की छुट्टी भी दे देती। वह मन में यह भी सोचती थी कि लड़कों के बढ़ते हुए उत्साह को दबाना नहीं चाहिए। इस तरह से उनके कायर हो जाने का भी डर था। राधा को कायरता से घृणा थी। इसीलिए वह उन्हें अपने सामने ही तैरने की आज्ञा देती और इस बात का खयाल रखती की पानी में पहुँच कर वे कोई शरारत न करें और न बहुत दूर जायँ कि कहीं लौटते समय उनका दम फूल जाय और बाजू थक कर जवाब दे दें।

जब सब लड़के और बच्चे उसके चारों ओर घेरा डाल कर खड़े हो गये, तो उसने पूछा—'हाँ बच्चो, यह तो बताओ कि जो आम हम अपने साथ लाये हैं वह यहीं पर खाये जायेंगे या बारहदरी में जाकर खाओगे।'

सब लड़के-बच्चे उछल-उछल कर बोले—'यहाँ नहीं, बाग में ही चल कर खायेंगे।'

राधा ने अपना हाथ ऊपर उठाकर हवा में लहराते हुए कहा—'बस, तो ठीक है····लड़को! जल्दी से कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ। अब हम बाग को चलेंगे।'

लड़कों ने जल्दी-जल्दी गीले शरीर पर ही कपड़े पहन लिए और फिर यह चहकते, छलाँगें लगाते और शोर मचाते बाग की ओर चल दिये।

जब वे बाग में घुसे, तो उनकी उछल-कूद और बातों के शोर से पेड़ों में बैठी हुई चिड़ियाँ इधर-उधर उड़ गईं।

राधा तो सीधी बारहदरी के ऊपर पहुँची, परन्तु बच्चे वहाँ तक पहुँचने से पहले दौड़-दौड़ कर पूरे बाग का चक्कर लगा आए। तब सबने बैठ कर बोरे में से आम निकाले। घर में आम पानी में पड़े हुए

थे, लेकिन अब फिर उन्हें पानी में अच्छी तरह धोया गया। बड़ों को तीन-तीन और छोटों को दो-दो आम मिले। बहुत मीठे आम थे।

जब सब लोग आम खा रहे थे और राधा भी उन्हीं के साथ खा रही थी, तो उसने प्रश्न किया—'क्यों बच्चो, आम कैसे लगे तुम लोगों को ?'

'बहुत मीठे, बिल्कुल शहद की तरह····'

राधा फिर बोली—'बच्चो ! जानते हो कि मैं तुमसे क्या चाहती हूँ ?'

बच्चे खाते-खाते रुक गए और उनमें से कुछ ने पूछा—'आप ही बताइए, हमें तो कुछ मालूम नहीं।'

इस पर राधा ने मुस्करा कर कहा—'मैं चाहती हूँ कि तुम सब बड़े होकर इन आमों की तरह बन जाओ।'

बच्चों को बड़ी हँसी छूटी, फिर दो-चार ने कहा—'भला हम आम कैसे बन सकते हैं ?'

यह सुनकर तो राधा को भी हँसी आ गई, बोली—'नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है कि तुम लोग आम बन जाओ—बल्कि यह है कि तुम आमों की तरह रस-भरे और मीठे बनो।'

इसके बाद राधा ने बातों ही बातों में उन्हें कई अच्छी-अच्छी बातें समझा दीं। बच्चों को समझाने का उसका यही ढंग था।

आम खा चुकने के बाद सब लड़के बारहदरी के फर्श पर बैठ गए और राधा एक ऊँचे चबूतरे पर बैठ गई जहाँ से उसे सब लड़के अच्छी तरह देख सकें। तब राधा ने आवाज देकर कहा—'बड़े लड़कों में से सुन्दर, गोपाल, नारायण और शुक्ला खड़े हो जायें।'

वह चारों लड़के खड़े हो गए। वे थोड़े से घबराये हुए थे कि न-जाने उन्हें खड़े होने को क्यों कहा गया है। राधा ने उनके चेहरे पर घबराहट के चिह्न देखे, तो बोली—'नहीं-नहीं, इसमें घबराने की कोई बात नहीं, मैं तुम्हें डाँटने नहीं जा रही हूँ।'

यह सुनकर उन लड़कों को कुछ शान्ति महसूस हुई। तब राधा फिर बोली—'तुम चारों के सम्बन्ध में मुझे आज कुछ निर्णय करना है। क्या तुम लोग जानते हो कि मैं क्या कहने जा रही हूँ ?'

लड़कों ने इन्कार में सिर हिला दिये, तब राधा ने कुछ मुस्कराकर और कुछ मजाक में कहा—'तुम चारों के बारे में मेरा विचार है कि तुम लोग बहुत अच्छे आम बन सकते हो।'

यह सुनकर सभी बच्चे और लड़के जोर-जोर से हँसने लगे और कहने लगे—'तब तो हम इन आमों को मजा ले लेकर खायेंगे।'

यह सुन कर वह चारों लड़के भी खूब हँसे और अपने साथियों को अँगूठा दिखाने लगे।

राधा ने दोनों हाथ उठा कर जोर से उठते हुए कहकहों को रोका और कहने लगी—'बस-बस····काफी मजाक हो चुका—अब मैं यहाँ पर बैठे हुए सब बच्चों और लड़कों को बताना चाहती हूँ कि मुझे इन चारों लड़कों पर बड़ा गर्व है और मेरे विचार में तुम सबको इन चारों पर वैसा ही गर्व होना चाहिए जैसा कि मुझको है।'

कई आवाजें उठीं—'हम भी इनको बहुत मानते हैं।'

'वेरी गुड !' राधा ने अपनी बात चालू रखते हुए कहा— 'मैंने यह तय किया है कि इन चारों को यूनिवर्सिटी में भेजा जाये। इन्टर की परीक्षा तो यह दे चुके हैं और उसमें इन्होंने बहुत अच्छे नम्बर पाए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यूनिवर्सिटी में भी यह लोग सबसे अच्छे रहेंगे।'

टोली के किसी बड़े लड़के ने प्रश्न कर दिया—'यदि यह पूरे यूनिवर्सिटी में भी बहुत अच्छे रहे तो फिर उसके आगे यह लोग क्या करेंगे ?'

राधा बोली—'यह बहुत अच्छा प्रश्न किया है। यदि तुम प्रश्न न करते, तो भी मैं इसका उत्तर देने जा रही थी—हाँ तो मैं यह बताना चाहती हूँ कि यदि यूनिवर्सिटी में भी यह सबसे अच्छे रहे तो इन्हें वजीफा देकर विलायत भेजा जायगा। तुम सबको यह जानकर बड़ी खुशी होगी कि

हमारे पास ऐसा प्रबन्ध हो गया है कि हम अपने बहुत अच्छे लड़कों को विलायत में भेज सकेंगे।'

किसी एक लड़के ने पूछा—'क्या विलायत हमारे देश से अच्छा है ?'

राधा पल भर सोच में डूब गई फिर बोली—'नहीं बेटा, मेरा यह मतलब नहीं है। सदा याद रखो कि अपनी जन्मभूमि से बढ़ कर और कोई स्थान नहीं हो सकता। हम लोग चाहे कहीं भी चले जायें, किसी भी देश में जाकर रहें तो भी हमें अपनी जन्मभूमि की याद हमेशा ही सताती रहेगी—अब प्रश्न यह उठता है कि फिर विदेश में जाने का क्या काम ?····इसका उत्तर केवल यह है कि संसार का हर देश दूसरे देशों को कुछ न कुछ सिखा सकता है और उनसे कुछ न कुछ सीख भी सकता है। मनुष्यों और जातियों और देशों का आपसी लेन-देन तो चलता ही रहता है। यूरोप के देश कुछ बातों में हमसे बढ़े हुए भी हैं। हम उनसे कई नई बातें सीख सकते हैं। मिसाल के तौर पर सुन्दर को साहित्य से दिलचस्पी है। वह बहुत अच्छा जर्नलिस्ट बन सकता है। विलायत से लौट कर वह अपने देश वालों की भलाई के लिए कोई पत्रिका निकाल सकता है। इसी तरह नारायण को इन्जीनियरिंग का शौक है। वह विलायत पास करके आए तो अच्छी-अच्छी सड़कें, पुल आदि बन सकता है। शुक्ला आर्कीटेक्चर बनेगा, यानी मकानों और बस्तियों के अच्छे-अच्छे नक्शे बनाकर वह नगर बसा सकता है। गोपाल खेती-बारी के आधुनिकतम ढंग सीख कर आएगा जिससे हमारे देश का भला हो सकता है।'

यह सुनकर सब लड़के बहुत खुश हुए और कुछ देर इधर-उधर की गपशप करने के बाद वे सब लौट आए।

———

उन्नीस...

उन चारों लड़कों को यूनिवर्सिटी में भरती कराने के लिए राधा खुद उन्हें लेकर शहर गई। उनके रहने का प्रबन्ध भी एक अलग मकान में कर दिया। हास्टेल में भर्ती न कराने का कारण समझाते हुए उसने चारों लड़कों से कहा—'देखो, हास्टेल में खर्चा बहुत बैठता है। मुझे आशा है कि तुम लोग मिल-जुलकर कम से कम खर्चा करोगे। बच्चो, याद रखो कि तुम्हीं से हमारे गाँव की इज्जत है। शहर में लड़कों को उल्टे मार्ग पर डालने वाली कई चीजें होती हैं। परन्तु मुझे आशा है कि तुम लोग किसी उल्टे-सीधे चक्कर में नहीं पड़ोगे। वैसे तो मुझे तुममें से हर एक पर पूरा विश्वास है, परन्तु फिर भी इस बात का खयाल रखना कि यदि तुममें से कोई रास्ते से भटक जाय, तो दूसरों को चाहिए कि पूरी कोशिश करके उसे सीधे रास्ते पर ले आवें। बच्चो, यह याद रखने की बात है कि तुम दूसरों के खर्चे से यहाँ पढ़ने आए हो। बेटा, हम सभी गरीब हैं, परन्तु हम नीच नहीं हैं। अब अपने गाँव की इज्जत और मेरा मान तुम ही लोगों के हाथ है। यदि मुझे गाँव में कभी कोई ऐसी सूचना मिली कि तुम लोगों में से किसी ने भी कोई बुरी हरकत की है, तो याद रखना कि मुझे इसका बहुत दुःख होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मुझे दुःख देना नहीं चाहोगे।'

राधा की यह बातें सुन कर चारों लड़कों के दिल भर आए। उन्होंने राधा को विश्वास दिलाया और उससे प्रण किया कि वे कभी कोई ऐसी हरकत नहीं करेंगे जिससे उसको नीचा देखना पड़े।

फिर वे लड़के राधा को स्टेशन पर बिदा करने गए। जब गाड़ी

चलने को हुई तो राधा ने गाड़ी के दरवाजे में खड़े-खड़े उन सबके सिर पर हाथ फेरते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया। इतने में गाड़ी एक धक्के से चली, तो लड़के भी डिब्बे के साथ-साथ प्लेटफार्म पर चलने लगे। अब तो वह अपने मन पर काबू नहीं पा सके, बल्कि फूट-फूट कर रोने लगे। राधा की आँखों में भी आँसू आ गए। उसका जी चाहा कि वह नीचे उतर कर उन्हें अपने गले से लगा ले, परन्तु गाड़ी तेज हो चुकी थी। अब ऐसा करना असम्भव था। चलते-चलते उसने इतना ही कहा—'बेटा, हिम्मत से काम लो। आज तुमने जीवन में पहली बार अपने घर और अपने गाँव से बाहर कदम रखा है। याद रखो तुम मर्द हो और तुम्हें अपने जीवन में इस संसार की कठिनाइयों का डट कर मुकाबला करना होगा और हम सब का सिर ऊँचा करना होगा····अच्छा, अब तुम लोग गाड़ी के साथ-साथ मत भागो। यह डिब्बा प्लेटफार्म की सीमा से निकलने ही वाला है—जीते रहो··· खूब फलो और फूलो····।'

प्लेटफार्म की सीमा समाप्त हो गई। लड़के रुक गए, परन्तु उनकी आँखें दूर जाती हुई राधा पर जमी थीं। वे सब हाथ हिला रहे थे और राधा गाड़ी के डिब्बे में खड़ी दरवाजे में से रुमाल हिला रही थी। आखिर गाड़ी बहुत दूर निकल गई। सूर्यास्त होने को था। चारों ओर मटियाला प्रकाश फैला हुआ था। उन लड़कों ने पहले नहीं समझा था कि बिदा होते समय उनके मन को इतना दुःख होगा। उन्हें जीवन में पहली बार यह महसूस हुआ कि वह इस शहर में बिल्कुल अकेले हैं। वह इतना निढाल हो रहे थे कि उनसे चला ही नहीं जा रहा था। वह वहीं प्लेटफार्म की एक बेंच पर बैठ गए। वह उस पटरी की ओर देखते रहे जिस पर अभी-अभी गाड़ी दौड़ती हुई उनकी आँखों से ओझल हो गई थी। वह यूँ बैठे थे जैसे गाड़ी फिर अभी लौट आएगी और एक बार फिर वे राधा दीदी के दर्शन कर सकेंगे।

कितने भोले, कितने सीधे-सादे और कितने प्यारे दिखाई दे रहे थे वे लड़के !····कुछ देर तक वे यों ही चुपचाप सिर झुकाए बैठे रहे, फिर गोपाल ने सिर उठा कर अपने साथियों की ओर देखा। उसकी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। वह जानता था कि उसके साथियों के मन में कितना गहरा दुःख समाया हुआ है, तो भी उसने हिम्मत से काम लेकर अपने साथियों से कहा—'भाइयो ! आज हम अपने गाँव से छूट कर इस नए शहर में आ गए हैं। गाँव छूटने का भी इतना गम नहीं, परन्तु दीदी राधा से अलग होकर हम कैसे रह सकेंगे, यह समझ में नहीं आ रहा है। फिर भी हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि हम एक उद्देश्य को लेकर अपने घरों से निकले हैं और अपनी दीदी से अलग हुए हैं।'

शुक्ला ने सिर उठा कर गोपाल की ओर देखा और बोला—'तुम ठीक कहते हो भाई ! पहले हमें इस बात का पता नहीं था कि दीदी से अलग होकर हम इतना दुःख महसूस करेंगे। परन्तु दुःख सहे बिना मनुष्य कुछ प्राप्त भी तो नहीं कर सकता। जिस तरह हमें अपनी दीदी नहीं भूलती उसी तरह हमें दीदी की कही हुई बातें भी नहीं भूलनी चाहिए। क्योंकि आने वाले दिनों में यही बातें तो हमारा सहारा बनेंगी। जब हमारा दिल डाँवा-डोल होने लगेगा तो दीदी की ही बातें याद करके हमारी हिम्मत फिर से बढ़ जायगी।'

नारायण ने कहा—'दोस्तो ! यह भी न भूलना चाहिए कि दीदी को हम सबसे उतना ही प्यार था जितना कि हमें उनसे था। इसलिए हमको अपने से अलग करते हुए उन्हें कुछ कम दुःख नहीं हुआ होगा। उन्होंने तो मुझे एक बार यह बात भी कही कि अगरचे मैं अपने निकट आये हुए किसी बच्चे को भी अपने आप से अलग करना नहीं चाहती, परन्तु फिर भी ऐसा करना ही पड़ता है। बच्चों के लिए यही उचित है कि वह संसार में जायँ, शिक्षा प्राप्त करें और अपनी बुद्धि, ईमानदारी और परिश्रम से इस संसार में अपने लिए एक स्थान बनायें। यदि

प्यार करने वाले अपने बच्चों को संसार में भेजने के बजाय घर ही में बैठाये रखें, तो इसका यही अर्थ हुआ कि वे बच्चों का जीवन खराब करना चाहते हैं, वे बच्चों के जीवन को असफल बनाना चाहते हैं।.... ... ऐसा सोचना, या अनजाने में ऐसा करना बड़ी भारी भूल ही नहीं, बल्कि महापाप भी है। इसीलिए अपने मन पर पत्थर रख कर भी बच्चों को संसार से टक्कर लेने के लिए भी घर की चहारदीवारी से बाहर भेजना ही चाहिए।'

अब सुन्दर भी अपने विचार प्रकट किये बिना नहीं रह सका। वह बोला—'नारायण भइया! तुमने अभी-अभी कहा था कि दीदी हमको उतना ही प्यार करती हैं जितना हम उनसे करते हैं। परन्तु भइया, मैं समझता हूँ कि ऐसा सोचना हमारी भूल है, बल्कि सच पूछो तो ऐसा सोचना पाप भी है। क्योंकि मेरा विश्वास यह है कि जितना प्यार दीदी के मन में हमारे लिए है उसकी गहराई को हम नहीं पा सकते। सोचो तो, उन्होंने हमारे लिए क्या-क्या नहीं किया और यह भी कि भविष्य में भी वह हमारे लिए क्या-क्या करने की सोच रही हैं ?.....मेरे विचार में हमने सदा ही उनसे कुछ पाया है, बल्कि बहुत कुछ पाया है परन्तु उन्होंने तो हमसे कुछ नहीं पाया। न उन्हें हमसे कोई लाभ ही है। हम उनसे प्रेम करते हैं तो यह स्वाभाविक है, क्योंकि हम उनसे प्रेम पाते हैं, और जो भलाई वह हमारे साथ कर रही हैं वह भी देखते हैं। परन्तु यह भी तो सोचो कि हमने उन्हें क्या दिया, या भविष्य में हम उन्हें क्या दे पायेंगे ? यदि हम उनके लिए करें भी तो क्या ? क्या उससे हम उनके एहसानों का बदला उतार सकेंगे ?.. मैं तो ऐसा नहीं समझता, हम तो उनके लिए कुछ भी करें फिर भी उनके प्रेम, श्रद्धा, भावना का बदला कभी नहीं उतार पायेंगे।

गोपाल बोला—'सुन्दर! तुमने वाकई बड़ी गहरी बात कही है। हमारी दीदी तो देवी हैं, देवी! उन्हें किसी बात का लोभ नहीं है। हमें जहाँ तक पता चला है, उन्होंने अपना सब कुछ बेंच-बाँच कर और

अपने जीवन के सभी सुखों का त्याग करके हमारा जीवन बनाने का बीड़ा उठाया है। आओ आज हम इस बात का दृढ़ प्रण करें कि हम दीदी की इच्छाओं से बाल भर भी इधर से उधर नहीं होंगे। जो वह हम से चाहती हैं वही हम करके दिखा देंगे। जैसा कि अभी-अभी सुन्दर भाई ने कहा कि उन्हें किसी बात का लोभ नहीं है और न हमारे द्वारा वह अपना कोई सुख चाहती हैं। जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ, यदि हम उस आदर्श पर पूरे उतरें जो आदर्श दीदी ने हमारे आगे रखा है, तो सचमुच ही उन्हें बड़ी प्रसन्नता होगी। हम उनकी भलाइयों का बदला तो नहीं उतार सकते, लेकिन इतना तो कर सकते हैं कि यह जानने की कोशिश करें कि उनकी खुशी किस बात में है? और फिर वही कुछ करके उनके मन को शान्ति और खुशी देने की चेष्टा करें। .....तो लो भई, आज से हम चारों ने इस बात का पक्का प्रण कर लिया कि हम सोते-जागते दीदी के बताये हुए आदर्श को अपने सम्मुख रखेंगे और भगवान से प्रार्थना करेंगे कि वह हमें इतनी शक्ति दे कि हम अपनी दीदी को खुश कर सकें।'

इन बातों से उनके मन को कुछ शान्ति हुई और वे आपस में यही प्रण करके बेंच से उठ खड़े हुए। उन्होंने रेल की पटरी पर उस ओर नजर दौड़ाई जिधर गाड़ी उनकी दीदी को ले गई थी। उनकी आँखों में दृढ़ता थी और मन में लगन थी। यों लगता था कि जैसे अब भी वह अपनी दीदी को अपने सामने देख रहे हों और उसको वचन दे रहे हों कि चाहे कुछ भी हो जाय, वे उनके आदर्श पर चलेंगे और भगवान की कृपा से एक रोज उन्हें सफल होकर दिखा देंगे।

थोड़ी ही देर में जबकि अँधेरा छा चुका था और आकाश में सितारे आँखमिचौनी खेलने लगे थे, वे चारों एक दूसरे के हाथ में हाथ दिये स्टेशन से बाहर निकले और अपने रहने के स्थान की ओर चल दिये।

बीस...

समय गुजरता गया। पहले-पहल उन लड़कों को उस नए शहर की हर एक चीज अनोखी-सी लगी, परन्तु थोड़े ही दिनों में वह उस वातावरण के आदी हो गए। उनके साथी लड़कों ने उन्हें देहाती समझ कर उनका मजाक भी उड़ाया, क्योंकि यह चारों बड़े ही साधारण वस्त्र पहनते थे, खादी का कुर्त्ता, गाँधी टोपी, धोती और पाँव में चप्पल! उनके बाल भी अँग्रेजी ढंग के बने नहीं होते थे। इसीलिए तो सभी लड़के उनका मजाक उड़ाते थे।

न केवल वह अपने कपड़ों में ही साधारण थे, बल्कि मन के भी सरल और सीधे थे। वह मूर्ख या नालायक नहीं थे, परन्तु उनमें शोखी, चतुराई और चंचलता नहीं थी। यहाँ तक कि वह अपना खाना भी खुद ही मिल-जुल कर तैयार करते थे। कोई सब्जी बनाता, कोई आग जलाता, कोई आटा गूँधता, कोई रोटियाँ पकाता और कोई बर्तन माँजता। यह सभी काम करने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता था। न वह आपस में लड़ते-भिड़ते; न वह यह कहते कि मैं फलाँ काम करूँगा और फलाँ काम नहीं करूँगा। चार होते हुए भी वे एक थे। इसी का नतीजा निकला कि पहले-पहल जो लोग उनका मजाक उड़ाते थे उन्हें बाद में चुप हो जाना पड़ा। क्लास में भी प्रोफेसर उनकी तारीफ करते और उनके तौर-तरीकों की प्रशंसा करते। पहली परीक्षा में उन्होंने सब लड़कों से अच्छे नम्बर पाए। फिर तो उनका मजाक उड़ाने वालों को भी नीचा देखना पड़ा।

उनका ऐसा आदर्श जीवन देख कर तो प्रोफेसर भी चकित रह गए। एक रोज तो प्रोफेसर साहब ने पूछ ही लिया—'बेटा गोपाल, तुम चारों लड़के अपने ढंग के निराले हो। तुम लोगों का बड़ा ही आदर्श जीवन

है। मैं चाहता हूँ कि काश भारत के हर लड़के का जीवन इसी प्रकार का हो। अक्सर मेरे मन में यह प्रश्न उठता है कि तुम चारों इतने अच्छे बच्चे कैसे बन गए? किसने तुम्हारे अन्दर यह गुण भर दिये? यदि इन बातों का उत्तर देना अनुचित न हो तो मुझे बताओ कि इसमें क्या भेद है?'

गोपाल फौरन ही अपनी सीट से उठकर खड़ा हो गया और दोनों हाथ जोड़कर बोला—'मान्यवर! हम तो नहीं समझते हैं कि हममें कोई ऐसे गुण हैं जिनके कारण आप हमारी इतनी प्रशंसा कर रहे हैं। हमें तो अपने आप में बहुत त्रुटियाँ नजर आती हैं। हमारी तो हर समय यही इच्छा रहती है कि त्रुटियों को दूर कर सकें,....परन्तु मैं आप के कथन को असत्य भी नहीं मान सकता। आप इतने बड़े विद्वान हैं और हमारे पिता समान हैं इसलिए आपके मुँह से निकला हुआ हर शब्द हमारे लिए पवित्र है। यदि आपको हममें कोई गुण नजर आते हैं, तो मैं इस सम्बन्ध में इतना ही कह सकता हूँ कि यह सब कुछ हमारी दीदी के कारण है। आज से कई वर्ष पहले वह हमारे गाँव में आईं। कई और बातों के अलावा उन्होंने यह बात कही कि किसी भी मनुष्य को देखकर और उसके बर्ताव को देखकर हम इस बात का अन्दाजा लगा सकते हैं कि उसकी माता कैसी होगी। इसी बात को सम्मुख रखते हुए हमारी दीदी ने हमारी सीधी-सादी माताओं को शिक्षा देकर योग्य माँ बनाया। अपनी माताओं से प्रेरणा पाकर हमने कुछ आदर्शों को अपनाया। हम अपनी माताओं के आभारी हैं, परन्तु दीदी भी हमारी माता हैं। वह केवल माता ही नहीं बल्कि देवी भी हैं। आज यदि आपको या किसी और सज्जन को हममें कुछ गुण नजर आते हैं, तो उनके लिए हमारी प्रशंसा नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन देवी की होनी चाहिए जो हमारी सब कुछ हैं।'

प्रोफेसर साहब ने फिर पूछा—'क्या मैं यह जान सकता हूँ कि आप लोगों की दीदी कौन हैं?'

'उनका शुभ नाम राधा देवी है ।'

इससे प्रोफेसर साहब की दिलचस्पी और बढ़ी और उन्होंने बताया कि यह नाम तो उन्होंने भी सुन रखा था । दुर्भाग्य से जब राधा देवी इन लड़कों को भर्ती कराने आयीं तो उस समय प्रोफेसर साहब की देवी जी से मुलाकात नहीं हो सकी । प्रोफेसर साहब और भी कई बातें पूछते रहे । ज्यों-ज्यों उन्हें नई-नई बातों का पता चलता गया, त्यों-त्यों उनकी दिलचस्पी भी बढ़ती गई । सारी बातें सुनने के बाद उन्होंने बड़े खुले शब्दों में राधा देवी की प्रशंसा की ।

इक्कीस...

काफी लम्बा समय गुजर गया। राधा के पिता जी की तबियत बहुत ही खराब रहने लगी। यहाँ तक कि डाक्टरों ने राधा को अलग ले जाकर बताया कि उसके पिता अब केवल कुछ दिनों के ही मेहमान हैं। उनके रोग ने उन्हें खोखला कर दिया है! न-जाने कब उनकी आत्मा उनके शक्ति-हीन शरीर को त्याग दे।

यह सुन कर राधा उदास तो हुई, परन्तु बहुत ज्यादा परेशान नहीं हुई। स्वयं पिताजी की शिक्षा से वह जीवन और मृत्यु, आत्मा और परमात्मा के बारे में काफी गहराई से सोचने लगी थी। उसने इस बात का अनुभव कर लिया कि इस संसार में कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है। जो जन्म लेता है उसे एक रोज मरना ही पड़ता है। मनुष्य का जीवन एक महासागर की सतह पर उभरती हुई लहर की तरह है। अनगिनत लहरें उभरती और दबती रहती हैं, परन्तु महासागर ज्यों का त्यों बना रहता है। यह संसार तो मनुष्य के लिए केवल कर्मभूमि है। यहाँ वह अपने कर्मों का बीज बोता है और फलस्वरूप या तो वह मुक्ति पा जाता है या फिर से जन्म लेकर अपने कर्मों का फल भोगता है। भगवद्गीता का पाठ करते समय उसने बहुत ही गहरे आनन्द का अनुभव किया था। उसकी सभी शंकाएँ दूर हो गईं। अब तो वह हर रोज ही पिता जी के पास बैठ कर भगवद्गीता का पाठ किया करती थी। राधा कभी-कभी शाम के समय अकेली ही छत पर चढ़ जाती क्योंकि पिता जी तो वहाँ आने योग्य नहीं रहे थे। शाम की खामोशी में जबकि सितारे छोटे-छोटे बतासों की भांति आकाश में बिखर जाते तो वह बीते हुए वर्षों का स्मरण करती। कई विचार, कई भावनाएँ, ऊपर-नीचे उसके मन में उभरतीं। कभी वह

बेचैन भी हो जाती और कभी शान्त हो जाती। अच्छी तरह सोच-विचार करने के बाद वह इसी नतीजे पर पहुँचती कि उसका जीवन बेकार नहीं गया। उसने अपने गाँव में ऐसा बीज बो दिया था जिसके कारण आने वाले समय में बहुत-सी अच्छी घटनाएँ हो सकती थीं। इस बात में ही कितना आनन्द था कि जिस काम का बीड़ा उसने उठाया था, उसमें उसे सफलता प्राप्त हुई थी। अब तो उन चारों युवकों की परीक्षा भी हो चुकी थी और शीघ्र ही उनका नतीजा निकलने वाला था। जहाँ तक राधा का ख्याल था उन लड़कों का बहुत ऊँचे नम्बरों में पास होना बिल्कुल ही निश्चित था।

वही बात हुई—नतीजा निकला, तो पता चला कि चारों लड़कों ने अपने दूसरे साथियों को पछाड़ दिया था। यह सूचना मिलते ही राधा सीधी अपने पिता जी के पास पहुँची और मारे खुशी के बोल उठी—'पिता जी, पिता जी !'

आत्माराम बहुत ज्यादा कमजोर हो चुके थे। धीरे-धीरे साँस लेते थे और महसूस करते थे कि किसी रोज उनकी साँस इसी तरह टूट जाएगी। वह अधिकतर आँखें मूँदे पड़े रहते। उन्होंने बेटी की खुशी-भरी आवाज सुनी तो बोले—'क्या है बेटी ?'

राधा ने देखा कि इस कमजोरी में भी उनके होठों पर एक बहुत ही प्यारी मुस्कान खेल रही थी। राधा उनके पास जाकर चारपाई पर ही बैठ गई और बोली—'पिता जी ! आज आपको मैं एक खुश-खबरी सुनाने आई हूँ।'

आत्माराम ने अपना दुबला-पतला हाथ उठाकर राधा की पीठ पर रख दिया और बोले—'हाँ बेटी, कहो·····तुम्हें इस तरह से खुश देख कर ही मेरा मन फूल की तरह खिल उठता है। यह जान कर तो और अधिक खुशी हुई है कि तुम कोई खुशखबरी भी सुनाने जा रही हो।'

'पिता जी, वे चारों सबसे अच्छे नम्बर लेकर पास हो गए हैं।'

'तुम्हारा मतलब है कि गोपाल, सुन्दर, नारायण और शुक्ला, सबके सब ?'

'जी हाँ पिता जी·····सबके सब।'

यह सुनकर तो आत्माराम भी गदगद हो उठे, बोले—'बेटी ! इतनी खुशी हो रही है मुझे कि जी चाहता है कि उठ कर बैठ जाऊँ····· परन्तु कितना कमजोर हो गया हूँ !·····'

राधा पिता जी के कन्धों पर हाथ रखते हुए बोली—'नहीं पिता जी, आप लेटे रहिए। उठने की कोशिश बिल्कुल न कीजिए।'

आत्माराम बेटी का कहना मानकर लेटे ही रहे। यदि वह उठने का यत्न करते भी तो न उठ पाते, इतना तो वह समझते थे।

थोड़ी देर तक बाप-बेटी मारे खुशी के कुछ और बोल भी न पाए। दोनों एक दूसरे की आँखों में आँखें डाल कर देखते रहे। आखिर आत्माराम काँपते हुए स्वर में बोले—'बेटी ! उनकी विजय में तुम्हारी विजय दिखाई दे रही है मुझे।'

'इसमें क्या सन्देह है····पर पिता जी, मुझे अपनी विजय का कोई शौक नहीं है। खुशी तो इस बात की है कि उन लड़कों ने जिस बात के लिए इतना परिश्रम किया था वह बेकार नहीं गया।'

'लेकिन राधा बेटी इतना याद रखो कि साधारण रूप में बच्चे इतनी मेहनत नहीं किया करते। उनके पीछे भी तुम्हारी शक्ति काम कर रही थी। तुम नहीं जानती कि वे तुम्हें कितना प्यार करते हैं ! मैं समझता हूँ कि उन्हें अपनी सफलता का इतना ख्याल नहीं था जितना कि इस बात का था कि उनकी दीदी ऐसा चाहती हैं। बस तुम्हीं को विजयी बनाने के लिए और तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिए ही उन्होंने ऐसी घोर तपस्या की बेटी ! तुम्हें वह अपनी माता समझते हैं। माता ही नहीं, बल्कि देवी भी समझते हैं। आज इस बात का सबूत मिल गया कि यदि स्त्री चाहे तो बच्चों को कहाँ से कहाँ तक पहुँचा सकती है।

तुमने सभी माताओं को यह बात सिद्ध कर बता दी कि केवल बच्चों को अपनी कोख से जन्म दे देने से एक माता का कर्त्तव्य पूरा नहीं हो जाता। बल्कि इस बात की बड़ी ही भारी जरूरत है कि सब माताएँ बच्चों को जीवन में सफल बनाने और उन्हें आदर्श नागरिक बनाने में सभी कुछ कर सकती हैं। परन्तु ऐसा करने के लिए औरतों को स्वयं शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। पढ़ने-लिखने के अतिरिक्त उनके लिए यह भी आवश्यक है कि वह बच्चों को ऊँचा उठाने के गुर सीखें।—जैसे कि हम अक्सर पहले भी बातें कर चुके हैं कि यदि माताएँ मूर्ख रहें, तो उनके बच्चों से भी कोई बड़ी आशा नहीं रखी जा सकती। इस समय नारी-शिक्षा का यही लक्ष्य भारतीयों के सम्मुख रहना चाहिए।'

राधा ने बड़ी नम्रता से सिर झुका लिया और मीठे स्वर में बोली—'यह सब आपके आशीर्वाद और भगवान की कृपा से हुआ।'

आत्माराम बड़े प्यार से अपनी बेटी की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले — 'मेरी अच्छी बेटी, तुम तो सदा यही बात कहती हो। आज तो मैं भी यह कहने पर मजबूर हूँ कि तुम सचमुच ही देवी हो।'

'पिता जी, मुझे आप क्यों शर्मिन्दा करते हैं ?'

'नहीं बेटी, नहीं, तुम नहीं जानती कि आज तुमने जो बीज बोये हैं इनसे आने वाले समय में कैसे-कैसे फूल खिलेंगे। आज से सौ वर्ष बाद भी जब कि तुम इस संसार में भी न होगी, लोग तुम्हें याद करेंगे और तुम्हारे नाम की पूजा करेंगे।'

एक बार फिर मौन छा गया। वास्तव में बाप-बेटी इतने खुश थे कि बोलते-बोलते उनकी जुबान रुक जाती थी !·····एकाएक आत्माराम बोल उठे—'अरी बेटी, जल्दी से किसी को भेज कर उन लड़कों को तो बुलाओ। तुम्हें तो तार द्वारा यह सूचना मिल गई, परन्तु उन्हें तो कोई खबर नहीं होगी।'

'जी हाँ, मैं उन्हें भी बुलाती हूँ और सारे गाँव में बाँटने के लिए लड्डू भी भेजती हूँ।'

'लड्डू ?..... लड्डू कहाँ से लाओगी ?'

'पिता जी मुझे तो पूर्ण विश्वास था कि बच्चे सफलता प्राप्त करेंगे। इसीलिए तो मैंने पहले से लड्डू बना रखे हैं।'

आत्माराम इस बात पर हँस दिये, बोले – 'बेटी, भला मुझे क्या पता चलता.....मैं तो यहाँ कोने में पड़ा रहता हूँ। अब तो इतनी कमजोरी हो गई है कि थोड़ी देर बोलने से भी मैं थकान महसूस करने लगता हूँ – अच्छा छोड़ो इन बातों को, जाओ किसी को लड्डू बाँटने के लिए भेज दो और उन चारों लड़कों को भी फौरन ही बुलवा लो।'

राधा उठकर कमरे के बाहर चली गई। उसने एक आदमी को दौड़ाया कि वह उन चारों को बुला लाए और तीन आदमियों को सारे गाँव में लड्डू बाँटने के लिए भेज दिया।

थोड़े ही समय में चारों युवक वहाँ पहुँच गए। उन्हें कुछ पता नहीं था कि दीदी ने उन्हें फौरन क्यों बुलाया है, चुनांचे जब वह पहुँचे, तो कुछ घबराए हुए से थे। जब राधा ने उन्हें वह खुशखबरी सुनाई तो उन्होंने फौरन ही हाथ जोड़ कर कहा—'हे भगवान ! तेरा लाख-लाख धन्यवाद .....हमने यही निश्चय कर रखा था कि चाहे कुछ भी हो जाये, हमारी दीदी की मनोकामना अवश्य पूरी होनी चाहिए।'

आत्माराम बिस्तर से उठ नहीं सकते थे, परन्तु उन्होंने दोनों हाथ उठा कर कहा—'बच्चो, इधर आओ ! तुम्हें मैं गले से लगा लूँ।'

उन्होंने बारी-बारी हर युवक को गले से लगाया और राधा की ओर देखते हुए बोले—'राधा ! आज मैं कितना खुश हूँ इसका तुम अन्दाज नहीं लगा सकती।.....अब यह बात भी निश्चित रूप में मेरे सामने आ गई है कि इन लड़कों का भविष्य उज्ज्वल है। यह लोग सफलता की दूसरी सीढ़ियाँ भी इसी तरह से चढ़ जायेंगे। इनके पास दिमाग है, लगन है और तुम्हारा प्यार है। इसीलिए आज तुम मेरी इस भविष्यवाणी को याद रखना कि यह विलायत से भी सफल होकर

आयेंगे—और हाँ, इनका विलायत जाने का प्रोग्राम खटाई में नहीं पड़ना चाहिए।'

राधा—'जी नहीं, भला वह प्रोग्राम खटाई में कैसे पड़ सकता है। उसका तो पूरा प्रबन्ध हो चुका है।'

यह खबर सारे गाँव में फैल गई और सबको यह भी मालूम था कि लड़के विलायत भेजे जायेंगे। अब यह गाँव पहले का सा नहीं रहा था। अब यह एक बड़े परिवार की तरह हो गया था। गाँव में एक की सफलता सबकी सफलता समझी जाती थी। सारे गाँव को उन चार लड़कों पर गर्व था। अब वह इस बात को समझने लगे थे कि जब यह लड़के विलायत पास करके आयेंगे, देश की सेवा में जुट जायेंगे, तो इससे उनके गाँव का कितना नाम होगा ?.....

उस रात खाना खाने के बाद मारे खुशी के राधा को बहुत देर तक नींद नहीं आई। शायद दो बजे के करीब उसकी आँख लगी तो थोड़ी ही देर बाद किसी ने जगा दिया। पता चला कि पिता जी की तबियत बहुत खराब हो रही थी। राधा एकदम बिस्तर पर से उठ कर पिता जी के पास पहुँची, तो देखा कि उनकी साँस बड़ी मुश्किल से आ रही थी। उसी समय ज्वालाप्रसाद भी पहुँच गये। उन्होंने जब आत्माराम की यह दशा देखी तो धीरे से राधा को इशारों में सिर हिलाकर समझा दिया कि अब उनके बचने की कोई आशा नहीं थी।

राधा ने भी सोचा कि वह घड़ी आ ही पहुँची जिसका इतने वर्षों से उसे डर-सा लगा था। उसने अपनी शकल से कोई बात जाहिर नहीं होने दी, लेकिन उसका हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था। वह अपने पिता जी के बिस्तर के पास बैठ गई और धीरे से बोली—'पिता जी, राम का नाम लीजिए।'

आत्माराम बहुत ज्यादा कमजोर थे। उनमें बोलने की शक्ति भी नहीं रही थी। उन्होंने एक नजर बेटी की तरफ देखा। दोनों की आँखें मिलीं। शायद वे कुछ कहना चाहते थे परन्तु कह नहीं पाये। उन्होंने

बेटी की आँखों में आँसू देखे, तो अपना सूखा हाथ उसके सिर पर रख दिया। तब उन्होंने आँखें बन्द कर लीं। उनकी साँस खड़खड़ाती हुई चल रही थी। इसी खड़खड़ाहट में उनके मुँह से 'राम··· राम' की बहुत धीमी आवाज निकलने लगी। धीरे-धीरे यह स्वर भी और धीमा पड़ने लगा, यहाँ तक कि साँस बन्द हो गई। राधा ने घबराहट में ज्वाला-प्रसाद की ओर देखा और काँपती हुई आवाज में बोली—'चाचा ! क्या हो गया इनको ?'

वह मन में समझती थी कि उन्हें क्या हो गया है, फिर भी उसके मुँह से अनायास ही यह शब्द निकल गए।

ज्वालाप्रसाद मुँह से कुछ नहीं बोले, वह आगे बढ़ आये और उन्होंने उसकी पीठ पर हाथ रख दिया।

अब राधा ने समझ लिया कि उसके सामने केवल मिट्टी धरी थी, आत्मा उड़ चुकी थी।

राधा ने एकदम चीख मारकर अपना सिर पिता जी की छाती पर रख दिया। रात-भर वह यूँ ही बैठी रही।

दूसरे दिन सारा गाँव एकत्र हो गया ! आत्माराम की अर्थी में आस-पास के देहात के लोग भी थे। जब उनकी चिता को आग लगाई गई तो राधा ने महसूस किया जैसे संसार से उसका अपना नाता भी टूट चुका हो।

बाईस...

शायद कुछ वर्ष पहले पिता की मृत्यु राधा को पागल ही बना देती, परन्तु अब उसकी वह दशा नहीं हुई। फिर भी इसका अर्थ यह नहीं था कि उसके जीवन में कोई परिवर्तन ही नहीं आया हो। देखने में वह थोड़ी-सी उदास दिखाई देती थी, परन्तु अपना सारा कार्य काफी मेहनत से करती रही। लेकिन उसके मन के संसार में न चाहते हुए भी एक बड़ा परिवर्तन आया। क्योंकि जब से उसने होश सम्भाला था तब से ही अपने पिता का प्रेम उसे प्राप्त था। उसके जीवन में उसके पिता का बड़ा महत्व था। इसीलिए अब सब कुछ समझते हुए भी उसके जीवन में पिता की मृत्यु से जो स्थान खाली हुआ था उसका भरना असंभव था। उसने अपना फालतू समय भगवान की पूजा में व्यतीत करना आरंभ कर दिया। जब भी समय मिलता वह भगवद्गीता पढ़ा करती थी।

चारों लड़के विलायत भेज दिये गये जहाँ वह अपने-अपने विषय पर ऊँची शिक्षा प्राप्त करने लगे। उन युवकों के पत्र भी आते रहे। वे लिखते थे कि विलायत का संसार उनके अपने देश से बिल्कुल भिन्न था। परन्तु फिर भी वह इस बात को न भूले थे कि वे यहाँ एक ऊँचे उद्देश्य को लेकर आये थे। जब कभी उनका पत्र आता तो उस पर सभी के हस्ताक्षर होते थे। एक पत्र में उन्होंने लिखा:—

पूज्य दीदी,

हम हर पत्र चारों की ओर से इसलिए लिखते हैं ताकि आप यह अच्छी तरह समझ लें कि हम अब भी सदा की तरह इकट्ठे रहते हैं। हम अलग-अलग विषयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, परन्तु हम एक ही स्थान में रहते हैं। यहाँ का संसार तथा वातावरण इतना अनोखा है कि हम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। यहाँ की बीसियों चीजें ऐसी हैं जो हमें अपनानी चाहिए। जब हम चारों ओर देखते हैं तो हमें कितनी खुशी होती है कि हमारी दीदी ने हमारे अन्दर कई ऐसे गुण भर

दिये थे जो हमारे लिए आवश्यक थे। हमें कई बार आश्चर्य होने लगता है कि हमारी दीदी तो कभी विलायत में आई नहीं हैं और न कभी वह यूरोप के देशों में ही घूमीं·····फिर उन्हें यहाँ की बड़ी अच्छी बातों का ज्ञान कैसे हुआ ? कैसे उन्होंने गाँव वालों को इतनी सफाई की शिक्षा दी ? आज हम यह महसूस करते हैं कि बिल्कुल देहाती होने पर भी आपकी शिक्षा के कारण हमारे गाँव का सिर किसी के आगे भी मारे शर्म के झुक नहीं सकता। यह सब कुछ आप ही के कारण है !

यहाँ हमें यह देखकर बड़ा दुःख होता है कि जो भारतीय युवक यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं, वे यहाँ की रंगीनियों में खो जाते हैं। उनके अन्दर हमने कोई भी ऐसी भावना नहीं देखी जिससे पता चले कि उनके मन में अपने देश का भी कुछ खयाल है। उन्हें अपने देश की गरीबी याद नहीं आती, वह अपने देश के भूखों के सम्बन्ध में कभी विचार नहीं करते। वह समय, धन नष्ट करते हैं, और ऐसी-ऐसी हरकतें करते हैं कि जिन्हें देखकर हर सच्चे भारतीय का सिर शर्म से झुक जाता है।

हो सकता है कि आप यह सब कुछ पढ़ कर घबरा जायें और सोचने लगें कि कहीं हम भी कोई उल्टा काम न कर बैठें। इसीलिए हम चारों आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम जिस काम के लिए भेजे गये हैं उसे पूरा करेंगे, और कोई भी ऐसी हरकत नहीं करेंगे कि जिससे आपके मन को दुःख पहुँचे। हो सकता था कि हम आपके भेजे हुए न होते तो हम भी यहाँ की रंगदार जिन्दगी में खो जाते, परन्तु हमारी आँखों के आगे सदा ही आपका चित्र घूमता रहता है और हम महसूस करते हैं कि आप सदा हमारे साथ हैं। इस विचार से हमें अपने अन्दर एक शक्ति-सी महसूस होती है। हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि आप सदा ही हमें आशीर्वाद भेजती रहें, ताकि हम अपनी मंजिल तक पहुँच सकें।

हम हैं आपके
गोपाल, सुन्दर
शुक्ला, नारायण

राधा ने पत्र पढ़ा, तो उसकी आँखों में पानी भर आया। वह उसी समय पत्र लिखने बैठ गई :

प्यारे बच्चो,

चिरंजीव रहो। तुम लोगों का पत्र मिला जिसे पढ़कर मेरी आँखों में पानी भर आया। मैं फौरन ही तुम लोगों को पत्र लिखने के लिए बैठ गई। इस समय भी मेरी आँखों में आँसू भरे हुए हैं और वे टप-टप करके पत्र के इस कागज पर गिर रहे हैं।

ठीक है कि मैंने विलायत कभी भी नहीं देखा था। इसके बारे में केवल पुस्तकों में पढ़ा था। परन्तु आज मैं तुम लोगों के पत्रों के द्वारा सब कुछ देख रही हूँ। मुझे यह जानकर अति दुःख हुआ कि विलायत में गये हुए भारतीय युवक अपने देश के उद्देश्य को भुला कर वहाँ की रंगीनियों में खो जाते हैं। परन्तु इसके साथ ही मैं गर्व से फूली नहीं समाती कि मेरे चारों बच्चे विलायत में अपना कार्य पूरा कर रहे हैं। मैं भली-भाँति जानती हूँ कि तुम्हारे जैसी आयु में बहक जाना या अपने रास्ते से भटक जाना बहुत आसान होता है। लेकिन जिस दृढ़ता से तुम लोग अपने उद्देश्य पर डटे हुए हो उस पर न केवल मुझी को गर्व है, बल्कि भारत की आने वाली पीढ़ियों को भी गर्व रहेगा।

बेशक मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम लोग अवश्य ही अपनी मंजिल तक पहुँचोगे। याद रखो कि मेरी भी वही मंजिल है जो तुम लोगों की है। जब तुम लोग विलायत से लौट आओगे तो मैं अपना सारा कार्य तुम्हीं को सौंप दूँगी। अब मेरी आयु पचास साल के ऊपर हो चुकी है। मैं सोचती हूँ कि यह काम युवकों को सौंप कर खुद भगवान की पूजा करती रहूँ।

शुभ कामनाओं सहित

तुम्हारी दीदी

राधा।

तेईस...

समय बीतते बहुत देर तो लगती नहीं, आखिर वह दिन भी आ पहुँचा जब राधा को तार मिला कि वे चारों युवक समुद्री जहाज से बम्बई में उतरेंगे। पहले तो राधा का मन हुआ कि बम्बई ही चली जाय, परन्तु चूँकि कुछ और लोग भी उन चारों का स्वागत करने के लिए उत्सुक हो रहे थे। इसलिए राधा ने अधिक खर्चा हो जाने के कारण से अपने मन की बात किसी पर जाहिर नहीं होने दी। उसने सोचा कि वह बम्बई से दिल्ली तो आयेंगे ही, इसलिए वह अपने साथ कुछ लोगों को लेकर दिल्ली में ही उनका स्वागत करेगी और फिर वहाँ से उन्हें गाँव में ले आएगी।

उसी तार द्वारा बम्बई से सूचना मिली कि वे चारों किस रोज दिल्ली पहुँच रहे हैं। राधा आठ और आदमियों को अपने साथ लेकर दिल्ली पहुँच गई। प्लेटफार्म पर खड़ी जब वह उनकी प्रतीक्षा कर रही थी, तो मन ही मन में सोच रही थी कि न जाने अब उनकी शकल कितनी बदल गई होगी। वही बात हुई। जब वे गाड़ी से उतरे तो सचमुच ही उनकी शकलें काफी बदल गई थीं। यह तो उम्र ही ऐसी होती है और फिर विलायत के रहन-सहन का भी उन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। देखने में वह बड़े खूबसूरत युवक नजर आते थे। चाहे उनकी शकलें बदल गई थीं, लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनके मन बिल्कुल नहीं बदले थे, क्योंकि उन्होंने आते ही हिन्दुस्तानी तरीके से बारी-बारी राधा के चरण छुए। राधा ने उन बच्चों को अपने गले से लगा लिया, उनका माथा चूमा और आशीर्वाद दिया— उन्हें देखकर वह मन ही मन में सोचने लगी कि क्या कोई कल्पना भी

कर सकता है कि इन युवकों का जन्म आज से कई वर्ष पहले एक मामूली और गन्दे-से गाँव में हुआ था। आज वह विलायत घूम कर आ रहे थे! वहाँ से उन्होंने उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त किया था। परन्तु अब भी वह सच्चे दिल से हिन्दुस्तानी थे। जो देहाती राधा के साथ उन चारों का स्वागत करने गए थे, वे भी उनको देखकर चकित रह गए।

अब वे लोग गाँव लौटे, तो वहाँ बहुत बड़े जलसे की तैयारियाँ हो चुकी थीं। हर ओर झंडियाँ और केले के पत्तों के दरवाजे दिखाई देते थे। उस रोज देश के कुछ बड़े नेता भी बुलाए गए थे। पंडाल तो बहुत ही भरा हुआ था क्योंकि दूर-दूर के देहाती उन विलायत पास युवकों को देखने के लिए उमड़ पड़े थे।

उस शाम बहुत से लोगों ने भाषण दिये और सबने राधा को मुबारकबाद दी। एक नेता ने तो राधा की इतनी प्रशंसा की कि सारा पंडाल तालियों से गूँज उठा। उन्होंने कहा कि राधा ने जिन बातों का वादा किया था उनको पूरा कर दिखाया। आज यह बात सिद्ध हो गई कि सचमुच ही समझदार माताएँ अपने बच्चों के जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन ला सकती हैं। अभी तो शुरूआत है, परन्तु यह बात बड़े विश्वास से कही जा सकती है कि वह समय दूर नहीं कि जब राधा की जलाई हुई इस ज्योति से कई और दीप जलेंगे, और सारे भारत में उनका प्रकाश फैल जायेगा।

राधा ने सबका धन्यवाद करते हुए कहा—'भाइयो और बहनो तथा बच्चो! आज के दिन जिस खुशी और शान्ति का अनुभव मैं कर रही हूँ उसका आप अन्दाजा भी नहीं लगा सकते। इस संसार में बहुत से लोग अपना कोई उद्देश्य बनाते हैं, परन्तु ऐसे कितने होते हैं जो अपनी मंजिल पर भी पहुँचने में सफल हो जाते हैं। इन बच्चों की सफलता मेरी सफलता है—मुझे आपको यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि भारतीय सरकार इन युवकों को ऊँची पदवी देने के लिए तैयार

है। मैं समझती हूँ कि इस पर हम सब जितना भी गर्व करें उतना ही कम होगा। खुशी केवल इस की नहीं कि यह युवक ऊँची पदवियाँ पा गए बल्कि खुशी इसकी भी है वह दूसरों के सामने भारत के आदर्श युवक बन कर देश की सेवा करेंगे। मैं अपनी कई दोहराई हुई बातों को फिर से नहीं कहूँगी··· सिवा इसके कि जो छोटा-सा दीप यहाँ जलाया है उसका प्रकाश सारे देश में फैल जाय। यहाँ के युवक गाँधी और नेहरू के इस देश को आदर्श देश बना दें।

मुझे विश्वास है कि मेरे साथ मिल कर आप लोगों ने जो इतना परिश्रम किया है वह बेकार नहीं जाएगा। यदि मेरा चलाया हुआ यह कार्य दूसरों के मन को भी अच्छा लगे और वे भी इसी मार्ग पर चलकर हमसे भी बढ़-चढ़ कर सफलता प्राप्त करें, उन्नत हों तो मैं समझूँगी कि मेरा इस संसार में जीना सफल हुआ—एक बार फिर मैं आपका धन्यवाद करती हूँ कि आपने यहाँ एकत्रित होकर इस सम्मेलन को सफल बनाया।'

इतना कह कर राधा तो बैठ गई, लेकिन पंडाल में बहुत देर तक तालियाँ बजती रहीं। जब जलसा समाप्त हो जाने पर कुछ खास नेता बिदा हो गए, तो राधा अपने कमरे में चली आई। काफी काम करने के बाद वह थकान-सी महसूस कर रही थी। उसने कुर्सी पर बैठे-बैठे खिड़की में से बाहर को नजर दौड़ाई, तो उसे पंडाल में लोग अपने-अपने घरों को वापस जाते दिखाई देते रहे। यहाँ तक कि पंडाल खाली हो गया— एकाएक ही उसे यूँ लगा जैसे अभी वहाँ कोई बैठा हो····· केवल एक आदमी !

पहले उसने सोचा कि शायद उसकी आँखों को धोखा हो रहा है, परन्तु जब वह आदमी उठ कर खड़ा हुआ तो फिर इसमें सन्देह की कोई बात नहीं रही।

अजीब बात यह थी कि वह पुरुष दूसरों की तरह नहीं था। वह बिल्कुल ही भिन्न था। उसका खड़े होने का अन्दाज, उसके वस्त्र और

उसका आकार सब कुछ अलग था। उसे आश्चर्य हुआ कि आखिर यह कौन हो सकता था।

फिर उसने सोचा कि कोई भी हो उसे उससे क्या लेना, यूँ ही जलसे में चला आया होगा; जैसे आया था वैसे ही चला जा जायगा। यह सोच कर उसने मारे थकान के अपनी आँखें बन्द कर लीं। कुछ देर बाद आँखें खोलीं तो देखा कि वह पुरुष अब भी जहाँ का तहाँ खड़ा था। उसने सुरमई रंग का सूट पहन रखा था, गले में टाई थी और हाथ में अँग्रेजी टोप।

अब तो राधा से न रहा गया। पहले उसने सोचा किसी आदमी को भेज कर पता कराऊँ कि वह वहाँ क्यों खड़ा था, परन्तु फिर उसने सोचा कि वह पुरुष ऐसे ठाट-बाट से खड़ा था कि इस तरह उसके बारे में पता लगाना अच्छा नहीं लगेगा। क्यों न वह स्वयं जाकर देखे कि वह कौन है। राधा के मन की गहराइयों में यह बात भी आई कि हो सकता था कि वह पुरुष उनकी संस्था को कुछ दान करना चाहता हो, इसलिए बेहतर यही होगा कि वह खुद जाकर उससे मिले।

पंडाल खुली जगह में था और उनकी इमारत से जरा दूर भी। राधा साड़ी सम्भालती हुई उस पुरुष के निकट पहुँची। पुरुष उसकी ओर पीठ फेरे खड़ा था। राधा ने जाते ही पूछा—'कहिए, आपको किसी से मिलना है क्या ?'

'जी !' इतना कह कर उस पुरुष ने घूम कर राधा की ओर देखा। राधा ने भी उसको गौर से देखा, तो वह बुरी तरह चौंक उठी। उसकी इतनी लम्बी वीरान, उदास जिन्दगी पर से मानो बहार की बयार गुजर गई। उसके चेहरे पर पल भर को लज्जा की लालिमा-सी नाच उठी, फिर भी उसने अपने को सम्भाल लिया।

उस पुरुष ने हल्के से मुस्करा कर पूछा—'मुझे पहचान लिया ?'

राधा लड़खड़ाती हुई जुबान में बोली—'प्राण !'

'हाँ, मैं प्राण ही हूँ।'

थोड़ी देर तक तो वह कुछ और बोल ही नहीं सकी। फिर एका-एक बोली—'आइए, अन्दर चले चलिए। आप यहाँ क्यों खड़े हैं?'

वे कब कमरे में जाकर कुर्सियों पर बैठ गए, कब राधा ने नौकर से चाय लाने को कहा?·····राधा को कुछ याद ही नहीं रहा। वह तो अतीत के सपनों में खो चुकी थी। चाय पीते समय कुछ इधर-उधर की टूटी-फूटी बातें होती रहीं। राधा का सिर चकरा रहा था। ·····बातों-बातों में उसे केवल इतना याद रह गया कि उससे विदा होने के बाद प्राण यूरोप चला गया था और कुछ ही दिन पहले लौट कर आया था।

राधा ने देखा कि प्राण कि कनपटियों पर सफेद रंग के बाल दिखाई देने लगे थे। उसकी आयु पचपन के लगभग हो चुकी थी, फिर भी उसका स्वास्थ्य काफी अच्छा था। मालूम होता था कि वह काफी रुपया भी कमा रहा था। यहाँ पहुँच कर उसने राधा की तलाश की तो उसे सारी बातों का पता चला। इसीलिए वह आज उसे देखने चला आया। कुछ देर इधर-उधर की बातें होती रहीं, आखिर प्राण चलने के लिए उठा तो राधा ने कहा—'यदि आप चाहें तो रात यहीं व्यतीत कर सकते हैं क्योंकि इस समय आप शहर कैसे जा सकेंगे?'

प्राण ने धीरे से उत्तर दिया—'मैं अपनी कार लाया हूँ इसलिए मुझे जाने में कोई दिक्कत नहीं होगी।'

यह कह कर प्राण आगे-आगे चला और राधा उसके पीछे-पीछे। उसके मन में एक ज्वार-भाटा-सा आ गया था। चलते-चलते उसके मन के एक सुनसान कोने में पड़े जख्म में हल्की-सी टीस उठी, बहुत से प्रश्न उठे·····अब तो प्राण कभी का शादी कर चुका होगा? उसके कई बच्चे होंगे? हो सकता है कि वह एक-दो बच्चों की शादी भी कर चुका हो?·····इतने लम्बे समय के बाद प्राण का फिर से उसके पास आना कितनी आश्चर्यजनक घटना थी!

वह इन्हीं विचारों में डूबी हुई थी कि उसने देखा कि प्राण कच्चे रास्ते पर खड़ी हुई एक खूबसूरत लम्बी कार के निकट पहुँच कर रुक

गया और कार के साथ पीठ टेक कर राधा की ओर देखने लगा। कुछ पलों तक दोनों पर मौन छाया रहा !····आकाश में तारे झिलमिला रहे थे···· फिर प्राण की धीमी-सी आवाज सुनाई दी—'राधा ! यदि तुम बुरा न मानो तो एक बात कहूँ !'

प्राण की इस बात को सुनकर राधा अपनी और प्राण की आयु भूल बैठी। अतीत के सुनहले सपनों की मधुर स्मृति में वह डूब गई। अनुराग की वह आग जो अब तक दबी थी, सुलग उठी। उसकी गर्मी राधा के चेहरे पर सुर्खी बन कर छा गई। उसने धरती की ओर देखते हुए अपने स्वर में चिर-संचित प्यार भरते हुए बोली—'कहिए····'

यद्यपि प्राण जानता था कि राधा किसी से कभी भी व्याह नहीं करेगी। राधा के विषय में जानकारी प्राप्त करते समय ही वह यह भी जान चुका था कि राधा ने अपने उच्च आदर्श को अपने त्याग से साकार रूप दे दिया था। वह अब उसे एक सामान्य नारी के रूप में देखने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। किन्तु सामने खड़ी राधा का वह अति सरल नारी रूप देखकर वह स्तब्ध रह गया। राधा के मन में दबी अनुराग की आग और उसकी जलन व टीस का अनुभव कर प्राण का दिल भर आया। उसने बड़ी व्यथा और प्यार-भरे स्वर में कहा—'राधा ! मैंने भी शादी नहीं की।'

इतना सुनते ही राधा को महसूस हुआ कि उसके कानों से इन जलते हुए शब्दों ने घुसकर उसके तन-मन में आग लगा दी। उसके शरीर में आग की एक लहर-सी दौड़ गई। उसे ऐसा आभास हुआ कि वह प्राण के सामने और अधिक खड़ी न रह सकेगी। उसकी वह नजर, वह टीस-भरी आवाज ! उफ्, राधा को जैसे बेहोशी-सी आने लगी। वह कार के सहारे टिक गई। थोड़ी देर बाद वह सँभली तो उसने देखा कि प्राण के होठों पर बड़ी उदास और फीकी-सी मुस्कान थी। वह बड़े धीमे-धीमे कह रहा था —'सच राधा, मैंने शादी नहीं की है और आज इस स्थिति में मेरे लिए शादी का प्रश्न ही नहीं उठता।'

एक गहरी साँस छोड़ते हुए प्राण ने एक चेक राधा की ओर बढ़ाते हुए कहा—'राधा, अब मेरी इस आखिरी इच्छा को भी कुचल न देना! यह पचास हजार मैं तुम्हारी संस्था को देना चाहता हूँ। इसे स्वीकार करो।'

मूर्ति-सी जड़ राधा ने जो एकटक प्राण की आँखों में देख रही थी, हाथ बढ़ाकर चेक ले लिया।

प्राण चुपचाप अपनी कार में जा बैठा। जब कार स्टार्ट हुई तो राधा के शरीर में भी जीवन-संचार-सा हुआ। वह दोनों हाथ जोड़कर प्राण की ओर देखने लगी। कार अपने पीछे धूल का अम्बार छोड़ती प्राण को ले उड़ी। राधा एकटक प्राण को देखती ही रह गई जो कभी उसके रोम-रोम में समा चुका था!